विमुक्त और घुमंतु जनजातीयोंके दीपस्तंभ

श्री. हरिभाऊ राठोड

लेखक : एकनाथ पवार

"वेदना" के लेखक

विमुक्त-घुमंतूओंका दीपस्तंभ
लेखक : "वेदनाकार" एकनाथ पवार
Vimukt Bhatkyancha Deepsthambha Haribhau Rathod
"Vednakar" Eknath Pawar

सर्वाधिकार :
विश्वनाथ आर. नाईक
बंजारा पॅलेस, सेवादास नगर, ता. मानोरा, जि. वाशीम (महाराष्ट्र)
७७६९०२७१६७

प्रकाशन :
कलाम अहमद खान
आर. के. प्रकाशन, नागपूर (महाराष्ट्र)
द्वारा : आजाद कालोनी, मोठा ताजबाग, उमरेड रोड, नागपूर

मुख्यपृष्ठ संकल्पना :
पूनम एकनाथ नाईक (पवार)

मुद्रक:
राज प्रिंटर्स अॅन्ड ऑफसेट वर्क, उमरेड (नागपूर)

प्रथमावृत्ती २३ नोव्हेंबर २०१२
द्वितीय आवृत्ती ४ फेब्रुवारी २०१३
सहयोग राशी : २००/- रु.

चेतावनी :

इस किताबका लेखक किसी भी राजनैतिक पक्ष का सदस्य नहीं है। उनका किसी भी राजकीय नेतासे निजीसंबंध नही है। इस किताबमें उल्लेखित राजनैतिक घटनाए केवल संदर्भके लिए है। यह किताब लिखनेमें कौनसा भी राजनैतिक हेतु नही है। पाठक कृपया ये जान ले।

अर्पण

"अर्पण कर रह हूँ यह किताब

मेरे परमपूज्य माताजी और पिताजी को

जिन्होंने मुझे जीवनके मूल्य सिखाऐ

तपती धूपमें, घने अंधेरों में भी मूल्योंके लिए

लडने का बल दिया, मेरी रक्षा की"

"अर्पण कर रह हूँ यह किताब

वसंतरावजी नाईक को जो हरितक्रांती के थे जनक

प्रजाकी सेवा में ईश्वर येशू, अल्ला, गुरु और

सेवालाल का दर्शन थे करते

जिन्होंने महाराष्ट्र के विकास और सत्ता विकेंद्रीकरण की

नींव डाली, जो इतने सहृदय थे की किसान को कांटा चुभे

तो इनकी आँख में थे आँसू आते।"

"अर्पण कर रह हूँ यह किताब

मेरे भारतभर के विमुक्त-घुमंतू बंधुओंको

जो पहाडों में घूमते हैं, जो झरनोंके सुरीली आवाज में

शीतल पवन की लहरोंके मधुर तालोंमें

वेदनाओंके अश्रुओंके सुरों के जीवन गीत गाते हैं,

जिन्होंने मुझे प्यार दिया, सराहा और

मेरे काम की तारीफ की"

फोटो

हरिभाऊ राठोडजीको पुरस्कार प्रदान करते हुए राष्ट्रपती महामहीम प्रणव मुखर्जी

फोटो

महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहीम के. शंकर नारायणजी, इनके करकमलोंद्वारा

"वसंतराव नाईक समाजभूषण" पुरस्कार स्वीकार करते समय हरिभाऊ राठोडजी

लेखक का मनोगत

जो व्यक्ती, समाज या देश, अपना इतिहास जागृत नही करता या नये इतिहास का निर्माण नहीं करता, वह व्यक्ती या समाज या देश किसी कामका नही हैं। उसके अस्तित्वका कोई भी अर्थ नही हैं। मेरे पूरे विमुक्त-घुमंतु जनजातीका इतिहास बहुत समृद्ध और गौरवपूर्ण है। यह जनजाती शूर, स्वतंत्रताप्रिय और शूरवीर योद्धा हैं। इन्होंने अंग्रेजोंके खिलाफ लोहा लिया था। यह अब इतिहास बन गया है। अंग्रेजोंकी कूटनीतीने इन्हें गुनाहगार ठहराया हैं और उन्हें समाजके मुख्य प्रवाहसे बाहर कर दिया है। क्यूँ और कैसे? इसपर युवा पिढीको चिंतन करना चाहिये, यह समय की पुकार है।

समय गतिमान है, गतिशील लोगोंका है। हमें परिवर्तनके लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए ताकी हम पिछडे न रहें। समाजमें परिवर्तन की और मानवी मूल्योंकी ज्योती सदा जलती रहे इसलिए आपके आशिर्वाद से मैं समाजके सब दुर्बल, पिछडे हुए वर्ग, विमुक्त घुमंतू, न्यायसे वंचित लोगोंके लिए सदा लिख रहा हूँ और भविष्यमें भी लिखता रहूँगा। हर एक व्यक्तीको चाहिए की वह आधुनिक विमुक्त-घुमंतू आंदोलनके प्रवर्तक वसंतराव नाईकजी की दूरदृष्टीको सामने रखे और यह आंदोलन और गतिमान करनेका प्रयत्न करें। सामाजिक जन आंदोलन का परिवर्तन सामाजिक अभिज्ञारुपी तूफान में परिवर्तीत हो। सब अन्याय, शोषण, सदाके लिए नष्ट हो। इस प्रबल और प्रदीर्घ आंदोलन के सच्चे दीपस्तंभ इसके कार्यकर्ता होते है। इस अभिज्ञा से तैयार हुआ कार्यकर्ता जो लोग न्यायसे वंचित रहे हैं, उन सब लोगों के लिए बडा आंदोलन खडा करता है। हरिभाऊ राठोडजी ऐसा एक कर्तृत्ववान व्यक्तीत्व है।

उन्होंने व्यंकटाचलम आयोग के समयसे, रेणके आयोग और डॉ. नरेंद्र जाधव समिती तक के कार्यकाल में अथक परिश्रम किये है, कष्ट झेले हैं। वे समाजके प्रति कर्तव्यबद्ध हैं, यह मेरी निष्पक्ष राय हैं। मा. गोपिनाथ मुंडेजी ने हरिभाऊजी की तरफ १९९७ में ध्यान दिया था। हमारा

समाज औरोंकी तुलनामें पीछे न पडे इसके लिए मै प्रयत्नशील हूँ। इस किताबके प्रारुपसे मैंने इसका प्रयास किया है। हरिभाऊ राठोडजी का राष्ट्रीय स्तरपर सामाजिक योगदान सराहनीय है।

अन्य लोगोंकी निंदा करना या व्यर्थ टिप्पणी करके समय व्यर्थ गँवाने के बजाय अपना समाज सर्व तरहसे विकसित कैसे होगा, स्वतंत्र आंदोलन गतिमान कैसे होगा इसलिए समाजबांधवोंको प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा हुआ, तो पूरा समाज एक प्रगतीशील समाज के नाम से जाना जाएगा। हर एक आदमी तो यही चाहता है, किन्तु दुर्भाग्यवश कुछ दुर्जन लोग नही चाहते हैं कि ऐसा हो। इसलिए वे कार्यकर्ताओंकी टांग खीचतें हैं, घरोंके सदस्योंमें फूट डालते है, कलह या झगडा बढाने के लिए प्रयास करते हैं, आपस में झगडे पैदा करते हैं। जब तक समाजके ध्यानमे ये बाते नहीं आती, तब तक यह बडा समाज पिछडा ही रहेगा।

हमें चाहिए की हम अपना अस्तित्व और आजका प्रतियोगितात्मक दौर ध्यानमें रखे, और नयी पीढी को स्वावलंबन, स्वाभिमान और सामाजिक ध्यान की सीख दें। महाराष्ट्र को मारोतराव कन्नमवार, वसंतराव नाईक, सुधाकरराव नाईक जैसे लोकप्रिय, प्रजादक्ष मुख्यमंत्री मिले हैं। अन्य राज्योंमें भी बंजारा मंत्री बने थे और बन रहे हैं। किन्तु इस समाजको जनसंख्याकी मात्रा की तुलनामें बहुत कम प्रतिनिधित्व मिल रहा है। महानायक वसंतरावजीकी तरह हमें भी इच्छाशक्ती और संगठन शक्तीका निर्माण करना चाहिए। सिर्फ ग्रामपंचायतमें खडे होके झगडा करना अनुचित है। काफिले के झगडे काफिलेमें ही खतम होने चाहिए। हमे मुकदमेबाजी और बूरी लतों के अधीन होके धन बरबाद नहीं करना चाहिए।

हरिभाऊ राठोड सब जनताके, समाजके हुए, इसलिए संसदमें चुने गए। समाजके प्रश्नके लिए उन्होंने बहुत प्रयास किये और उन्होंने अपने ध्येय को आज भी भारतमें प्रसारित कर रहे हैं। आप कमसे कम पंचायत समिती, जनपद, जनसभामें अपना कार्य दिखाए। सरकार की बहुत योजनाएँ हैं। लेकिन वे काफिला, पाल, राहोटी तक पहुँचती नहीं। बहुतही काफिले, बस्तियाँ

महसूलके दर्जेसे वंचित रहे हैं। जबतक हम अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाते, एकसाथ मिलजुल कर नहीं रहते, जन प्रतिनिधियोंतक पहुँचते नही, तबतक हमें उपेक्षित रहना पडेगा।

संत सेवालाल कहते थे, "गोरुर राज आय" (गोरुर लोग राज करेंगे)। यह कहना सत्य हो इसलिए युवकोंको आगे आना चाहिए। यह किताब लिखने में मेरा कोई निजी स्वार्थ नही हैं। मैं किसी राजनैतिक हेतूसे प्रेरित नही हूँ। मेरा किसी भी राजनैतिक दलसे कोई वास्ता नही है।

बचपनसेही मै राजनैतिक माहोलमें रहा हूँ। मेरे दादाजी रामजी नाईक (पवार), पिताजी विश्वनाथ नाईक और चाचाजी नारायणराव नाईक से मैंने राजनीती की सीख ली। इसलिए मेरे वंश में यह चाहत रहना अनुचित नही है, की राजनीतीमें हिस्सा ले, जनताके लिए परिवर्तनवादी युवा नेतृत्व प्रदान करे, किन्तु मेरे मनमें ऐसा ख्याल नही आया कि, मै राजनीतीमें प्रवेश करुं। इसका कारण यह है की आजकी राजनीती बहुतही खराब हुई है। आजकल विकासकी, उन्नतीकी, सुधारकी राजनीती नही हो रही है बल्की धन कमानेकी, पूँजीपतीकेयोंके हितकी सुरक्षा करने की, जातीय और धार्मिक विद्वेष फैलाने की, एक दूसरे की टांग खीचनेकी, बहुतही हीन स्तर की राजनीती शुरु हुई है। अच्छा है की ऐसी राजनीतीसे मीलों दूर रहें। समाजसे प्रतिबद्धतासे भी समाजमें परिवर्तन लाया जा सकता है। समाजके हक प्राप्त करनेके लिए संवैधानिक आंदोलन किया जा सकता है। जरुरी नहीं, की इसके लिए हर कोई राजनीतीमें प्रवेश करें।

आप अपने बच्चोंको शिक्षासे वंचित न रखें। अगर उसके लिए आपको भूखा रहने की नौबत आये तो भी आप भूखा रहें किन्तु आप अपने बच्चोंको शिक्षा दें। उन्हें ऐसे अच्छे किताब दें जिन्हे पढकर उन्हें प्रेरणा मिले। मुझे आजभी याद है, मेरे पिताजीने घरमें जो दाल थी, वो सब बेच दी और मेरे लिए शिव खेरा लिखित "यू कॅन विन" (आप जीत सकते हो) किताब खरीदी। सिर्फ फालतू अर्थहीन कथा, ढोंगी बाबा, निरर्थक पूजापाठ, गंडे, दोरे इसमें उलझ न जाए। इन अंधविश्वासकी वजह से समाजकी स्थिती बुरी हो गयी है। आजका युग विज्ञान युग है। इसमे प्रेत पिशाच्च, आत्मा, जादूटोणा ऐसे बकवास बातोंकी कोई जगह नही है। समय बदल रहा है।

समाजको कुछ अनिष्ट प्रथाए, पुरानी सोच छोडनी चाहिए। पोथी, पुराण, व्यसन, बुरी आदतें इनसे छुटकारा पाईए, विज्ञान-तंत्रज्ञानको अपनाईए।

रायचूर (कर्नाटक) में "अशियाड" नामका छोटा काफिला है। अबतक उसमेंसे ३५० से ज्यादा लोग अफसर बन गये हैं। आज वह "अफसरोंका काफिला" इस नामसे जाना जाता है। राहुल गांधीजी खुद इस काफिलेको मिलने आये थे। वह काफिलेका परिवर्तन देख के भौंचक्के रह गये। इस नमूने काफिलेंका आदर्श अन्य राज्योंके काफिलोंको लेना चाहिए।

आपके साथ बाते करते हुए मेरे मनमें बहुत भावनाएँ उमड रही है, किन्तु सब भावनाएँ व्यक्त करना जरुरी है। भविष्यमें आनेवाली किताबोंसे आपकी ये उम्मीदे पूरी होंगी। इसमें कोई सवाल नही है। समाज सेवा के साथ मैं साहित्य सेवामें भी नामचीन हो गया हूँ, इसमें आपका बडा योगदान है। मेरी रचनाएँ समय समय पर प्रकाशित होनेवाली हर एक लेख, कविता को आपने अच्छा प्रतिसाद दिया है। उससे मुझे बडा सामर्थ्य मिला है।

आप सब सुजाण है। हम सब सामाजिक न्याय के लिए आंदोलन छेडेंगे। मैं आप सबका दिलसे शुक्रगुजार हूँ।

भूतपूर्व मंत्री मखराम पवारने बहुजन समाजके लिए, खासकर बंजारा समाजके लिए जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है उसके लिए हम उनको शतशः धन्यवाद दे रहे हैं। विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए निम्नलिखित लोगोंने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। केंद्रीय मंत्री नामदार मा. बलराम नाईक, मा. बालकृष्ण रेणके, चंद्राम गुरुजी, महोदव जानकर, ना. रेणू नाकय (कर्नाटक), खा. रमेश राठोड, आ. रामन्ना लमाणी, मनोहर ऐनापुरे, आ. साधुसिंग धरमसोत (पंजाब), आ. प्रभूसिंग नायक (आंध्र), ना. मनोहर नाईक, अमरसिंग तिलावत, के.जी. बंजारा (गुजरात), ओमप्रकाश कमल (यूएसए), प्रा. मधुकर पवार, प्रा. चंद्रकांत पवार, माजी महापौर शेवंताबाई पवार, लक्ष्मण गायकवाड, रमेश आर्या, चंदनसिंह रोटले, ॲड पल्लवी रेणके, प्रा. मोतीराज राठोड, गोविंद चव्हाण (नांदेड), मच्छिंद्र भोसले, एन.आर. शेरे, महापौर अल्काताई राठोड, हरिशचंद्र

पवार, शंकर आडे, विलास राठोड, प्रकाश लोणारे, अशोक पवार, नामा जाधव, नितीन सरदार, रामजी आडे, वामनराव शिंगम, दिनकर गुल्हाने, आरती कुलकर्णी, गणेश खवसे, सूरज पाटील, विजया मारोतकर, सतीश मखराम पवार, नरेंद्र नाईक, डॉ. श्यामला देवी, पंकज राठोड, वसंत पवार, गोपाल राठोड, संदेश चव्हाण, मोहन राठोड, वैशाली सोनुने, डॉ. संयोगिता नाईक, रतन आडे, वंदना पाल, कैलास चव्हाण, दीनानाथ वाघमारे, सुधीर कांडरकर। मैं इन सबका शुक्रगुजार हूँ। मुझे जिन सामाजिक, सार्वजनिक सेवाभाविक, कार्यकर्ताओं ने मदद की है उनका भी मैं शुक्रगुजार हूँ।

आपका

दि.२३.११.२०१२
स्थळ : दिल्ली

एकनाथ विश्वनाथ पवार
"वेदना" के लेखक

मोबाईल : ९८५०१३१३६८
Email : pawareknath25@gmail.com

किताब लिखने की पार्श्वभूमी - लेखक के दिलसे : -

श्री हरिभाऊ राठोडजीने विमुक्त-घुमंतू समाजके उत्थानके लिए क्रांती दल की स्थापना की। क्रांतीदल का कार्य बडी तेजीसे चल रहा था। मेरी उम्र उस समय १५-१६ साल थी। हरिभाऊ का कार्य मुंबई से चल रहा था इसलिए यह कार्य हम जंगल निवासी घुमंतू लोगोंतक पहुँचनेमें समय लगा।

हरिभाऊ राठोड कौन है इसका मुझे पता नहीं था। मैं उन्हें नही जानता था, किन्तु यह गुरु-शिष्य का नाता कैसे निर्माण हुआ, यह अचरज की बात है। विमुक्त-घुमंतू लोगोंका यह दीपस्तंभ, जिसने सिर्फ महाराष्ट्र ही नही, पूरे भारत देशमें आंदोलन छेडा है, उसने मेरे शालेय जीवनमें अपने कार्य की झलक दिखायी, इसलिए इस किताब की पार्श्वभूमी आजभी मनको नई उर्जा प्रदान करता है।

मनुष्य की ज्ञान पाने की इच्छा कुछ उम्रके बाद बढने लगती है। इसीके साथ सोचने की प्रक्रिया शुरु होती है।

मैं जब बच्चा था उस समय एक बार अरुणावती नदी में बाढ आयी थी। मैं उसमें बह रहा था। मेरे पिताजी विश्वनाथजी ने खुदके प्राण संकटमें डालके मुझे बचाया। उन्होंने मुझपर बहुत अच्छे संस्कार किये, जिससे मुझे बडी प्रेरणा मिली। उससे मुझे अभ्यास-चिंतन की आदत लगी।

मेरी पाठशाला में हररोज नित्यक्रम किया जाता था। उसमें राष्ट्रगीतसे लेकर मौनतक १०-११ चरण होते थे। उसमें एक था "मुख्य समाचार"। मैं उसकी तरफ बारीकीसे ध्यान देता था। इसमें हमारे समाजके बारेमें या एकाध समाज बांधवके बारेमें कोई खबर सुननेको मिले इसलिए मैं बहुत आतुर रहता था। एक दिन नित्यक्रम समाप्त होने के बाद गुरुजी बोले "अगले सोमवार से एकनाथ पवार का गुट नित्यक्रम सादर करेगा, सब लोग तैयारी करके आओ"। मेरे गुट में काफिलेसे गणेश राठोड, पिंट्या सडे, और रमेश (नाई) था। हमने हमारा नित्यक्रम "जरा हटके"

करने के लिए प्रयास सुरु किये। हम लोग कैसे भी मुश्किलसे जीते थे तो पढने के लिए समाचार पत्र कहाँसे मिलेगा? इसलिए मुझे कहीं भी रास्ते में कागज का टुकडा मिला तो मैं उठाता था। मुझे वृत्तपत्र के अंश प्राप्त करके उसका संग्रह करने का शौक था।

रविवार के दिन साप्ताहिक मंडी का आयोजन होता था। मैं मंडी में गया। सब्जी बेचने वाले लोक चिल्लाकर सब्जी बेच रहे थे "चलो ऽ चलो, जल्दी करो, खरीदोगे या मुफ्त में दे दूँ"? कुछ ग्राहक आपसमें बातचीत कर रहे थे। मैं कागजके टुकडे इकट्ठा कर रहा था। रास्तेके बाजू में मिठाई बेचनेवाले ने कागजका ढेर जमा रखा था। मैं उसमें कागज चुनने लगा। मुझे समाचार पत्रका एक टुकडा मिला। उसपर लिखा था "बंजारा क्रांती"। मैं खुषीसे चिल्लाया "मिल गया, मिल गया"। मेरे पास बहुत लोग इकट्ठा हुए। उनमेंसे कुछ लोगोंको लगा, मुझे कुछ पैसे मिले हैं। कुछ लोगोंने मुझे धमकी दे कर कहा "अरे, मेरी जेबसे पैसा गिरा है, चल, दे दे जल्दी"। मैं चोर जैसा खडा था। किन्तु मनमें बहुत खुष था। एक आदमीने मेरी कमीज पकडी और बोला "अबे, मेरे कितने रुपये तुझे मिले? बोल दो, नहीं तो पिटूँगा।" दूसरा आदमी बीचमें आया, मेरी कमीज छुडवायी और बोला "बेटा तुझे क्या मिला? " उस समय मैं चीख पडा "मुझे हीरा मिल गया है"। सब लोग भौंचक्के रह गये। कुछ लोग बोले "अरे, हीरा क्या कूडे में मिलता है" ?

मैंने जोरसे पुछा "कूडे से मिला हुआ हिरा किसे चाहिये ?" कुछ लोग बोले "मुझे, मुझे"। झगडा चालू हुआ। जिस तरह भेडीया हिरन पर झपट्टा डालता है उसी तरह कुछ लोगोंने मेरी मुठ्ठीपर झपट्टा डाला। भीड बढ गयी। लोग एक दूसरेपर कूदने लगे। मैं नीचे बैठ गया। सब लोग झगडा करने लगे। मुझे भी चोट लगी, फिर भी मैं हसने लगा। मैंने पूछा "असली छोडके नकली के पीछे क्यूँ पडे हो?" और भाग गया। दूरसे ही मैंने मुठ्ठी में पकडे हुए कागज पर जो छपा था उस पर उंगली रखी "बंजारा क्रांती दल का मोर्चा आएगा" और बोला "५ जनवरीको मुंबईमें बंजारा क्रांती दल का मोर्चा निकाला जायेगा, तब सब लोगोंको वहाँ जाना है। हीरा का मतलब है हरिभाऊ राठोड। बाय, बाय! "

द्वेष से लोग चिढ गये और मेरे पीछे दौडने लगे। मैं भी जोरसे दौडने लगा। अरुणावती नदी में थोडा पानी था किन्तु काई फैल जाने की वजहसे पत्थर चिकने हो गये थे, इसलिये मैं फिसल गया और जोरसे गिरा। मेरे सिरपर बडी चोट लगी, फिरभी मैं दौडते दौडते घर पहुँचा। मेरी माँ और पिताजी घर नही पहँचे थे। मेरे चाचाजी आनंदराव मुझे वरोली में डॉ. काबराके पास लेके गये। सरकी चोट गहरी थी इसलिए चार टाके डालने पडे। उस घाव के चिन्ह मुझे आजभी इस घटनाकी याद दिलाता है।

वापस आनेके बाद मैं सो गया। मेरी माँ और पिताजी रात में जंगलसे लौटे। सिरकी चोट देखके माँ रोने लगी। जो हुआ वह सुनके उन्हें अचरज लगा। मैंने उन्हें क्रांतीदल और हरिभाऊ के बारे में पूछा किन्तु उन्हें कुछ पता नहीं था। मैंने उस समय निश्चय किया की मैं इस हीरेको खोज लूँगा और मैं फटी हुई चद्दर लेके सो गया।

मैं सोच रहा था "कल कौनसी कथा और समाचार बताने हैं ?" जब मेरे मन में विचार आया की मैं कल हरिभाऊ जी की कथा सुनाऊँ। तब मैं आनंदसे चीखा "मिल गया, मिल गया"। तब मेरे पिताजी और माँ जाग उठे। माँने पूछा "तूने क्या आत्मा/रुह देखी क्या? " मैंने जबाब दिया "नहीं"। उस समय रात के २-३ बज गये थे। माँने मुझे संत सेवालाल के नामका भस्म डालके वह पानी दिया। अगला दिन सोमवार था। अगले दिन मैं जल्दी तैयार हुआ। जिस तरह आजके नेता अपने रिश्तेदारोंके लिए समितीयाँ या महामंडलपर पद सुरक्षित रखते हैं, उसी तरह मैंने परिपाठमेंसे समाचार और कथाकथन मेरे लिए सुरक्षित रखे थे। नित्यक्रम शुरु होनेपर मुझे बहुत आनंद हुआ। राष्ट्रगीत, प्रार्थना, सुविचार होनेके बाद अध्यापक ने मेरा नाम "समाचार और कथाकथन" के लिए पुकारा। रोजके नित्यक्रममें विद्यार्थी हाथ में समाचारपत्र लेकर समाचार पढते थे, किन्तु जब मेरे हाथमें समाचारपत्र नहीं दिखाई पडा तब सबको अचरज लगा। मैंने वरोली बाजारमें मिला हुआ कागजका टुकडा जेबसे निकाला और समाचार बताना शुरु किया।

"नमस्कार, मैं एकनाथ पवार। वसंतराव केंद्रसे आजके मुख्य समाचार। ५ जनवरी को बंबई में क्रांती दल का मोर्चा निकाला जाएगा। उसका नेतृत्व हरिभाऊ राठोडजी करेंगे। उन्होंने एक पत्रकद्वारा राज्यके सब विमुक्त-घुमंतूओंको मोर्चमें बडी तादादमें शामील होनेका आवाहन किया है। धन्यवाद, आजके मुख्य समाचार समाप्त। इसी समय इस केंद्रपर फिर मिलेंगे, तब तक नमस्कार।"

अध्यापकजीने कहा "एकनाथ, और एक-दो समाचार सुनाओ"। मैंने जबाब दिया "आज यही एक समाचार है।" और मैंने कथाकथन की शुरुआत की।

"विद्यार्थी मित्रो, मैं आज आपको एक कथा सुनाऊंगा। नाम है हीरा मिल गया"

एक काफिलेमें एक ध्येयवादी घुमंतू आदमी रहता था। उसे कुछ ना कुछ नया खोजनेका शौक था। एक बार उसने तय किया की उसे हीरा ढूँढना ही है। उसके इर्द गिर्द कूडेके बहुत ढेर थे। उसकी तरफ कोई भी ध्यान नही दे रहा था। उस आदमीके झोपडेमें अंधेरा था इसलिए बाहर चांदनी रातमें वह कूडेमें हीरा ढूँढ रहा था। उसे एक हीरा मिला। उसकी चमक देखकर उसे बहुत आनंद हुआ। उसने वह हीरा सबको दिखाया। लोग बोले हमने यह हीरा कूडेमें अनेक बार देखा, लेकिन उसको उठाया नहीं। वह घुमंतू आदमी बोला "यह हीरा बहुत कीमती है"। आज हमें मालूम हुआ हीरा चमकता है।" आजकी कथा समाप्त हुई। इसका बोध "ढूँढो, फिर मिलेगा, अज्ञान की वजह अपने पास जो किमती चीज है, उसकी कीमत ना समझना।"

सब लोगोंने तालियाँ बजाई। अध्यापकजी ने मुझे बधाई दी। हमारा नित्यक्रम बहुत अच्छा हुआ इसलिए लडकीयाँ बोलने लगी "कितना अच्छा नित्यक्रम! बहुत अच्छा हुआ"।

मैं कक्षामें जाके बैठा, किन्तु मेरा ध्यान उस लाक्षणिक कथा पर था सब लोगों को कथा अच्छी लगी, लेकिन उसमें छिपे हुए अर्थ किसीके भी ध्यानमें नहीं आया। उस दिन पढाईकी तरफ

मेरा ध्यान नहीं जा रहा था। इसलिए मैं दोपहर शालामें नहीं गया, दूसरे दिन गया। परिपाठ खतम होने के बाद अध्यापकने कहा "कल शालामें जो छात्र नही आये वे ठहर जाए।"

हम काफिलेके चार सदस्य ठहरें। अध्यापक हर एकको पीटते पीटते मुझ तक पहुँचे और बोले "अरे, हीरा ढूँढनेके लिए कहाँ गये थे? " और मुझे कसकर तमाचा मारा, थोडे मुक्के भी मारे। इस अन्याय का विरोध करनेके लिए मैंने मेरा थैला उठाया और घर जाने लगा। अध्यापक मेरी तरफ देख रहे थे, किन्तु मै रुका नही। तबसे ७-८ दिन शालामें नही गया, किन्तु पढाई कर रहा था।

मेरे मनमें अनेक विचार आने लगे। इस घटनासे मेरे मनमें अपने समाजके प्रति अभिमान जागृत हुआ। इस घटनाका मेरे मनपर गहरा असर हुआ। हरिभाऊ राठोडजी के संघटनाका पर्चा कूडेमें मिलना, नदी में सिरपे चोट लगना, शालामें नित्यक्रममें हरिभाऊका जिक्र करना, दूसरे दिन अध्यापकसे पिटाई होना, ये सब घटनाएँ इत्तफाकसे घटी। जिनको मैं ढूँढ रहा था, वे शायद हरिभाऊ राठोडजी थे। समाजका अभ्यास करते हुए और इत्तफाकसे, या मेरे अच्छे नसीबसे ये घटनाएँ मेरे मनपर अंकित हुई।

हरिभाऊ राठोडजी पूरे देशमें विमुक्त-घुमंतू लोगोंके लिए आंदोलन करनेवाले विमुक्त-घुमंतूओंके दीपस्तंभ है, ऐसी उनकी छबी मेरे मनपर उस समय अंकित नहीं थी। विमुक्त-घुमंतू समाज कूडे जैसा तितर बितर हो गया है। हरिभाऊजी उनके लिए आंदोलन कर रहे हैं, यह बाते मनपर अंकित हो गयी। यहाँसे गुरु-शिष्य का रिश्ता निर्माण हुआ। शालेय जीवनकी वह घटनाएँ प्रत्यक्ष जीवनमें साकार हुई।

इस किताब, "विमुक्त-घुमंतूओंके दीपस्तंभ, हरिभाऊ राठोड" इस किताब के रुपमें।

हरिभाऊ राठोडजी :- विमुक्त-घुमंतू समाजके दीपस्तंभ

फोटो

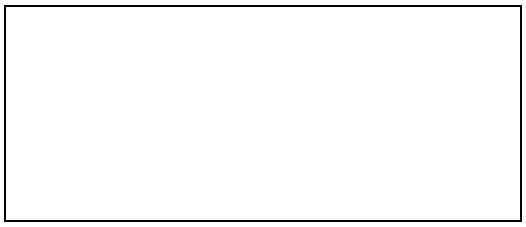

फोटो

हरिभाऊ राठोडजी का परिवार

बंजारा समाज भारतका एक सुदृढ, बलशाली, धैर्यवान और साहसी समाज है। यह समाज एक ऐतिहासिक और खास संस्कृतीका पोषण कर रहा है। यह समाज हिमालय से कन्याकुमारी तक बिखरा हुआ है।

यह समाज शूर क्षत्रियोंसे बना है। यह समाज राजस्थान की ऐतिहासिक वीरभूमी में बस गया। समय की गती में इस समाजकी हार हो गयी और यह समाज बिखर गया। उन्हें घुमंतू का जीवन नसीब हुआ। वे प्रकृतीके पास, गाँवके बाहर अपना काफिला बनाकर रहने लगे। इस दौरान उनके प्रस्थापित समाजमें अत्यंत असंवैधानिक, अमानवीय बर्ताव किया। यह समाज बहुत सीधा-साधा और भोला था। इसका प्रस्थापित समाजने गलत फायदा उठाया और उन्हें विकास और परिवर्तनसे मीलों दूर रखा।

आत्यंतिक गरीबीसे पीडित और अपने हकोंसे वंचित इस बंजारा समाजमें हरिभाऊजी का जन्म वागदा गाँव तालुका केलापूर जिला यवतमाळ यहाँ दि.०४.०२.१९५४ को हुआ। उनके पिताजीका नाम नासरु और माताजीका नाम घमाबाई था। वे बचपनसेही संवेदनाशील थे। अपने माता-पिताजी कितने कष्ट उठा रहे हैं यह वे बचपनसे ही जानते थे।

वे जब ९-१० बरसके थें तब उनकी जमीन सायखेडा बांध में गयी। इसलिए उन्हें वागदा छोडना पडा। नासरु बाबा अपने खेतोंसे बहुत प्यार करते थे लेकिन उन्हें वह छोडना पडा। नासरुबाबाने आखरी प्रणाम करके अपने खेतको स्पर्श किया, मिट्टी हाथ में ली। उन्हें अपना खेत मातासमान था। जाते वक्त वह फूटफूटकर रोए। यह सब देखकर हरिभाऊजी बहुत दुखी हुए और वे भी फूटफूटकर रोए। नासरुबाबा को दुख हो रहा था की जिस खेती ने उनके पूरे परिवार को माता जैसा संभाला, उन्हीको अभी छोडना पड रहा है। उनके पाँव उस खेतमें मानो फँस गये थे। वे उस खेतको छोडना नहीं चाहते थे। फिर भी उन्होंने अपने मनको कैसे भी करके मनाया और खेत छोड दिया। नासरुबाबा अत्यंत सीधे साधे और सच्चे, नेकदिल इन्सान थे।

वे सब सामान इकठ्ठा करके अपने परिवारके साथ नये जीवनकी नयी राह ढूँढते हुए निकले। मनमें बहुत दुख थे। वागदा काफिले की सुखदुख की यादें लेकर वे रो रहे थे। हरिभाऊ भी अपने आँसू नहीं रोक सके। वे फूटफूटकर रोने लगे। उनकी माँ का ध्यान उनकी तरफ गया। माँने पूछा "बेटा कुछ भूल गये है क्या? जिस नीमके पेड को हरिभाऊ हररोज पानी डालते थे उससे हरिभाऊ को बहुत प्यार हुआ था। वे सोच रहे थे, इस प्रिय मित्र को साथ कैसे ले जा सकते है? इधर से जाने के बाद इस पेडको पानी कौन देगा? उन्होंने प्यारसे पेडको आलिंगन दिया। अपने "मक्या" नामके बकरीको सीनेसे लगाकर वे सांड के छकडे में रोते रोते बैठे।

यह घुमंतू काफिला वागदासे निकलकर दाभा (मानकर) तालुका केलापूर पहुँचा। वहाँ उन्होंने अपना डेरा लगाया। नासरुबाबा चाहते थे की अपना बेटा खूब पढे इसलिए उन्होंने हरिभाऊको समर्थ हायस्कूलमें दाखिल किया। घरकी स्थिती बराबर न होने के कारण हरिभाऊ छात्रावास में रहने लगे। उन्होंने अपनी माध्यमिक शिक्षा नेताजी हायस्कूलमें पूरी की और पांढरकवडामें बाबासाहेब देशमुख पारवेकर महाविद्यालयमें पदवी हासिल की।

हरिभाऊ अपने घर के हालात जानते थे। उनके माता-पिता दिनरात खेतीमें काम करते थे। विमुक्त-घुमंतू समाजकी दुर्दशा उन्हें अस्वस्थ करती थी। उन्होंने जिद ठान ली। अपना परिवार तथा समाजकी दुर्दशा उनके ध्यानमें जब आती थी तब वे जी लगाकर पढाई करने लगते थे।

छात्र दशामें जिद और दृढता बहुत ही महत्वपूर्ण है उसके बिना जीत हासिल करना नामुमकिन होता है। हरिभाऊ को शासकीय छात्रवृत्ती मिली। उनके माता-पिताने बहुत ही मेहनत करके कष्ट उठाके पैसे इकठ्ठा किये, उनकी सहायता तथा उनमें जो प्रबल इच्छा शक्ती थी, उसकी मददसे उन्होंने पदवी हासिल की।

एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण होनेकी और वकील बनने की उनकी इच्छा थी। उन्होंने एल.एल.बी. को प्रवेश लिया। वे पहला सत्र उत्तीर्ण हुए, लेकीन अभी नासरुबाबा को यह मुमकीन

नही था की वे कुछ भी करके हरिभाऊ को पैसे भेजे। हरिभाऊ को यह बात चुभ रही थी की उनके पिता को उनके लिए लाचार होना पड रहा था।

हरिभाऊ सोच रहे थे की वे बुरी हालत के खिलाफ कितना लड सकते हैं। उनमें हालतपर काबू पाने की कितनी क्षमता है या वे हालात के सामने घुटने टेकते हैं। यह सब जाननेके लिए समय हर एक का इम्तिहान लेता है। जो उसमे उत्तीर्ण होता है वही असामान्य बनता है। हरिभाऊ को यही अनुभव आया। उन्होंने हालातसे लडना और उसपर विजय पाना उचित समझा। उनके हालात ठीक नहीं थे, उस समय उन्हें उनके खुदके बलबूते मंत्रालयके वित्त विभाग में १९७७ में अच्छी नौकरी मिली।

नियुक्ती का आदेश काफिलेमें मिला। सब लोग बहुत ही खुष हुए। नासरुबाबाने जो कष्ट उठाए उसका अच्छा फल मिला। घने जंगलमें रहनेवाले बंजारा समाजके एक युवा हरिभाऊ को अच्छी नौकरी मिली।

काफिलके लोगोंको बहुत बुरा लग रहा था की यह पंछी अपना घोसला छोडके जा रहे हैं। हरिभाऊके रिश्तेदारोंको भी बहुत दुख हो रहा था। हरिभाऊ भाव-विभोर हो गये। उन्हें अपने लिए कष्ट उठानेवाले माता-पिता, काफिले में मदद करने वाले लोग दिखाई देने लगे। उन्हें नौकरीसे ये लोग ज्यादा महत्वपूर्ण लगे।

हरिभाऊ बंबई जानेवाले थे। काफिले के लोग इकठ्ठा हुए। सब रिश्तेदार, मित्र फूटफूट कर रो रहे थे। उनके आंसू हरिभाऊ को कुछ बता रहे थे। संवेदनशील हरिभाऊ खुदको समझा रहे थे की वे उन आसुओं की जान से जादा रक्षा करेंगे और आगे चल पडे। उन्होंने अपने साथ दो चद्दर, एक थाली, एक लोटा लिया था। नाके पे सब लोग हरिभाऊ को समझा रहे थें। माँ रो रही थी। काफिले का एक युवक बंबई जैसे दूर शहर जा रहा था। माँ को लग रहा था की जिसको जानसे ज्यादा प्यार किया, वह अभी हमें छोड रहा है इसका उन्हें बहुत दुख हो रहा था। हरिभाऊ का जी

भर आया। वह फूटफूट कर रोने लगे। रिश्तेदार हरिभाऊ से बोले, "बराबर खत लिखते रहो। इस समय शेवंता चाची दौडते आयी और बोली "मैंने बाजरे की रोटी की है, भूख लगेगी, खा जाओ।

शेवंता चाची ने दी हुई रोटी, काफिलेके रिश्तेदार और माँ का आशिर्वाद लेके हरिभाऊ मुंबई के लिए निकल पडे।

रास्तेमें उन्हें बहुत सवाल सताते थे। हर एक आँसूकी बूंद उन्हें बेचैन कर रही थी। वे सोच रहे थे "मेरे सब लोग रो रहे थे, मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ? इस सोच में वे दादर (बंबई) पहुंचे।

हरिभाऊ ने अपनी पहिली तनखा काफिले के सदस्यों को भेजी। काफिले के सदस्य आनंदसे फूले न समाए। उन्हें बहुत अच्छा लगा की नौकरी मिलने से पैसेके लिए, पेट पालने के लिए जो बुरे हालात हो रहे थे, तकलीफ उठानी पडती थी वह अभी खतम हुई। इसका उनके माता-पिता को भी बहुत समाधान हो रहा था। हरिभाऊ बंबई में स्थिर (सेटल) हो गये। बंबई चमचमाती, नकली, कृत्रिम, फॅशनेबल, भौतीकवादी, आधुनिक दुनियामें भी उन्होंने अपना जंगलमें घूमने वाला, शिक्षा छोडके पत्थर की पूजा करने वाला काफिला अपने दिलसे लगाके रखा था। यह हरिभाऊ की विशेषता थी। नौकरी के पैसे में मजे लेते हुए सुख और चैनके पीछे दौडनेवालो में से हरिभाऊ नहीं थे।

हरिभाऊ को लग रहा था की काफिले के युवकोंको भी उनके जैसी नौकरी मिले वे भी अपने बलबूते। वे अपने पैरोपर खडा रहें। हरिभाऊ को यह भी लगता था की इस लिए वे अपने काफिलेके युवकोंकी सहायता करें। हरिभाऊ ने बहुत बंजारा और पिछडे हुए युवकोंकी बंबई के सेवानियोजन केंद्र में रजिस्ट्री करवाई। इस वजहसे गोरमाटी समाजके बहुत लोगोंको शासकीय सेवामें नौकरी मिली। अभी हरिभाऊके साथ बडी संख्यामें युवक आने लगे।

पेट पालने के लिए मुंबई आनेवाले हजारों मजदूरोंपर हरिभाऊ की कृपादृष्टी थी। वे मजदूरोंके लिए काम करने लगे। उन्होंने गोरमाटी बंधुओंको इकठ्ठा किया और बांद्रा कुर्लामें भरतनगरका निर्माण किया। यहाँसे उनके मनमें घुमंतूओंके बारेमें उनके मनमें ज्यादा संवेदनाएँ आने लगी। उन्हें रेशनकार्ड, मतदाता कार्ड मिलें इसलिए हरिभाऊ प्रयास करने लगें। उन्होंने मजदूरोंकी, गोरमाटीयोंकी समस्याएँ अपनी समस्याएँ मान ली। इसलिए वे बंबई में अधिक लोकप्रिय होने लगे। उन्हें मंत्रालयका वित्त विभाग ज्यादा समय तक नहीं जचा। वे १९७९ में महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडळ में दाखिल हुए। वहाँ कुछ समय नौकरी करने के बाद उन्होंने नये सिरे से १९८२ में महाराष्ट्र विद्युत महामंडळ में "लेखाधिकारी " का पद संभाला।

इस पदपर जब वे थे, तब उन्होंने बिजली कामगारोंके अधिकारोंके लिए आंदोलन छेडा। मजदूरोंकी तनखासे होनेवाली गलत कर कपात को उन्होंने स्थगित किया। नौकरी करते हुए वे समाजसेवा की तरफ आकर्षित हुए। उनका झुकाव अब समाजसेवा की तरफ होने लगा।

उन्हें बचपनसे समाजसेवा के प्रति आस्था थी। वे नम्र विचारोंसे प्ररित थे। उन्होंने दलित बांधवोंके लिए एक प्याऊ खुली की। यह उनके सामाजिक उत्तरदायित्व मानने का और आधुनिक जीवनमूल्य मानने का सबूत हैं। उनके इस अद्वितीय सामाजिक काम के लिए महाराष्ट्र के अजातशत्रू वसंतराव नाईकजी के करकमलोंद्वारा उनका सन्मान किया गया।

फोटो

उनके मनमें ऐसी भावना थी की हम इन्सान है तो इन्सान को दूर क्यों करें? बंजारा समाज आत्यंतीक कर्मठ क्षत्रिय है, इसलिए अन्य समाजके प्रति देखनेका उसका दृष्टीकोन अलग है। यह अलग दृष्टीकोन नष्ट हा जाए, जातीभेद या उच्च-नीच विचार ये समाजको लगा हुआ एक रोग है

और वह नष्ट होना चाहिए ऐसी हरिभाऊकी राय है, इसलिए हरिभाऊ के मनमें कभी जातीय विद्वेष पैदा नहीं हुआ। उनका अंतरात्मा विमुक्त-घुमंतू समाजके विकासके लिए तडप रहा था।

बंजारा जाती अभी विमुक्त है, किंतु भूतकालमें वह शूर क्षत्रिय जाती थी। वे राज करते थे। वर्तमान काल में प्रस्थापित समाजने उनकी अत्यंत बूरी हालत की। इसका परिणाम बंजारोंके पूरे अस्तित्वपर हो गया।

एक समय की राज्यकर्ता और शूर जाती, समय की गतीमें पेट पालने के लिए दूर दूर भटकनेवाली, अस्थिर जीना जीनेवाली जाती बन गई। विस्थापित होने की वजहसे उन्हे शिक्षा, आरोग्य, सुयोग्य आसरा इन सबसे वंचित होना पडा।

अपना समाज संघटित हो जाए इसलिए हरिभाऊने "बंजारा जोडो अभियान" शुरु किया। इसी समय समाज को संघटित करने के लिए भूतपूर्व कॅबिनेट मंत्री मखराम पवार दिल लगाकर काम कर रहे थे।

इस दरमियान "बंजारा-वंजारा" विवाद खडा हो गया। वंजारा समाज के कुछ लोग बंजारा समाजका जाली प्रमाणपत्र पाकर शासकीय नौकरी प्राप्त करने में लगे थे। बंजारा समाजपर हो रहे इस घिनौने अन्याय के खिलाफ हरिभाऊ ने आवाज उठाई। इस अन्याय के खिलाफ मखराम पवार, रणजित नाईक जैसे महत्वपूर्ण बंजारा नेताओंने भी आवाज उठायी।

बंबई बम विस्फोट कांडकी वजहसे सुधाकरराव ने मुख्यमंत्रीपद छोड दिया। उनके बाद शरद पवार मुख्यमंत्री बन गये।

हरिभाऊ ने शरद पवार को समझाया की बंजारा जातीके प्रमाणपत्र देनेमें धोखाधडी हो रही है वह बंजारा जातीपर अन्यायपूर्ण है।

महाराष्ट्र सरकारने १९९२ सालमें वाधवा समितीका गठन किया था। बंजारा-वंजारा विवादके बारेमें मखराम पवार, हरिभाऊ राठोड और रणजित नाईक इन्होंने सरकारको महत्वपूर्ण

सूचना दी। बंजारा और वंजारा ये दो अलग-अलग जातीयाँ हैं इसलिए उन्हें अलग-अलग आरक्षण रहने चाहिए ऐसी मांग हरिभाऊ ने की। बंजारा समाज को २.५% आरक्षण था। हरिभाऊ ने वो ३% करवा दिया। समाज अभी हरिभाऊको चाहने लगा।

नौकरी करते हुए भी समाज के प्रति कटिबद्ध रहने वाले लोग बहुत ही कम मिलते हैं। नौकरी मिलने के बाद आदमी अपना पूरा कर्तव्य भूल जाता है। अपने बच्चे, पत्नी, घर और गाडी इसमें वह बाकी सब भूलता है, ये आजका कडवा सच है। लेकीन हरिभाऊ इनमेंसे नहीं थे। उन्होंने समाज कार्य को कभी भी ना नहीं कहा। बंबईमें हरिभाऊ को चाहनेवालोंकी तादाद बढने लगी।

हरिभाऊ सोचने लगे की समाज के संघटन के लिए एक प्रभावी संघटना होनी चाहिए। हरिभाऊने लिखना शुरु किया। वे विविध तरह के लेखन करने लगे। उनका लेखन महाराष्ट्र टाईम्स, लोकसत्ता, पुढारी और नागपूर पत्रिकाओं में छपने लगा। उनका लेखन विचार संपन्न था।

बंबईमें अनेक लोगोंको लगने लगा की हरिभाऊ समाजको उचित दिशा दिखायेंगे। समयकी ये पुकार थी कि बंजारा जाती एक समुचित और प्रभावकारी संघटन में गठित हो।

समाजके बुरे हालात और पिछडापन ध्यानमें रखते हुए समाजको उसके लिए दिल लगाकर जी तोड मेहनत करने वाले नेता की आवश्यकता थी। यह समय की मांग थी।

इसी हालात में दि.०४.०२.१९९१ यानी हरिभाऊ के जन्मदिन को "बंजारा क्रांतीदल" यह क्रांतीकारी संघटन स्थापित हुआ। हरिभाऊकी समाज के प्रति निष्ठा और श्रद्धा देखकर उनके हाथ में नेतृत्व की बागडोर दी गयी।

"मन में है आशा होगी क्रांती

हम स्थापत करेंगे विमुक्त-घुमंतू क्रांतीदल

यह दल समाज के लिए चंदन जैसा घिस जाएगा

मेरा गोरमाटी क्रांतीवीर खुद्दार हैं

राह है कठिन उसकी काश्मिरसे कन्याकुमारी तक

पार कर रहा है यह वीर बंजारी

लगन है उसकी समाजके उन्नती की

उसमें भरी है वीरता कोलंबस की

खून में दौड रही है उसके समाज क्रांती

है वह समाजका सच्चा जीवनसाथी"

विमुक्त-घुमंतू समाज न्यायसे वंचित था, इसलिए अनेक समस्याओंमें उलझ गया। उसका अस्तित्व ही धोखे मे आया। इस समाज के नेतृत्व के लिए हरिभाऊ ने काम शुरु किया। हरिभाऊपर क्रांतीदल का प्रचार करके समाज जागृती करने की जिम्मेदारी आ गई। समाजके लिए क्रांतीदल एक आशा बन गई।

हरिभाऊ शुरुसे ही सावधानी बरतते थे की किसीपर भी अन्याय नही होना चाहिए। वे अन्याय के प्रति सख्त नाराज थे। उनका स्वभाव शांत है और उनके चेहरेपर कोमल भाव रहते हैं। फिर भी उनका व्यक्तिमत्व अन्याय के खिलाफ लडनेवाला व्यक्तिमत्व है।

हरिभाऊ महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडल में लेखाधिकारी थे उस समय उन्होंने बिजली कर्मचारीयोंको न्याय दिला दिया। समस्या चाहे गन्नेके खेत मजदूरोंकी हो या मुंबई में स्थलांतरित होनेवाले परिवारोंकी, हरिभाऊ वह समस्या खुद अपनी समझकर सकारात्मक भावनासें उसे सुलझाने लगते है। हरिभाऊ हर एक विषयका चिंतन और मनन करते है। वह हर घटनाको संवेदनाशील तरहसे देखते है।

फोटो

उनके स्वभाके खास पहलू हैं कम बोलना, जादा सोचना और अपनी सोच कृतीमें उतारना। समाचार पत्रोंमें उनके ज्यादा लेख प्रकाशित होने लगे। उन्हें लेखन में रुची पैदा हुई। वे समाजके बारेमें ज्यादा लिखने लगे। रात में लेख लिखने के बाद कमलाजी (उनकी पत्नी) को दिखाने लगे।

कमलाबाई उनके लेखनकी पहली पाठक थी। कमलाजीने लेखको सराहने के बाद हरिभाऊ खुष होते थे।

साहित्य समाज जीवनका आईना होता है। साहित्यमें बहुत बडी ताकत होती है। वह राजसत्ता पलट सकता है। यह बात प्रगत समाजको मालूम है। हरिभाऊने भी ये जान लिया। सुधाकर नाईक बंजारा समाजके ख्यातनाम साहित्यिक और पत्रकार थे। वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बन गये। सुधाकरराव नाईक को साहित्यमें बडी रुची थी। वे साहित्य संम्मेलन के अध्यक्ष भी बने थे। उसी तरह हरिभाऊ लेखन करने लगें। उन्होंने दो किताबें लिखी "बंजारी और वंजारी" और "भाजप और विमुक्त-घुमंतू" ये दोनों किताबें वैचारिक आशयसे परिपूर्ण हैं और सर्वांग सुंदर हैं।

अपने समाजको दयनीय और बुरे हालातसे निकालना है, तो उसके लिए बहुत कष्ट करने की और त्याग करने की आवश्यकता है, निस्वार्थ रहना चाहिए। हरिभाऊ यह पूरी तरहसे जानते थे की समाजके दुख दूर करने के लिए उन्हें बहुत तकलीफें उठानी पडेंगी और कष्ट उठाने पडेंगे। अपने समाजका कुछ दायित्व अपने उपर है और समाजके लिए कुछ ना कुछ करना चाहिऐ ऐसा वे सोचते थे।

जाती व्यवस्था के कारण भारतमें बहुजन समाजके हालात बहुतही बुरे हुए है। उनके प्रति बहुत समयसे अन्याय हो रहा है। बहुजन समाजको शिक्षा और धन तथा सत्ता का अभाव है। इसकी वजहसे वह इस अन्याय के खिलाफ नही लड सका।

समय की पुकार है की अपने हक पाने के लिए और सन्माननीय जिंदगी के लिए बहुजन समाज संघटित हो। बहुजन समाजके अनेक नेताओंको परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई और वे इकठ्ठा हो गये। सन्माननीय मखरामजी पवार, ॲड. प्रकाश आंबेडकर, निळू फुले, हरिभाऊ राठोड, श्रीमती ठाकूर, शांताराम पेदरे जैसे कार्यकर्ताओंने एकही मंचपर आकर दि.१५.०३.१९९३ को बहुजन महासंघ का गठन किया।

मखराम पवारजीने बहुजन समाजके माध्यमसे पूरे महाराष्ट्र में जनजागृती की थी। इस बहुजन महासंघ का विस्तार करने में हरिभाऊने बडा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह बहुजन महासंघ का आंदोलन बडा करने में हरिभाऊ का संघटन कौशल्य और सच्चाई का योगदान भूला नही जा सकता।

हरिभाऊ, मखराम पवार, निळू फुले इन्होंने बहुजन महासंघ का विस्तार किया। उस समय एक नामचीन समाजसुधारक गो. रा. खैरनारने भी भ्रष्टाचार के खिलाफ जन आंदोलन खडा किया था। इस आंदोलन में हरिभाऊ शामिल हुए थे। हरिभाऊ ने खैरनारजी के जन सभाओंका आयोजन अकोला, दर्यापूर, जळगांव इन स्थानमें किया। समाजको मजबूत करनेके लिए हरिभाऊ बहुत कोशिश कर रहे थे। सबका ध्येय था बंजारा समाजको न्याय दिलाना। मखराम पवार और हरिभाऊ ने समाजको सही दिशा दिखाने के लिए बहुत कार्यक्रम आयोजित किये। ये दोनों अलग व्यक्ती जरुर थे, लेकिन उनका उद्देश एक ही था, समाजका विकास और समाजकी नींव मजबूत बनाना।

बंजारा समाजके विकास के लिए वसंतराव नाईक और सुधाकर नाईक इन्होंने भी बहुत कष्ट उठाए। समाजमें परिवर्तन लाया, किंतु उनके बादमें समाज परिवर्तन की गती तेज करने की आवश्यकता पैदा हुई। परिवर्तन सीमीत कालके लिए नहीं होना चाहिए, वे शाश्वत होना चाहिए। तत्कालीन परिवर्तन समाज या राष्ट्र को उचित दिशा नहीं देता। बिखरा हुआ समाज संघटित करना, उसे अपने स्वाभिमानकी याद दिलाना, उस पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना ये सब महत्वपूर्ण और मूलस्वरुप बाते हैं और समाजको उसकी आवश्यकता है।

"वे सूरज का तेज लेकर अंधेरे को भगाने आये

उनका संकल्प था परिवर्तन करके

समाज में क्रांती लानेका"

हरिभाऊ सामाजिक परिवर्तन का समर्थन करते थे। वे समाज संगठन के लिए सक्रिय कार्यकर्ता बने। समाजको एकत्र करने के लिए समाज का एक आदर संबोधन रहना आवश्यक है। हर एक समाज बांधव को चाहिए की स्वतंत्र संस्कृती की तरह सांस्कृतीक आद्य प्रचारक संतका नाम उसकी वाणीसे निकले। दो या अधिक बंजारा बांधव इकठ्ठा होकर उन्होंने एक दूसरे को "जय सेवालाल" से संबोधित किया तो समाजकी संस्कृती और एकता को बढावा मिलेगा इस हेतूसे हरिभाऊने १९९४ में दादर (मुंबई) मे धर्मगुरु संत रामराव महाराज को बुलाया और "जय सेवालाल" की उद्घोषणा की। आज भी जब दो बंजारा भाई एक दूसरे से मिले तो एक दूसरेसे आदर और प्रेमभावसे "जय सेवालाल " ऐसा संबोधित करते हैं।

विमुक्त-घुमंतू काफिलेमें लोगोकी आत्यंतिक गरीबी की वजहसे उन्हें पेट पालने के लिए उन्हें जो कष्ट उठाने पडते हैं वह देखकर हरिभाऊ दुखसे तिलतिल होते थे। उनके मनमें कई सवाल पैदा होते थे जातीके नामपर इतना अवमानीत, हीनदीन बर्ताव, असहाय जीवन हमारेही नसीबमें क्यो? कबतक हमारा ये शोषण चलेगा? हमें इसके बारेमें कुछ ना कुछ तो करना चाहिए।

हरिभाऊ के घरकी हालत बहुत खराब थी किन्तु वे निश्चय, आत्मविश्वास और विवेकसे अमीर थे। उन्होंने अपने हालात ध्यानमे रखते हुए बहुत कष्ट लेकर अपनी पढाई पूरी की। उन्हें कठिनाईयोंके पहाड का सामना करना पडा। उनके परिश्रम और माँ-पिताजी के आशिर्वाद के फलस्वरुप उन्हें महाराष्ट्र विद्युत मंडलमें लेखाधिकारी की बहुत अच्छी नौकरी मिली, किन्तु उनके सेवाभावी और समाजप्रेमी मनको नौकरी में जादा समय खुशी नही मिली।

समाज का संघटन और प्रगती अपेक्षासे बहुतही कम थी। नौकरी करते हुए समाज कार्य करना ये बहुत ही कठीन था। उनका समाज कार्य कभी थमा नही किन्तु यह अहसास होने लगा की नोकरी करते हुए वे विमुक्त-घुमंतूओंके लिए कार्य नहीं कर सकते, लड नही सकते, समाजपर जो अन्याय हो रहे है उन्हें दूर नही कर सकते। उनके सामने दो विकल्प हुए। एक नौकरी करना, दूसरा इस्तीफा देना।

खुदके परिवारके लिए नौकरी करना श्रेष्ठ है या समाजकी हालत दूर करने के लिए समाजकी सेवाभावी नौकरी करना श्रेष्ठ है ऐसे मनके आंदोलनोंकी वजहसे उनके नौकरी में अस्थिरता पैदा हुई। उन्हें लगा की जब समाज बुरी हालतमें है, तब उन्हें नौकरी की छायामें रहना उचित नही लगा इसलिए उन्होंने धैर्य रखते हुए १९९५ मे समाजसेवाके लिए नौकरीका इस्तिफा दे दिया। इससे उनके मनमें विमुक्त-घुमंतूओं के लिए प्यार कितना था यह समझता है । त्यागपत्र देने के बाद उन्होंने समाज कार्य का बीडा उठाया और समाज क्रांतीकी शपथ ली। महाराष्ट्रमें बहुजन समाजकी प्रगती दिनदूनी रातचौगुनी हो रही थी। हरिभाऊने समाज के लिए नौकरी का त्याग किया। अभी वे समाज हित के लिए पूरा समय काम करने के लिए तैयार थे लेकिन समाजके कुछ लोग इस महान त्याग को बकवास समजने लगे।

"आदमी नौकरी कर रहा तोही कुछ काम का है। आदमीने नौकरी छोडना या उसे नौकरी नहीं हो तो वह कुछ काम का नहीं है।" ऐसे कुछ लोगोंके विचार थे। हरिभाऊ को बहुत बुरा लगने लगा, क्योंकी उन्होंने समाजके लिए नौकरी छोडी थी और अभी वही समाज उन्हें मानसिक तकलीफ दे रहा है।

हरिभाऊ के त्यागको नजरअंदाज करके कुछ लोगोंने समाजमें उल्टा सीधा बोलना शुरु किया, किन्तु हरिभाऊने इस संकटका धैर्यसे सामना किया। खुदको संभाला। उन्हें समाजके मानसिकताकी पूरी पहचान थी। उन्होंने नौकरी छोडनके पहले उसका असर क्या होगा उसका विचार किया था। हरिभाऊ कहते थे की वह असर उन्हें अभी दिखाई दे रहा है।

राजनीतीमें प्रवेश किये बिना समाजको न्याय दिलाना अत्यंत कठिन है, समाजकी प्रगती राजनीती के प्रतिनिधित्व पर नापी जाती है। डॉ. आंबेडकर कहते है "राजसत्ता वह चाबी है, जो कौनसा भी ताला खोल सकती है।"

हरिभाऊको मालूम था की राजनीतीसे ही समाजकारण आगे किया जा सकता है।

हरिभाऊको कोई भी राजकीय विरासत नही मिली थी। उन्हें आर्थिक आधार भी नही था। १९९५ में वे दिग्रस मतदाता संघसे विधानसभा चुनाव लडें। वे बाहरके उम्मीदवार थे इसलिए जनताने उन्हें स्वीकृत नही किया। उन्हें हारका सामना करना पडा।

उन्होंने नौकरी छोड दी थी। चुनाव हारे थे। इन बातों का बडा प्रभाव उनके मनपर आया। फिर भी उनका समाज कार्य जारी था। इस कठीन समयमें उनकी धर्मपत्नी कमलाजीने उनका बहुत ही महत्वपूर्ण बेजोड साथ दिया। उनके साथके कारणही हरिभाऊ इस कठीन कालसे और दुखसे उभरकर बाहर आये। हरिभाऊ के छोटे भाई शशिकांतने भी उनकी बहुत मदद की।

महाराष्ट्र विधानसभा के १९९५ के चुनाव में बहुजन महासंघके सब उम्मीदवार चुनाव हारें। दिग्रस मतदाता क्षेत्रसे हरिभाऊ चुनाव लडे थे। इसलिए उनके और महासंघके अन्य नेताओंमें वैचारीक मतभेद पैदा हुए। हरिभाऊने बहुजन महासंघ सदाके लिए छोड दिया।

यह काल उनके जीवनमें अत्यंत कठीन और तूफान खडा करने वाला था। सामाजिक कार्यकर्ताकी हैसियतसे अलग प्रभावी मंच निर्माण करने के बजाय उनके सामने कोई रास्ता नही था। उनके जीवनमें अस्थिरता पैदा हुई। हरिभाऊको फिरसे नौकरी मिलें इसलिए कुछ लोग (गोपिनाथ) मुंडेसे भी मिलें। हरिभाऊको रत्नागिरीमें नौकरी मिले इसलिए उन्होंने प्रयास किये। किन्तु हरिभाऊने नौकरी करने के लिए फिरसे इन्कार किया।

हरिभाऊने पक्का निर्णय लिया - चाहे समाज कैसा भी बर्ताव करे, उसके लिए काम करना है।

हरिभाऊने समाज की स्थितीपर चिंतन किया। इसी दरमियान लक्ष्मण गायकवाड ("उचल्या" किताब के लेखक) इन्होंने ०९.०८.१९९७ में "बोंबाबोंब" (शोरगुल) नामका मोर्चा निकाला था। इसमें हरिभाऊने महत्वपूर्ण योगदान दिया। बंजारा समाजके हरिभाऊ के समर्थक बडी तादाद में इस मोर्चे में शामिल हुए थे।

फोटो

इस घटनासे तत्कालिक उपमुख्यमंत्री मा. गोपिनाथ मुंडे पर हरिभाऊ का बडा प्रभाव पडा। उन्होंने हरिभाऊके कामपर ध्यान दिया।

जीवनको ध्येयकी वजहसे अर्थ प्राप्त होता है। ध्येयहीन जीवन, गंधके बिना फूल जैसा होता है। ध्येयहीन इन्सान जीवनको कभी सही अर्थमें सार्थ नही कर सकता। ध्येयवादी इन्सान अपने सूखे जीवनको भी सुगंधभरा बगीचा बना सकता है। इसलिए कडी इच्छाशक्ती चाहिए। यदि इन्सान कुछ अलग करके दिखाना चाहता है, तो उसके मन में जिद, खुदपर भरोसा और सकारात्मक इच्छाशक्ती होनी चाहिए। उसे सदैव कार्य करते रहना चाहिए। तूफानोंसे, संकटोंसे झगडना चाहिए। अपना ध्यान सदैव अपने ध्येय पर रखना चाहिए।

हरिभाऊ शुरुसे ही ध्येयवादी थे। वे ध्येयपूर्ती के लिए कौनसे भी कष्ट उठाने के लिए तैयार थे। उनमें बडी इच्छाशक्ती थी। वे अपने ध्यानसे कभी विचलित नही हुए।

हरिभाऊने कभी काम करते वक्त जननिंदाकी तरफ ध्यान नहीं दिया। काबिल इन्सान की बहुत लोग निंदा करते है और उनका विरोध करते हैं। हरिभाऊने सब बातें समझ ली और कार्य किया।

वे अपना कार्य नियोजनपूर्ण पद्धतीसे, सच्चाईसे, समाजके प्रति निष्ठा रखते हुए, शुद्ध अंत:करणसे और पूरे चिंतनके साथ करते हैं। मा. गोपिनाथ मुंडेजीने ये सब बाते ध्यानमें रखते हुए अपने कार्यालयमें अतिरिक्त निजी सचिव के पदपर उनकी नियुक्ती की। इस नियुक्तीसे सब विमुक्त-घुमंतू समाजको लाभ हुआ।

जीवनमें दूसरोंके सहकार्यके बिना यशस्वी होना अत्यंत कठिन है। लोहेका पारसमणी से स्पर्श होने के बाद लोहेका परिवर्तन सोना होता है और वही सोना आगे चलकर चमकनेवाला गहना होता है। मा. मुंडेजीने हरिभाऊकी की हुई नियुक्ती इसी बातकी पुष्टी देता है।

जब अलग अलग तरहके व्यक्ती अपने आसपास होते हैं, तब उनमेंसे उचित व्यक्तीको चुनाव करना आम आदमी नहीं कर सकता। सोने की पहचान असली सुनार ही करता है। गोपिनाथ मुंडे ऐसे एक राजनैतिक सुनार थे जो समाजके काबिल सोने को पहचानते थे। मुंडेजीने एक तरहसे बंजारा समाजको बडा आधार दिया। इस नियुक्ती से हरिभाऊ के जीवनमें अलगही मोड आया।

हरिभाऊने अपना पूरा ध्यान बंजारा क्रांतीदलकी ओर देना शुरु किया। मजबूत और प्रभावशाली संघटनाएँ और दबावगुटोंपर समाजकारणकी पक्की नींव खडी होती हैं। बंजारा क्रांतीदलको मजबूत करनेका सुवर्ण अवसर हरिभाऊको मिला। उसका उन्होंने पूरा लाभ उठाया।

फोटो

सामाजिक कार्यमें निष्ठा रखनेवाले हरिभाऊ अब अपना सामाजिक आंदोलन तेजीसे चलाने लगे। क्रांतीदलके माध्यमसे कई कार्यकर्ता उनके साथ इकठ्ठा हुए। समाजके बहुत कार्यकर्ता क्रांतीदलका कार्य करने लगे।

जगत्गुरु संतश्रेष्ठ सेवालाल महाराज इस विमुक्त-घुमंतू समाजमें पैदा हुए थे। उन्होंने समाजको एक सूत्रमें बद्ध किया और समाजकी अलगही संस्कृतीको बढावा दिया। समाजप्रवर्तक श्री. वसंतराव नाईक ने भी इस समाजका विकास करने के लिए अत्यंत सराहनीय और अच्छा कार्य किया है। किन्तु वसंतरावजी के निधनसे समाजकी छत्रछाया छीन ली गयी। ऐसे हालात पैदा हुए की शायद समाज फिर तितर बितर हो जाए। बीसवी शताब्दी परिवर्तनशील, वैज्ञानिक और सूचना

तंत्रज्ञान पर निर्भर है। हर समाज प्रगती कर रहा है, क्या इस स्थितीमें हमारा समाज टिक पाएगा? ऐसी स्थिती विमुक्त-घुमंतू समाजके मनमें पैदा हुई।

समाजकी ये बूरी हालत देखकर हरिभाऊको बडा दुख होता था। उन्होंने अभी अपने प्रचार कार्यपर ज्यादा ध्यान देना शुरु किया। पहले क्रांतीदल सिर्फ शहरोंमें और कर्मचारी लोगोंमें जाना जाता था। किन्तु विमुक्त-घुमंतू समाज बडी तादादमें जंगलोंमें, पहाडी इलाकोंमें रहता है, इस समाजके ज्यादा से ज्यादा सदस्योंतक क्रांतीदल पहुँचना चाहिए, इस उद्देश्यसे हरिभाऊने जगह जगह क्रांतीदलकी शाखाएं शुरु की।

विमुक्त-घुमंतू समाजके हर काफिलेको, पाडा, झुग्गी (झोपडा), पाल इधर तक क्रांतीदल की शाखाएं पहुँची। उसके माध्यमसे समाजका संघटन हो, संस्कृती बनी रहे, समाजमें सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतीक जागृती निर्माण हो इस उद्दश्यसे प्रेरित होकर हरिभाऊ कार्य करते रहे। समाजको अभिमान होने लगा की काकासाहब के बाद उनको संभालने वाला हरिभाऊके रुपमें कोई तो है।

फोटो

पुराने समयसे समाजपर अन्याय होने की परंपरा अबतक खतम नही हुई। उसके खिलाफ आवाज उठाना चाहिए। प्रस्थापित समाजने हमारे समाजके सब हक छीन लिए है इसलिए प्रस्थापित व्यवस्थाके खिलाफ हमें आवाज उठानी चाहिए, ऐसा हरिभाऊ सोचने लगे।

"गूँज रही है आवाज क्रांती की

विमुक्त-घुमंतूओंके अस्मिता की

जय हो विमुक्त-घुमंतू क्रांती का

चलो मेरे बंधुओं-बहनों

शामील होंगे इस क्रांती में"

हरिभाऊने कोनेकोनेमें यह संदेश पहुँचाया की समाजने एक होके हालातपर काबू पाना चाहिए, हालातको पराभूत करना चाहिए। सब जगह यह सूचना और संदेश फैल गया की क्रांतीदल यह विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए आंदोलन करनेवाला झगडा करनेवाला संघटन है।

हरिभाऊ समाजकारणी थे। उन्होंने क्रांतीदल का उपयोग सिर्फ समाज के लिए किया। उनका असली उद्देश्य था - बंजारा समाज अपने बलबूते पर, अपने पैरपर मजबूत तरीकेसे खडा हो जाए, आत्मनिर्भर बन जाए।

हरिभाऊने दि.०५.०१.१९९८ को मंत्रालय (मुंबई) पर बंजारा समाजका धडक मोर्चा लिया। उसमें पारंपारिक बंजारन वेषभूषा पहनी हुई पूरे महाराष्ट्रसे आई हुई पचास हजार बंजारन महिलाएं शामिल थी। इससे हरिभाऊके संघटन सामर्थ्य का पता चला। राज्यकर्ताओंको भी इस मोर्चापर ध्यान देना पडा।

समाजपर हो रहे अन्याय की तरफ सरकारका ध्यान आकर्षित करने के लिए हर बरस ५ जनवरीको आझाद मैदान (मुंबई) यहाँ क्रांतीदल का मोर्चा निकाला जाता है। उस दिन भारतके अलग-अलग राज्योंसे आनेवाले विमुक्त-घुमंतू समाजके लाखों लोगोंका जनसागर आझाद मैदानमें उमड पडता है। इस मोर्चासे इस समाजमें अन्यायके खिलाफ आवाज उठाने की शक्ती पैदा हो गई है और यह शक्ती बढ रही है।

देवीदास राठोड जैसे क्रांतीदल के अनेक निष्ठावान कार्यकर्ते और विमुक्त-घुमंतू समाजके अनेक सदस्य यह लडाई अपने अस्तित्व की लडाई मानते है। राज्यो-राज्योंमें बिखरे हुए ये बांधव इस बंजारा नायक के नेतृत्वमें (हरिभाऊके) यह लडाई लड रहे हैं और अन्याय के खिलाफ आवाज

उठा रहे है। यह कार्यकर्ता किसी भी बात से डरते नही, अन्यायके खिलाफ लडते है। उन्हें एकही ध्यास है, समाजमें सुधार लाना, समाजकी जागृती करना।

किसी भी आंदोलनका यश तथा उसका परिणाम उसका नेतृत्व करनेवाले नेताके गुण और कौशल्यसे होता है। हरिभाऊ के नेतृत्वको कोई जोड नही कोई तुलना नही।

हरिभाऊ के मनमें कोई कपट या छल नही है, भेदभाव नही है, उनका स्वभाव पारदर्शी है। भाषणके समय कभी कभी वे जब जोश में आते है, उस समय उनकी आँखोंमें समाजपर हो रहे अन्याय के खिलाफ आग उमडती है। वे जब भावविभोर होते हैं तब समाजका अज्ञान, बुरे हालात, असंघटितता देखकर उनकी आँखोंमे आँसू आते है। एक कर्तव्यपरायण समाज कार्यकर्ताका दिल इससे पहचाना जा सकता है।

विमुक्त-घुमंतू समाज प्रकृतीके साथ रहनेवाला है, किन्तु वह चेतनाहीन बन गया है इसलिए उसे संघटित करना यह बडा कठीन और पेचिदा सवाल है। हरिभाऊके सामने यह सवाल खडा था अलग-अलग विचारोंके समाज बंधुओंको एकसाथ संघटित करना।

"विमुक्त-घुमंतूओंका हीरा है हरिभाऊ
जिन्होंने सिखाया है हमें,
यदि हम सब विमुक्त-घुमंतू एक हो जाए
तो फूल खिलेंगे, खुशबू आएगी
और अंधेरे में सूरज प्रकाशमान होगा
रोशनी आएगी"

हरिभाऊने समाजको संघटित बननेका महत्व समझाया। विमुक्त-घुमंतू समाजके शैक्षणिक पिछडेपनके बारेमें हरिभाऊ कहते हैं "कष्ट उठाओ, हालातसे झगडो, कठिनाईयोंका सामना करो लेकिन सीखो, शिक्षा प्राप्त करो।" अपने बालबच्चोंको सीखानेका अर्थ है समाजका अस्तित्व कायम रखना। शिक्षाके बिना हमारी अचेतना, निराशा दूर नही होगी।

हरिभाऊका सामाजिकतासे नाता बहुत मजबूत है। समाजकी स्थितीमें उन्हें बहुत रुची है। उन्होंने वसंतराव नाईकको अपना आदर्श माना है और वे समाजमें शिक्षाके प्रति जागृती करने के लिए कार्य कर रहे हैं। छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ती और शिक्षासे मिलनेवाली सुविधाएँ इनके बारेमें उन्होंने सरकारके पास बहुत अनुवर्तन किया। उनके सामाजिक विचार गौरतलब है।

हरिभाऊ अपने बहुमूल्य विचार समाज को दे रहे, है जैसे की विमुक्त-घुमंतू समाजमें शिक्षा प्राप्त करनेवालों की मात्रा बहुत ही कम है, इसकी वजहसे समाजमें बहुत समयसे चल रही कई बुरी पद्धतीयाँ, प्रथाएँ वैसेही चल रही है। अंधविश्वास बडे पैमानेपर किया जा रहा है। समाजमें अभी भी विज्ञानके प्रती सजगता, निष्ठा निर्माण नही हुई। इसलिए समाजका विकास नही हो रहा है। इन्सानमें जो इन्सानियत है उसकी पूजा करना यही सच्ची पूजा है। पशुओंको बली देनेसे भगवान प्रसन्न नही होते।

हरिभाऊ समाजबांधवोंको कहते है "जो मिले वह काम करो। काम करते रहो, पैसा कमाओ, बचत करो, फिजूल खर्चे मत करो बूरी लतोंसे, बूरी आदतोंसे दूर रहो।" समाजमें अभी भी निरक्षरता, अंधविश्वास ये समस्याएँ खडी है। उत्पादन के संसाधन, रोजगारी, नौकरी इनसे समाज कोसो दूर है। यह बदलना चाहिए। अपना समाज स्पर्धामें आगे आए और आगे रहे इसलिए हरिभाऊ बहुत परिश्रम ले रहे हैं।

बंजारा संस्कृतीका सितारा राष्ट्रीय स्तरपर चमकना चाहिए। इसलिए हरिभाऊ जो कार्य कर रहे थे उसका अनेक लोगोंने समर्थन किया। किन्तु क्रांतीदलकी तरक्की देखकर समाजके कुछ नेताओंको अच्छा नही लगा और उन्होंने हरिभाऊके खिलाफ बातें करना शुरु किया। फिर भी हरिभाऊ टससे मस नही हुए और उन्होंने समाजकी सेवा चालू रखी। बंजारा क्रांतीदल के गठनके पहले "ऑल इंडिया बंजारा सेवा संघ" यह संघटना समाजमें कार्यरत थी। लेकिन क्रांतीदल की नई पिढी की वजहसे क्रांतीदल अधिक लोकप्रिय हुआ। इस बीच दोनोंमें स्पर्धा और मतभेद पैदा हुए। फिरभी हरिभाऊने क्रांतीदल का काम चालू रखा।

युवा लोगोंको लगने लगा की, क्रांतीदल उनके हकका एक मंच है। हरिभाऊने निर्णय लेते हुए पूरी बातें सोची थी। आगेके परिणाम भी सोच लिए थे, कौनसे धोखे हो सकते है इसपर भी विचार किया था। समाजकार्य करते वक्त फूलके साथ कीचडको भी अपनाना पडता है, ये समझना चाहिए। यह गुण हरिभाऊमें था। हरिभाऊके साथ मखराम पवार, रणजीत नाईक, राजू नाईक, अमरसिंह तिलावत ये सब कार्यकर्ता बंजारा समाजमें सुधार लाने के लिए कार्य कर रहे थे।

हरिभाऊ और सेवासंघमें सिर्फ वैचारिक मतभेद थे। किन्तु उनके मन अलग नहीं थे। रणजित नाईक अपेक्षा कर रहे थे की, हरिभाऊका आंदोलन समाजको न्याय दिलानेवाला हो और समाजको साथ इकठ्ठा रखने के लिए सकारात्मक कदम उठाने वाला हो। हरिभाऊ की कुछ नीतीयाँ रणजित नाईक को मंजूर नही थे और वे नहीं चाहते थे की हरिभाऊ अकेले हो जाए, इसलिए उन्होंने हरिभाऊ को एक खत लिखा और अपने विचार स्पष्ट किये। दि.२९.०९.१९९९ को लिखा पत्र इस प्रकार था:-

हरिभाऊजी, आप बंजारा समाजके अच्छे विधायक कार्यकर्ता है, ऐसी आपने आपकी पहचान पैदा की है। इस हिसाबसे हमने आपके साथ बारबार भेट की और चर्चा की। आपकी और एक पहचान है, आम आदमीकी भीड इकठ्ठा करनेकी असामान्य और अद्‌भूत शक्ती रखनेवाला नेता। आपने आपकी ऐसी पहचान किस तरह पैदा की?

"और इसी पार्श्वभूमी में

हमने आपसे बार बार वार्तालाप किये।"

"हमारे लिए आपकी यही सही पहचान

और एक है पहचान आपकी, वह है आम आदमीयोंकी

भीड खिचने वाली अद्‌भूत क्षमता रखनेवाले

अद्वितीय नेता की"

महाराष्ट्रके बंजारा आंदोलन और बंजारोंको विशेष योगदान देनेवाला व्यक्ती यह आपकी पहचान है।

उपरोक्त बातें रणजीत नाईकने लिखे हुए खतमें थी। उपरोक्त पत्र बहुत लंबा था इसलिए यहाँ नही दिया गया। हरिभाऊने उसका अत्यंत अच्छा जबाब दिया वह ऐसा

सप्रेम सादर :- आपका खत दि.२९.०९.१९९९ को प्राप्त हुआ। ये खत बहुत महत्वपूर्ण है और ऐतिहासिक स्वरुप का है। आपने इस खतमें लिखी हुई बातें अत्यंत महत्वपूर्ण है और बंजारा आंदोलन से जुडी हुई है। मैं इस पत्रका जबाब देनेका पूरी गंभीरतासे प्रयास कर रहा हूँ। आपने जो बातें उठाई है वे समाजके हित के लिए उठाई है। यह मै जानता हूँ और यहाँ बताना चाहता हूँ।

मेरे जीवनमें मैं बंजारा समाजके कुछ जेष्ठ और श्रेष्ठ व्यक्तीसे मिला हूँ। मैं उनका बहुत आदर करता हूँ। आप (रणजित नाईक) उनमेंसे एक हैं। आप मेरा प्रेरणास्थान हैं। जब हमारी १९८२ में पहचान हुई थी, तब "बंजारा-वंजारा" विवाद की शुरुआत हुई थी। गोराई बीचमें सलोई समारोहमें आपने कुछ बातें स्पष्ट की। उस समय आपने अपनी कुछ गलतीयाँ मान ली थी, ये आपकी सच्चाई मेरे ध्यानमें आई।

आपने सच्चे दिलसे जो प्रयास किये उसकी वजहसे महाराष्ट्रमें "बंजारा-वंजारा" विवाद खतम हुआ। यह मुद्दा डॉ. वाधवा समितीके प्रतिवेदनमें भी दर्ज है। ये बहुत पुरानी बात है। आपको गरीब लोगोंके प्रति बहुत करुणा है यह मैंने बारबार देखा है। आपके व्यक्तित्व का मुझपर बहुत असर हुआ और मैं आपको चाहने लगा।

आपका समाजके प्रति आवेग, संघटन कुशलता देखकर मुझे भी ऐसा लगा की आप अखिल भारतीय बंजारा समाजकी बागडोर संभाले। इसलिए मैंने एप्रिल १९९६ में दिल्लीमें हुए कार्यकारिणी की सभा में मा. सुधाकरराव नाईक को विरोध किया और आपके इच्छा के विपरीत

आपका नाम सुझाया और दूसरे दिन सुधाकरराव नाईक के घर जाकर आपको अध्यक्षपद मिले इसकी कोशिश की।

उस समय बंजारा क्रांतीदल नया था और उसका संघटन मजबूत नहीं था। क्रांती दल के प्रयत्न से और उसके झेंडेके नीचे कुछ विवाद और सवाल सुलझाए गये जैसे बंजारा-वंजारा विवाद, आरक्षण का प्रमाण, छप्परबंद समाज के सवाल, बिंदूनामावली, पिछडे हुए लोगोंको बढोती देना, भूचाल क्षतिग्रस्त लोगोंके पुनर्वसन इत्यादि। फिर भी क्रांतीदल ग्रामीण इलाके तक नही पहुँचा था। मैंने ये सब बातें सुलझाने के लिए बहुत प्रयास किये और समाज बांधवोने मुझे उतनी ही सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। आमदार मखरामजी पवारके माध्यमसे महासंघका आंदोलन शुरु हुआ और उसे मेरा साथ ये बहुत महत्वपूर्ण है। मैं यह भी जानता हूँ की आप भी इन सब बातोंसे बहुत खुश हुए।

हम दोनों की बातचीतसे मैं यह जान चुका हूँ की हम दोनोंका बिछड जाना हम दोनों के लिए बहुत ही क्लेशदायक और दु:खद बात है। खुद मुझे भी इस बात का बहुत दुख हो रहा है।

किन्तु आप जानते है की, इसके बाद मेरे जीवन में हुई घटना इत्तेफाकसे हुई और एक विशेष हालात में हुई।

मैं यह मानता हूँ की, मैं मा. गोपीनाथ मुंडेजी का अतिरिक्त निजी सचिव बनने के बाद क्रांतीदल की प्रगती दिन दूनी रात चौगुनी हुई।

फिर भी, सिर्फ मैं श्री. गोपीनाथ मुंडेजीका निजी सचिव था इसलिए बंजारा क्रांतीदल का विकास हो गया यह कहना उचित नहीं है। क्यूंकी समाजके लिए मैंने किया हुआ कार्य नकारा नही जाता, चाहे कोई भी कुछ भी सोचे। क्रांतीदल के माध्यमसे बहुत कार्य संपन्न हुए है जैसे की पोहरादेवी को तीर्थस्थल का दर्जा, विमुक्त-घुमंतू के लिए मंत्रायलमें स्वतंत्र कक्ष की निर्मिती, २.५% आरक्षण बढाकर ३% करना, साभरवाल का मामला और दि.०५.०१.१९९८ और

दि.०५.०१.१९९९ को मंत्रालयपर निकाले हुए मोर्चेके द्वारा की गई समाजजागृती, भूचाल क्षतिग्रस्त लोगोंकी कठिनाईयाँ, बंजारा समाजके काफिलेंके लोगोंको बिना वजह इल्जाम लगाकर पुलिसद्वारा किये हुए उत्पीडन से उनकी मुक्तता करना, पिछडे हुए वर्गोंके कर्मचारी, अफसर इनपर होनेवाले अन्यायके खिलाफ आवाज उठाना और उन्हें न्याय दिलाना इत्यादि। इन सब बातोंको नजर अंदाज किया नही जा सकता।

समाजके कुछ लोग मेरा विरोध कर रहे हैं, लेकीन खुल कर नही, चुपकेसे। वे सिर्फ राजनीतीसे प्रेरित है ओर अपना अस्तित्व बना रहे हैं इसलिए मेरा विरोध कर रहे है। उन्हें दूसरा डर यह है की क्या मैं बंजारा समाज को भारतीय जनता पक्ष के पक्ष में विलीन करुँगा? तीसरी बात ऐसी है की भारतीय मानसिकता के अनुसार कुछ लोग जिस आदमी के पूर्वज राजनीतीमें नही थे, उनका नेतृत्व ये लोग स्वीकृत नहीं करते। मैं ये सब बातें जानता हूँ।

मै ये भी जानता हूँ की मैंने समाज के लिए कितना भी अच्छा काम किया तो भी कुछ लोग मेरे खिलाफ होने वाले है। मैं इन सब बातोंको ध्यानमें रखके सब काम करता हूँ। मेरा प्रयास यही रहता है की मैं सबसे प्यारसे बर्ताव करु और कुछ विरोध या झगडा न हो।

सेवासंघके पुनर्रचना के लिए आपने किये हुए प्रयास बहुत सराहनीय है। आपका मार्गदर्शन, विचार, आपके मूल्य मैं बडी गंभीरतासे पढता हूँ। वे मुझे धर्म संकट में डालते हैं। एक तरफ मैं सेवासंघके खिलाफ नहीं जा सकता। मुझे इस स्थिती का सामना करना पड रहा है इसलिए मैं सेवासंघके पुनर्रचना के लिए आयोजित किये हुए हर कार्यक्रम के लिए उपस्थित रहा। मुंबई, औरंगाबाद, अकोला इन जगह कार्यसमितीकी जो बैठकें हुई उसमें मेरे कार्यकर्ता कुछ विरोध न करे इसलिए मैंने उन्हें मनाया। पिछले बरसमें औरंगाबादमें संघटनकी जो बैठक हुई उसमें मैंने एक बात देख ली, मंचपर बैठे लोगोंने मेरी प्रशंसा की, लेकिन कुछ लोगोंको वह प्रशंसा अच्छी नहीं लगी। उस समय मुझे लगा की कुछ लोग भविष्यमें भी मेरे खिलाफ लडनेवाले हैं । और वही हुआ।

सेवासंघके माध्यमसे मुझे पीछे ढकेलनेकी साजिश बडी बखूबीसे की जा रही है। मेरी तमन्ना है की सेवासंघ यह संघटन बडा होना चाहिए, पूरे भारतमें फैलना चाहिए, वह पूरी तरहसे राजनीतीसे अलग होनी चाहिए। आपसे भी मुझे बहुत लगाव है। इन सब बातोंको ध्यानमें रखते हुए मैं आपके साथ था, हूँ और रहूँगा। मैंने इसलिए बहुत बेईज्जती का सामना किया है।

अभी क्रांतीदल का कार्य सिर्फ महाराष्ट्र में सीमित है। किन्तु भविष्यमें यह संघटन अखिल भारतीय स्तरपर पहुँच सकता है।

आपने सुझाव दिया है की आजकी स्थितीमें बंजारा क्रांतीदल इस संघटन को राजनैतिक दल बनाया जाये, या "बंजारा" शब्द हटाके सिर्फ "क्रांतीदल" बनाके उसे राजनैतिक दल बनाया जाये। यह सुझाव सराहनीय है। हमें क्रांतीदलका प्राबल्य ऐसा बढाना चाहिए की, सब राजनैतिक दल, सरकार इनको दलका संभ्रम होना चाहिए। क्रांतीदल एक दबाव गुटके स्वरुपमें कार्यरत रहें। समाजका राजनैतिक दृष्टीसे विभाजन होना ये अनिवार्य है, और इसे रोका नहीं जा सकता। किन्तु सामाजिक दृष्टीकोनसे समाजके हित के लिए हम साथ साथ रहने का प्रयास करेंगे।

मेरा और माननीय मखरामजीका झगडा होगा ऐसा मत सोचिए। उनके प्रति मेरे मनमें बहुत सन्मान है और वह सदाके लिए रहेगा। सामाजिक दृष्टीसे हमारा झगडा होने की कोई भी वजह नहीं है। मैं आपको आश्वासित करता हूँ की समाजके हितके लिए समाजके प्रश्न सुलझाने के लिए हम साथ साथ रहेंगे और आंदोलन करेंगे।

आपको राजनैतिक आकांक्षा नही है, फिर भी अन्य लोग राजनैतिक दृष्टीकोन सामने रखते हुए आपको सलाह देते है। आप उनकी सलाहसे बावरे हो गये हैं। क्रांतीदल का विकास न हों, पद न बढे, समाजमें हरिभाऊका महत्व न बढे इसलिए कुछ लोग साजिश कर रहे हैं। कुछ लोग आपके माध्यमसे क्रांतीदल मिटाना चाहते है, आप उनसे अलग रहे, यही मेरी आपको सलाह है।

मुझे सामाजिक कार्य करते हुए राजकीय लाभ उठाना है और उसके जरीये समाजका फायदा करना चाहता हूँ, इसमे कोई अलग विचार नहीं हो सकता।

समाजकार्य और राजनीती एक दूसरेको पूरक है ऐसा मैं मानता हूँ। यदि हम सिर्फ समाजकार्य करते रहें तो समाजका आर्थिक और राजनैतिक विकास नहीं होगा। इसलिए मुझे हालात के अनुसार अपना बर्ताव रखना/करना पडेगा और मैं वह करुंगा।

क्रांतीदल को अभी लोगोंने स्वीकृत किया है और उसकी प्रगती हो रही है, चाहे कोई कितना भी विरोध करे।

समाजके सवाल सुलझाने के लिए हम साथ साथ रहेंगे। राजनैतिक दृष्टीकोनसे समाज एक होने की आवश्यकता है। भविष्यमें किसी एक राजनैतिक दलकी सरकार (केंद्र या राज्य दोनो में भी) आने की संभावना नहीं है। इसलिए हमारे समाजका प्रतिनिधित्व और नेतृत्व अन्य राजनैतिक दलोंमें भी बढाने की आवश्यकता है ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा है। मेरा दृष्टीकोन और मेरी राय स्पष्ट है और साफ है। मैं इसके बाद भी आपसे विचार विमर्श करके राह निकालने के लिए तैयार हूँ।

शुभकामना के सहित ..... (खत समाप्त)

इस खतसे सामाजिक आंदोलन के प्रति हरिभाऊकी आत्मीयता दिखाई देती है और वे एक स्पष्टवक्ता और निष्कपट कार्यकर्ता हैं ये प्रतीत होता है। ऐसा भी प्रतीत होता है की ऐसे बहुत लोग हैं जो नहीं चाहते की समाजमें हरिभाऊ का नाम हो, प्रगती हो। फिर भी हरिभाऊने इस विरोध का सामना किया और समाज सेवा नहीं छोडी। समाजके आधुनिक गठन में उनका नाम लेना अनिवार्य है।

फोटो

बंजारा संस्कृतीकी विशेषताएँ ऐसी है : समृद्ध गोरमाटी बोली, रंगरंगीन और खास किस्म के कपडे और आभूषण, खास और अलग तरीके के त्यौहार, गोर पंचायत, नसाब, ढावलो, ऐतिहासिक परंपरा। इस संस्कृतीकी अलग ही पहचान है।

इस संस्कृतीसे लोगोंको जीवनकी सीख मिलती है। यह एक कलापूर्ण संस्कृती है जिसमें अभिव्यक्ती है। आजभी हमें इस संस्कृती का दर्शन फिल्में तथा दूरदर्शन मालिकाओंमें होता है। इस संस्कृतीका उपयोग आज सिर्फ एक "फॅशन शो" की तरह हो रहा है यह बात निंदनीय है। इस संस्कृतीका जतन होना चाहिए। इस संस्कृतीका जतन करने के लिए होली, तीज जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार शहरी इलाकोंमें मनाने के लिए हरिभाऊने बहुत प्रयास किये हैं। वे सराहनीय है। हरिभाऊने गोर पंचायत, बंजारा संस्कृतीका प्रचार चालू रखा। हमें बंजारा संस्कृती हर ग्रामीण काफिला, नग्ला, टोला, पाल की तरह शहरमें भी दिखाई देती है।

"समाज मेरा बंजारा

है एक चमकता तारा

राज्य अलग, पाडा अलग फिर भी है एक समाज,

सेवालाल, जेतालाल सामकी माता ये हमारे है भगवान

है हम शूर बच्चे लख्खीशा गुरु के

भाषा हमारी गोरबोली अमृतसे प्यारी

बहुत मोती है, बहुत रत्न है, मेरा समाज एक महासागर है

हमारे समाजकी, भगवानकी है पवित्र लीला,

है इसका साक्षी इतिहास हमारा

सेवागड है हमारा तीर्थस्थान

वेष है हमारा आटी, चुनरी, चुडामणी, घागरा

सजती है ललनाएं इसमें हमारी

जीवन के गीत गाते है, सुरीली आवाज में

वाद्य है डफ-टोली-नगारा

अंधेरे पर जीत हासील कर सूरज आया है।

हमें जगाया दीर्घ नींदसे और कर ली क्रांती

हमारा गोधन है खेतों में,

बंजारे जमींपर, अंधेरे घरोंमें भी हमारे जीवन है

खुषी ही खुषी

दश दिशासे आ रहे है भक्त मोक्षधाम पोहरे में

बडी भीड में भी लेते हैं दर्शन संत

रामराव के"

(संदर्भ वेदना)

इस विशेष बंजारा समाज में पैदा हुए हरिभाऊ इस बंजारा संस्कृतीके उपासक है।

इस संस्कृतीमें जीवनका तत्व "ढावलो" तथा गीतोंमे से दर्शाया जाता है। इस संस्कृतीकी खासीयत और कला कौशल्य युवा पिढीको सिखाए, संस्कृतीका जतन हो जाए, समाजकी समस्या लोगों तक पहुँचे इस हेतुसे प्ररित होकर हरिभाऊने सह्याद्रि दूरदर्शन वाहिनी पर "नई दिशा" इस धारावाहिक का प्रसारण किया। इस धारावाहिक में विमुक्त-घुमंतू समाजका वास्तवरुप दिखाया था। यह धारावाहिक बहुत लोकप्रिय हो गया। इस धारावाहिकमें मराठी गानों के साथ गोरमाटी गाने भी सामिल थे। बंजारा समाजका खास तरह के वस्त्र प्रावरण, आभूषण का डिझाईन बहुत ही मनमोहक तरहसे किया था। हरिभाऊ इस धारावाहिक के कार्यकारी निर्माता थे और मंदार खानविलकर निर्मिती प्रमुख थे।

इस धारावाहिक की निर्मिती के लिए यवतमाळ, चालिसगांव, खानदेश, अकोला आदी स्थानोंपर जाकर वहाँ के हालात का मुआयना किया गया। उसके अनुसार वसई के पास भोईवाडे में इस धारावाहिक का चित्रिकरण किया गया। २६५ खंडोके इस धारावाहिक के द्वारा हरिभाऊ और मंदारने विमुक्त-घुमंतू समाजके हालात पर रोशनी डाली।

हर मंगलवार और बुधवार रात ८.३० को इस धारावाहिक का प्रसारण होता था। इस धारावाहिक को लोगोंने बहुत अच्छा सन्मान दिया। किन्तु दुर्भाग्य की बात ऐसी, की जिस समाजपर यह धारावाहिक चित्रीत की थी वही समाज यह धारावाहिक देख नहीं सका, इसका कारण आत्यंतिक गरीबी और शासनकी नजर अंदाजीकी वजहसे यह समाज विकास से कोसों दूर था। जहाँ इस समाजको एक समय का खाना मिलना भी बहुत कठिन था, तब दूरदर्शन जैसी बातों का सवाल ही पैदा नही होता था।

मेरे झोपडे में भी दूरदर्शन संच नहीं था, इसलिए मैं यह धारावाहिक नहीं देख सका। यदि मैं यह धारावाहिक देख सकता था, तो मुझे बहुत आनंद होता, प्रेरणा मिलती। किन्तु गरीबीकी वजहसे सब सपने सपनेही रह जाते हैं इसका दुख मुझे अभी भी हो रहा है। इस धारावाहिकने इस समाजमें एक नई उम्मीद जगाई। इस धारावाहिक के लए हरिभाऊने बहुत कष्ट उठाए।

हरिभाऊने लिखी कथापर विजय खानविलकर ने "गणाचं सपान" (गणाका सपना) यह एक खंडका नाटक किया। यह नाटक राज्य नाट्य प्रतियोगिता में प्रथम आया। यहाँसे विजय खानविलकर बहुत उत्साहित हुए। उन्होंने इस समाजपर धारावाहिक निर्माण करने का विचार किया। हरिभाऊ इस समाजके सदस्य होने की वजहसे इस समाजकी भूमिका और दुख जानते थे। यह दुख और भूमिका धारावाहिकमें पेश करने में हरिभाऊ, विजय खानविलकर और मंदार खानविलकर कामयाब रहें। इस महत्वपूर्ण धारावाहिक में उल्का कुलकर्णी, राधिका बोरकर, मंदार खानविलकर, उपेंद्र दाते, आराधना देशपांडे, रुपा सिरसाट, कमलेश सावंत, रमेश पडवळ आदि कलाकारोंने भूमिका अदा की थी।

इस धारावाहिक की वजहसे विमुक्त-घुमंतू समाजके स्थिती में बदलाव करवाने में बडी मदद मिली। हरिभाऊ के लिए यह बात महत्वपूर्ण थी। हरिभाऊ समाजमें उच्च कोटी के लोकप्रिय नेता बन गये।

फोटो

बंजारन के पेहरावमें माननीय श्रीमती सोनिया गांधी

समाजका विकास हो, समाजमें जागृती हो, शासन समाजके तरफ ध्यान दे इस हेतुसे हरिभाऊने अपना कार्य चालू रखा।

समाजकार्य में उन्हें बहुत रुची थी क्यूंकी वे समाजसे जुडे थे। उन्होंने समाजकी बहुतसी मांगे सरकारसे पूरी करवायी। इसकी वजहसे उनके नेतृत्वकी छबी लोगोंमे बढने लगी। किन्तु उन्हें लगा की समाजकी छोटी मांगे पूरी होनेसे समाजकी शैक्षणिक, आर्थिक और राजनैतीक स्थिती बेहतर नही होगी क्यूंकी समाजके समूचित विकास के लिए केंद्र में भी राज्य जैसी सुविधा समाजको मिलना यह समयकी माँग है। इसलिए तत्कालीन लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयीजीके कार्यकालमें उन्होंने वेंकटाचलम आयोगके सामने चर्चा करते हुए, ऐसी माँग रखी की, या तो विमुक्त-घुमंतू जातीयोंको तीसरी सूचीमें शामिल किया जाए या अनुसूचित जमातीयोंमें शमिल किया जाए ।

हरिभाऊको मा. गोपीनाथ मुंडेजीने बहुत सहकार्य किया जिसकी वजहसे समाजकार्यमें हरिभाऊका महत्व बढ गया। समाजकार्य और राजनीती ये दो परस्पर पूरक हैं, इसलिए राजीनतीमें प्रवेश करना स्वाभाविक है। हरिभाऊने बहुत कार्य किया था तो समाजमें ऐसा विचार आया की हरिभाऊको संसद का चुनाव लडना चाहिए। पंढरपूरमें विमुक्त-घुमंतू जातीके संमेलनमें

अटलबिहारी वाजपेयीजीने उनका उल्लेख "कार्य सम्राट बंजारा नायक" ऐसा किया, तब तालियोंकी प्रचंड गडगडाहट हो गयी। ये उनके कार्य का सन्मान है।

गोपिनाथ मुंडेजीका समर्थन लेकर हरिभाऊ राजनीतीमें अपनी पहचान पैदा कर रहे थे। हरिभाऊ को राजनीतीकी कोई भी विरासत मिली नही थी फिर भी उनपर यवतमाळ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रकी बागडोर संभाली सौंपी गयी। उनकी आर्थिक स्थिती इतनी अच्छी नही थी। हरिभाऊके पास केवल समाज कार्य था। चौदहवी लोकसभा चुनावमें गोपिनाथ मुंडेके समर्थन की वजहसे उन्हें भारतीय जनता पार्टीकी उम्मीदवारी मिली। उनके कार्यकर्ताओंने बहुत मेहनत की।

परिवर्तन और समाजकार्य के विषयपर जनताने हरिभाऊको अपनाया। उन्होंने भारी वोटोंके फर्कसे कांग्रेसी उम्मीदवार उत्तमराव पाटील को हराया। हरिभाऊ जीत गये। हरिभाऊकी जीत यह समाजकार्यकी राजनीतीपर हई जीत है। उन्होंने केवल समाज कार्यके बलबूते राजनीतीको हराया। उन्होंने यह सिद्ध किया की राजनीतीसे समाजकार्य बडा और महत्वपूर्ण होता है। आजकी राजनीती बहुत खराब बन गयी है। राजनीतीमें जातीयवाद, पैसा और राजनैतिक विरासत इनका महत्व बहुत बढ गया है, इस स्थितीमें समाजकार्य की विजय हो जाए ये अचरज है।

हरिभाऊने संसद-सदस्य बननेके बादभी समाजकार्य नहीं छोडा। उनके पहिले बंजारा समाजके बहुत लोग सांसद चुने गये और मंत्री भी हो गये। किन्तु संसद भवनमें "जय सेवालाल" संबोधन करनेवाले वे पहले सांसद है। अनेक दलोंके सांसदोको तथा बंजारा समाजके सांसदोंको स्वाभीमानसे "जय सेवालाल" पुकारनेवाले हरिभाऊ बंजारा समाजके इतिहासमें सदा स्मरणमें रहेंगे, इसमें कोई शक नही। हरिभाऊकी वजहसे बंजारा समाजकी राष्ट्रीय स्तरपर पहचान बनी यह निर्विवाद सत्य है।

१९८४ में श्रीमती इंदिरा गांधीजीकी हत्या के समय शीख धर्मके लोगोंके खिलाफ दंगा-फसाद हुआ था। इन दंगा-फसादमें मरनेवालोंमेंसे ७०% लोग बंजारा समाजके थे। मासूम और बेकसूर बंजारोंके इन दंगोंमें बली होना पडा। यह गंभीर मामला हरिभाऊने केंद्र सरकार को

समझाया। देशभर ये बातकी चर्चा हो रही थी। इस समय हरिभाऊने मृतकोंकी रिश्तेदारोंकी केंद्र सरकारी सहायतासे क्षतिपूर्ती मिलाके दी।

समाजसे जुडी हुई समस्याएँ कौनसी भी हो हरिभाऊ उसके लिए कार्य करनेको आगे आते हैं।

समाजके लिए लडनेवाले हरिभाऊ अन्य समाजके तरफ भी आत्मीयता का रुख अपनाते है। माना की हरिभाऊ पहले विमुक्त-घुमंतू समाजके है, किन्तु वे अन्य लोगोंसे भी आत्मीयतासे पेश आते हैं।

जब हरिभाऊ भारतीय जनता पार्टीके सांसद थे तब महाराष्ट्रमें खासकर विदर्भमें किसान बडे पैमानेपर खुदकुशी कर रहे थे। कर्जमें डूबे हुए, साहुकारीकी त्रासदीयोसें और जमीनसे फसल ना मिलनेसे खुदकूशी करनेवाले किसानों की तादाद बढ रही थी।

उस समय महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेनाने किसानोंकी खुदकुशीके सवालपर आंदोलन शुरु किया था। वह सराहनीय था। भाजप-सेना इन दलोंके सदस्य गुलाबराव गावडे, दिवाकर रावते, रामदास कदम, महादेव शिवणकर, भावना गवळी ये नेता किसानोंके लिए बहुत कार्य कर रहे थे।

दिल्लीमें विदर्भके हरिभाऊ राठोड, महादेव शिवणकर और अन्य भाजप सांसदोंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री. मनमोहन सिंग को निवेदन दिया और किसानोंकी ऋणमुक्ती के लिए उनसे चर्चा की।

सन २००६ में मूर्तिजापूर-यवतमाळ इस रेल लाईनको ब्रॉडगेज करने की माँग के लिए हरिभाऊने संसदमें बहुत प्रयत्न किये। उन्होंने वर्धा, यवतमाळ, दिग्रस- पोहरादेवी मार्गसे नांदेडके लिए रेलसेवा शुरु करने के लिए भी बहुत प्रयास किये।

विमुक्त-घुमंतू काफिलेका हरिभाऊ सांसद बन गये फिर भी उन्हें अहंकार नहीं हुआ। उनके कार्यकर्ता अभी भी सजग थे। जब इन्सान की स्थिती बदलती है, तब वह अतीत भूल जाता है और

वर्तमानके अधीन होता है। किन्तु हरिभाऊके साथ यह नहीं हुआ। विमुक्त-घुमंतूओंका यातनामय जीवन उन्हें संसदमें स्वस्थ बैठने नहीं देता था। उन्होंने समाजकी समस्याको कभी अनदेखा नहीं किया। विमुक्त-घुमंतू समाजकी विविध समस्याएँ मांगे और अन्य मसलोके बारे में उन्होंने क्रांतीदलकी तरफसे प्रधानमंत्री श्री. मनमोहन सिंगको एक निवेदन दिया। वह इस प्रकार था:

फोटो

१. विमुक्त-घुमंतू जातीयोंके लिए अलग तीसरी सूची तैयार की जाए।
२. बंजारा (गोरमाटी) भाषा को भारतीय संविधान की आठवी सूची में शामिल किया जाए।
३. भारतमें विमुक्त-घुमंतू जातीयोंके जो विद्यार्थी है उन्हें प्राथमिक शिक्षासे उच्च शिक्षातक छात्रवृत्ती दी जाए।
४. बंजारा समाजके मूल गुरु लखिखशा बंजारा इनका एक बुत संसद परिसरमें खडा किया जाए।

इन और अन्य मांगोके लिए हरिभाऊने प्रधानमंत्रीसे मुलाकात की। उस समय उस शिष्टमंडलीमें सांसद रविंद्र नाईक, स्वरुपसिंग नायक, ओमप्रसाद नायक, चरणसिंग नायक इनका अंतर्भाव था। इस भेंट और वार्तालापका समाचार "दैनिक लोकमत" इस दैनंदिन वार्तापत्रमें "हॅलो वाशिम" इस जिला आवृत्तीमें प्रकाशित हुआ। शीर्षक था "सांसद श्री. राठोड के नेतृत्वमें शिष्टमंडलीकी प्रधानमंत्रीसे मुलाकात"। ठीक उसी शीर्षक के साथ मेरे काव्य के चयन का वृत्त दि.२४.०५.२००६ को प्रकाशित हुआ था। शीर्षक था "एकनाथ पवार के काव्य का चयन" उसमें मेरा छायाचित्र भी था। इससे मेरा आनंद बहुत बढ गया।

प्रस्थापित नीच लोगोंने इस समाजके भोलेपन का, अज्ञान का, अस्थिरता का बहुत गलत फायदा उठाके समाजको प्रगतीसे वंचित रखा है और उसपर बहुत अन्याय किया है और अभी भी

कर रहे हैं। बंजारा समाज बहुत बडा है, विस्तृत है, व्यापक है। इसलिए उसकी समस्याएँ भी बहुत बडी है। जबतक समाजको अपनी समस्याएँ पेश करने के लिए मंच नहीं मिलता, तबतक समस्याकी तरफ सरकारका ध्यान आकर्षित नही किया जा सकता। इसलिए एक ही सर्वसमावेश मंच से समाज जागृतीके लिए आंदोलन छेडा जा सकता है। यह विचार मन में लेकर हरिभाऊने "बंजारा महापंचायत" का आयोजन किया। इस महापंचायत में देशके अनेक प्रांतोंके नेतागण, विमुक्त-घुमंतू समाजके कार्यकर्ता बडी तादादमें उपस्थित थे। इस महापंचायतके भारत सरकारके कृषी मंत्री ना. शरद पवारजी उपस्थित थे और सब लोगोंका ध्यान उधर गया।

फोटो	फोटो
मा. शरद पवार को निवेदन सौंपते हुए हरिभाऊ राठोड	बंजारा व्यासपीठपर शरद पवारसह अन्य मान्यवर

विमुक्त-घुमंतू बंजारा समाज बहुत समस्याओंसे लडकर उनपर जीत हासिल करके अलग तरहकी जिंदगी जी रहा है, फिर भी उसको अन्याय झेलना पड रहा है। बहुत कठिनाइयोंका सामना करके कैसे भी करके नौकरी करनेवाले कर्मचारी-अधिकारीयोंको भी उसकी तकलीफ सहनी पडती है। समाजपर हो रहा एक अन्याय दूर होता तबतक दूसरा तैयार रहता है।

विमुक्त-घुमंतू समाजके कर्मचारीयोंको पदोन्नती में दिये जानेवाले आरक्षण के खिलाफ विजय घोगरे नामके एक व्यक्ती ने मुंबई उच्च न्यायालयमें याचिका दायर कर दी थी। इसलिए इस समाजके किसी भी व्यक्ती की किसी भी पदपर नियुक्ती और पदोन्नती रोक ली गयी थी। इस समाजपर यह बडा अन्याय हो रहा था और ऐसा हुआ तो आनेवाली पीढी शासकीय सेवामें कही दिखाई नही देगी यह बात दिखाई दे रही थी। हरिभाऊके ध्यानमें यह बात आयी कि यदि इस अन्यायके खिलाफ अभी आवाज नहीं उठायी तो आनेवाली भावी पीढीयाँ हमें माफ नहीं करेगी। इस पदोन्नती आरक्षण आंदोलनमें हरिभाऊ का बडा हिस्सा है और अहम भूमिका है।

यह विमुक्त-घुमंतू समाज अंग्रेजोंपर खुफिया हमला करनेमें आगे था। अंग्रेजोंने समझ लिया की ये उनके खिलाफ लडनेवाले शूर लोग है, इसलिए अंग्रेजोंने इस स्वातंत्र्यप्रेमी समाजको १८७१ में गुनाहगारी जाती घोषित किया। उसमें अंग्रेजोंका स्वार्थ था। प्रस्थापित लोगोंको इस जातीका नेतृत्व करनेकी इच्छा नहीं थी इसलिए उन्होंने उनके माथेपर एक गुनाहगार का टिका लगाया।

इस समाजमें बहुत लोगोंको अंग्रेजोंके विरोधमें झगडते हुए अपने प्राण गँवाने पडे, किन्तु उन्हें दुर्भाग्यवश स्वातंत्र्यसैनिक या देशभक्त कहलाने के बजाय गुनाहगार कहलाया गया। यह मामला जब पंडित जवाहरलाल नेहरुजी के ध्यानमें आया तब उन्होंने दि.३१.०८.१९५२ मे क्रिमिनल ॲक्ट रद्द कर दिया और उन्होंने इस समाजको विमुक्त कर दिया। तबसे इन्हें "विमुक्त जमाती" कहलाया जाता है।

इस जमातीको ८१ बरस मानवी अधिकारसे वंचित रहना पडा है। सवाल यह पैदा होता है की स्वतंत्र भारतका संविधान लिखते वक्त डॉ. आंबेडकर इस जमातीको कैसे भूले? अनुसूचित जाती अनुसूचित जनजातीयोंके लिए सूची तैयार की किन्तु विमुक्त-घुमंतू जातीयोंके लिए संविधानकारोंने कुछ भी नही किया, यह लिखते हुए दुख होता है।

काका कालेलकरजी ने इस विमुक्त-घुमंतू जातीयोंके शैक्षणिक, आर्थिक विकास और उनके पुनर्वसन के लिए विशेष कार्यक्रम केंद्र सरकार शुरु करे ऐसी सिफारिस की थी। समाज संघटित नहीं था। समाजके अधिकारके लिए झगडने वाला कोई नही था, इसलिए समाजका विकास होने के बजाय अवमान और बेइज्जती होती रही।

अक्तूबर २००३ में इस समाजके विकास के लिए एक राष्ट्रीय आयोग नियुक्त किया गया। किन्तु इस आयोगने कोई भी प्रतिवेदन दिया नही इसलिए वह आयोग दि.२१.११.२००४ को रद्द कर दिया गया।

विमुक्त-घुमंतू समाजकी हालत दिन-ब-दिन बिगडती जा रही थी, इसलिए उनके लिये विशेष उपाय करनेकी आवश्यकता पैदा हुई। भूतकालकी तुलनामें यह समाज ज्यादा संगठित हुआ है इसलिए वो अपने अधिकारोंके प्रति जागृत हुआ है। नींदसे जागृत होनेवाले की मानसिक स्थिती कब बिगडेगी या वह कब अपने खिलाफ होगी यह बात अनिश्चित है, इसलिए इस समाजके लिए कुछ करना चाहिए ऐसा राजनीतीक दलोंको लगा। इस समाजके लिए हरिभाऊ राठोडजी राष्ट्रीय स्तरपर कार्य कर रहे हैं।

इससे दि.१४.०३.२००५ को रेणके आयोगका गठन यू.पी.ए. सरकारने किया। इस आयोग की वजहसे विमुक्त-घुमंतू समाजकी सच्ची स्थिती सामने आना मुमकिन हुआ।

मा. बाळकृष्ण रेणकेजीने बहुत प्रयास किये। विमुक्त-घुमंतू लोगोंके काफिला, वाडी, नग्ला, पाल इनमें वे खुद गये और इन लोगोंकी स्थितीका नजदीकीसे पूरा अभ्यास किया। मा. रेणकेजी का उद्देश था कि समाजको पूरा न्याय मिलना चाहिए किन्तु उन्होंने देखा की यह समाज इक्किसवी सदी में भी चिर निद्रामें था।

हरिभाऊ समाजके लिए पूर दिलसे कार्य कर रहे थे, तो उन्हें रेणके आयोग के प्रतिवेदन के बारेमें रुची होना स्वाभाविक था। हरिभाऊ समाज का कार्य कर रहे थे और उनके जरीये वे लोकसभामें चुनकर आये थे। हरिभाऊ जोरजोरसे और जी लगाके माँग कर रहे थे की, केंद्र सरकारने विमुक्त-घुमंतू लोगोंके लिए कुछ ठोस कदम उठाना आवश्यक है।

हरिभाऊने दि.१८.०८.२००५ को प्रधानमंत्री मा. मनमोहन सिंगजी को एक पत्र लिखा जिसके द्वारा उन्होंने बंजारी समाज और विमुक्त-घुमंतू समाजकी समस्यांए उनको पेश की। उन्होंने इस पत्रमें बडे विस्तारसे लिखा था की अनुसूचित जातीयाँ और अनुसूचित जनजातीयोंके उत्कर्ष के लिए तीसरी सूची जारी करें। विमुक्त-घुमंतू जातीयोंको अनुसूचित जाती और अनुसूचित जनजातीयाँ जैसा आरक्षण देना चाहिए। दि.२२.०८.२००६ को उन्होंने सामाजिक न्यायमंत्री श्रीमती मा. मीरा कुमार को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने बिनती की थी की विमुक्त-घुमंतू जाती के विकास के

लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए। "अब मैं सांसद बन गया, अब मेरी कुछ भी जिम्मेदारी नही है", हरिभाऊ ऐसा सोचनेवाले नहीं थे। वे समाजके लिए कुछ ना कुछ करते थे।

अभी हरिभाऊके लिए एक ही महत्वपूर्ण विषय रहा। "रेणके आयोग"।

२००७-२००८ ये वर्ष हरिभाऊ के लिए बहुत कष्टप्रद साबीत हुआ। हरिभाऊ कह रहे थे की यदि रेणके आयोग की सिफारिसें अंमलमें लायी गयी तो भविष्यमें समाजका अस्तित्व अबाधित रहेगा। हरिभाऊको लग रहा था की रेणके आयोग यह समाजके लिए अहम महत्वपूर्ण विषय है। आज चुप रहनेमें फायदा नही है। एक होके आंदोलन शुरु करना आवश्यक है।

रेणके आयोग के पहले भी हरिभाऊ तीसरी सूची या एस.टी दर्जा इन माँगोंके लिए केंद्र सरकारके पीछे पडे थे।

दिन बीतते जा रहे थे। हरिभाऊ रेणके आयोगकी सिफारस की बेचैनीसे इंतजार कर रहे थे। भारतमें १५ करोड आबादी का विमुक्त-घुमंतू समाज अपने एक समय की रोटीके लिए तरस रहे थे, उस समय उनका ध्यान रेणके आयोग की तरफ जाना कठीन था। शुरुमें अंग्रेजोंने और बादमें प्रस्थापितोंने उनकी जिंदगी बहुत ही खराब की, शमशान जैसे की, तो इस समाजके लोग क्या करेंगे?

ऐसे गरीब और बेहाल समाजका अभ्यासपूर्ण निरीक्षण करके रेणकेजीने अपना प्रतिवेदन दि.०२.०७.२००८ को केंद्र सरकार को सौंप दिया। इस प्रतिवेदन में विमुक्त-घुमंतू समाजके उत्थान और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिफारसे की गयी है। रेणकेजीने केंद्र सरकारको सूचित किया था की ये सिफारिसें ६ महिनेके अंदर स्वीकृत करके विमुक्त-घुमंतू समाजको सच्चा स्वातंत्र्य, नया जीवन दे दें।

रेणके आयोगपर जो जिम्मेदारी सौंपी गयी थी, वह उन्होंने निभायी। किन्तु देखना यह था कि क्या केंद्र सरकार ये सिफारिसे अंमलमें लाती है या उसके हालात भी मंडल आयोग के प्रतिवेदन जैसा होता है।

रेणकेजीने अपना प्रतिवेदन सादर करने के तुरंत बाद हरिभाऊ उसके समर्थन के लिए खडे हुए। रेणके आयोग की सिफारिसें तुरंत स्वीकृत किये जाए और अन्य माँगो के लिए दि.१०.०८.२००८ को बंजारा धर्मगुरु संत रामरावजी महाराज (श्री क्षेत्र पोहरादेवी) इनके नेतृत्वमें राष्ट्रपती मा. प्रतिभाताई पाटील-शेखावत इनके साथ बातचीत करके निवेदन सौंपा।

फोटो
तत्कालीन राष्ट्रपती प्रतिभाताई पाटील के साथ
हरिभाऊ राठोड और धर्मगुरु संत रामरावजी महाराज

हरिभाऊने उस समय राष्ट्रपतीको मिन्नत के साथ बिनती की रेणके आयोगकी सिफारिसोंपर जल्दी से जल्दी अंमल किया जाए। उस समय राष्ट्रपतीजीने शिष्टमंडली को आश्वासित किया की सिफारिसे किसी भी विलंबके बिना स्वीकृत करने के लिए वे कदम उठायेंगे। अन्य शिष्टमंडलीमें हरिभाऊ राठोड, जे.पी. पवार (दिल्ली), भीमराव नायक (कर्नाटक) दयाल सिंग (मध्यप्रदेश) आदि नेता शामिल थे।

समाजकी तादाद चाहे बडी हो, किन्तु समाज संघटित, जागृत, सजग और स्वाभिमानी नही हैं तो उसका कुछ उपयोग नही। सिर्फ लोकसंख्या काफी नही है, तो स्वाभिमानसे, एकात्मतासे न्यायके लिए प्रेरित होनेवाले लोगोंकी आवश्यकता है।

अपनी माँगे पूरी करवाने के लिए सरकारके पास बारबार जाना पडता है। तभी अपनी माँगो के बारेमें सरकार थोडीसी जागृत होती है यह हम सबका अनुभव है।

हरिभाऊका काँरवा नही रुका। समाजके हितके लिए लडते रहना यही उनका धर्म हो गया क्यूंकी विपत्तीयोंको पीठ दिखाकर भाग जाना, डरना यह विमुक्त-घुमंतू समाजने छोड दिया है। विपत्तीयोंसे डँटके, बिना डरे लडना, उनका सामना करना, यह बंजारा संस्कृती है, तो हरिभाऊ उसका अंमल करेंगे ही।

विमुक्त-घुमंतू समाज देशके मुख्य धारा में लाने के लिए हरिभाऊने दि.२०.०८.२००८ को आझाद मैदानमें विमुक्त-घुमंतू समाजके महामेले का आयोजन किया। उसमें निम्नलिखित माँगे की गयी।

१. विमुक्त-घुमंतू को तीसरी सूची लागू की जाए। (उन्हें तीसरी सूचीमें शामिल किया जाए)
२. विमुक्त-घुमंतूओंके लिए १०% अलग आरक्षण हो।
३. इंदिरा आवासमें २५% घर विमुक्त-घुमंतूओंके लिए आरक्षित किये जाए।
४. पूरे भारतमें विमुक्त-घुमंतूओंके लिए आश्रमशाला शुरु की जाए।
५. नागरी इलाकोंमें विमुक्त-घुमंतूओंके लिए बस्ती निर्माण की जाए
६. गरीब भूमी हीनोंके लिए सरकारकी तरफसे जमीन दी जाए।
७. विमुक्त-घुमंतूओंकी अलगसे जनगणना की जाए।

हरिभाऊने इस महामेले में पूरे भारतके विमुक्त-घुमंतूओंको आवाहन किया की वे अपनी न्याय मांगोंकी पूर्ती के लिए संगठित हो और उसका अनुवर्तन करें।

हरिभाऊजीका स्वभाव कमल जैसा था। कमल कीचडमें रहकर भी खुषीसे फूलता है और अपने अलग अस्तित्वकी रक्षा करता है। आजके युगमें स्वभाव महत्वपूर्ण है। यदि हम दूसरे का दिल जीत सकते है, तो जिंदगीमें कुछ भी हासिल कर सकते है। हरिभाऊ मितभाषी और महत्वाकांक्षी है किन्तु उनकी वाणी सदा मधूर और नम्र है। वे सच्चे अर्थमें विमुक्त-घुमंतूओंके दीपस्तंभ है।

हरिभाऊने विमुक्त-घुमंतूओंकी जिंदगीका खुद अनुभव किया था, तो वे उनकी समस्याएँ कैसे भूल सकते थे? रेणके आयोगकी सिफारसे अंमलमें लाने के लिए प्रयास करने के लिए वे डंट कर खडे रहे। उन्होंने इस आयोगके समर्थन के लिए दि.१५.१०.२००८ को पूरे भारतमें विमुक्त-घुमंतू बांधवोंको साथ लेकर जंतरमंतर (दिल्ली) मे निदर्शन किये।

फोटो

इस आंदोलनमें कांग्रेसके अजित जोगी और दिल्लीके प्रदेशाध्यक्ष श्री. जे.पी. अग्रवाल शामिल हुए थे। दोनो नेताओंने विमुक्त-घुमंतूओंके आंदोलनको अपना समर्थन दिया। मा. बाळकृष्ण रेणके और आयोगके सदस्य लक्ष्मणभार्ण पटणी इन्होंने भी आंदोलन की भेंट की। रेणके आयोगकी सिफारिस के लिए शुरुसे ही अनेक जातीयोंके हजारो समाजबांधव उपस्थित थे। आंदोलनमें महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और अन्य राज्यों में से आये हजारो समाजबांधवोंकी उपस्थिती समाजका संघटन और स्वाभीमानकी पुष्टी दे रही थी।

"गूँज रही थी आवाज देशकी राजधानी में

विमुक्त-घुमंतूओंकी

जो दर दर घूमते फिरते हैं,

रहते हैं पहाडोंमें, गाँवके बाहर

बडे आवेशसे, फुर्तीसे वे माँग रहे थे अपना हक

अपनों के लिए न्याय"।

जिसकी राजनैतिक इच्छाशक्ती बलवान है, वही आज स्वाभीमानसे जी सकता है, यह आजका सच है। आज समाज को संवैधानिक तरीकेसे लडनेवाले नेताकी आवश्यकता है। हरिभाऊने रेणके आयोग की पुष्टी के लिए जरुरी राजनैतिक और सामाजिक आबोहवा की निर्मिती की। उन्होंने अन्य समाजके सांसदोंको भी अपनाकर इस आंदोलनको बल दिया। विमुक्त-घुमंतू लोगोंकी स्थिती अत्यंत गंभीर है ऐसा सब दलोंके नेताओंको प्रतीत हुआ। रेणके आयोग के समर्थन के लिए हरिभाऊ ने अनेक सांसदोंको मनाया। इतना ही नहीं, रेणके आयोग की सिफारिसें तत्काल लागू हो जाए इसलिए सब दलोंके सांसदोने धरणा आंदोलन किया।

फोटो

इस आंदोलन में हरिभाऊ राठोड, केंद्रीय राज्यमंत्री माणिकराव होडल्या गाबित, सांसद श्री. विजय दर्डा (कांग्रेस), सांसद त्रिलोचन सिंग (भाजपा), सांसद देवीदास पिंगळे (रा.कॉ.), सांसद एकनाथ गायकवाड, सांसद बापू हरी चौटे, सांसद दामू शिंगडा आदी शामिल थे। लोगोंमें चर्चा थी की, विमुक्त-घुमंतूओं के लिए हरिभाऊ मन लगाके मेहनत कर रहे है। रेणके आयोग के लिए दिल्ली में जो आंदोलन छेडा गया उसका प्रतिध्वनी सह्याद्रि पहाडके कोने कोने में गूँज रही है। यह प्रतिध्वनी निद्रिस्त विमुक्त-घुमंतू समाज के साथ साथ सरकारको जागृत कर रही थी, अपनी समस्याओंके बारेमें बोल रही थी। इसमें हरिभाऊकी अहम भूमिका थी।

लोकसभा में हरिभाऊने दिल लगाके विमुक्त-घुमंतू समाजकी दलील पेश की। उनकी बातें सांसदोंके दिल को छूती थी। संसदमें सदस्योंको पहली बार विमुक्त-घुमंतूओंके बारे में, उनकी बुरी हालात के बारे में सुनने का अवसर मिला।

उन्होंने संसदमें अभ्यासपूर्ण विधेयक पेश किया। हरिभाऊने कहा भारतके संविधानमें जो अनुसूचित जाती और अनुसूचित जमाती की सूची है, उसी तरह विमुक्त जमाती और घुमंतू जमाती की भी सूची होनी चाहिए। ये काम एक्झीक्यूटिव्ह ऑर्डर (कार्यालयीन अधिकारी आदेश) द्वारा किया जा सकता है। जब मंडल आयोग (की सिफारिस) लागू हुआ तब संसदकी अनुमती नहीं ली थी, मंडल आयोग एक्झीक्यूटिव्ह ऑर्डरद्वारा लागू की थी। सरकार यही बात रेणके आयोग के बारे में भी कर सकती हैं। सरकार को जो योजना बनानी है, वो बनती रहे। हरिभाऊने कहा की उनके विचारसे यह निर्णय आनेवाले चुनावके पहले लिया तो अच्छा होगा।

इस समय हरिभाऊ अपनी बात बहुत गंभीरतासे बोल रहे थे। चुनाव नजदीक आये थे। विमुक्त-घुमंतू समाजकी स्थिती पर पहलीबार लोकसभा में चर्चा हो रही थी। रेणके आयोगने ७६ सिफारिसे की थी। उन सिफारिसोंको १३ अलग अलग गुटोंमें वर्गीकृत किया गया था। रेणके आयोगके समर्थकोंकी माँग थी, की इन वर्गों के लिए रेशनकार्ड, जमीन, शिक्षा और सुरक्षा इन सबके बारेमें उपाय करने चाहिए। हरिभाऊ का कहना है "विमुक्त-घुमंतू समाज सच्चे अर्थ में इस देश के मूल संस्कृतीके प्रचारक और प्रसारक है। उसने भारतीय संस्कृती के लिए बहुत बडा काम किया किन्तु अभी वे अपनी जिंदगी बहुत कठिनाई से जी रहे है। उन्हें गाँवके बाहर रहना पडता है, वे वंचित है, उनके तरफ किसीका ध्यान नही है। उनके विकास के लिए कुछ करना चाहिए। विमुक्त-घुमंतू समाज गाँवके बाहर रहता है। सदा घूमता रहता है। तो सवाल यह पैदा होता है की, उनके लिए कुछ करें तो कैसे करें"?

इस पर तत्कालीन सामाजिक न्यायमंत्री श्रीमती मीरा कुमार ने कहा "हमे सबको मेनस्ट्रीम मे लाना हैं। हम गाव के बाहर किसी को नही रहने देंगे। सब गाव के अंदर रहेंगे और दुसरी बात

यह की, उनको रोजगार दिजीए, उनको एसेट जनरेशन, वोकेशनल ट्रेनिंग और उनकी सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए की जितनी ये विमुक्त जातीयाँ है, खानाबदोष और अर्ध्य खानाबदोष जो जातीयाँ है। पीढी दर पीढी से हम भले ही अपनी परिभाषा मे उनको अनपढ कह दे, लेकीन पिढी दर पिढी से वे बहुश्रुत है; और इतना ज्ञान अर्जन किया है, नेटीव नॉलेज, कृषी को लेकर संगीत नृत्य को लेकर और भी बहुत कुछ है। हम उन सबको खोना नही चाहते है। उनके पास बहुत ज्ञान है। यदि हम एकदम उनको डिसमिस कर दे की, वह कुछ नही, तो यह तो वही धारणा हो जाएगी, जैसे अंग्रेजो ने कर दिया था। यह बहुत बडी पूंजी है और इस पर शोध कार्य होना चाहिए। उनकी संस्कृती को हमे संजोकर रखना है।

हरिभाऊ जनताको रेणके आयोग के विषयमें इकठ्ठा रहनेका बडे उत्साहसे और दिल लगाकर अनुरोध कर रहे थे। उसी तरह और दिल लगाकर वे लोकसभामें इस बारे में बात करते थे। रेणके आयोग के संदर्भ में उन्होंने एक विधेयक रखा था और जब तक उन्हें आश्वासन नहीं मिला, तब तक वह विधेयक उन्होंने वापस नहीं लिया क्यूंकी उन्हें लग रहा था की अगला चुनाव वे जीतेंगे या नहीं उसका पता उन्हें कमसे कम उस समय तो नहीं था। ऐसी स्थिती में वे चाहते थे की अपने कार्यकाल में रेणके आयोग लागू हो। ऐसा निवेदन उन्होंने संसद में भी किया था।

रेणके आयोग यह विषय १५ करोड आबादीके समाज का जिंदगी या मौत का सवाल था, इसलिए वह चर्चेमें रहनेवाला ही था। इसमें कोई शक नहीं।

रेणके आयोगके समर्थनके लिए अनेक नेता, कार्यकर्ता संघटित होकर हरिभाऊ के नेतृत्वमें आंदोलन कर रहे थे।

हर एक कार्यकर्ता, नेता, संस्था, संघटना अपने स्तरपर जनजागृती कर रहे थे। इस दरमियां रेणके आयोग के बारेमें मेरे (लेखक एकनाथ पवार) कुछ लेख प्रसिद्ध हुए। रेणके आयोगके समर्थन में सब लोग जी लगाकर कोशिश कर रहे थे। किन्तु लक्ष्मण माने जैसे साहित्यकार ने आयोगको विरोध जताया। ये बात असमर्थनीय है। हरिभाऊने लक्ष्मण मानेपर ("उपरा" किताब के लेखक) पर कडी आलोचना की और मानेके प्रयासोंको विफल किया। लक्ष्मण माने के विरोध की रामजी आडे, अमर राठोड जैसे कार्यकर्ताओंने भी कडी आलोचना की और माने के खिलाफ कारवाई की माँग की। मानेके खिलाफ यवतमाळ, अकोला, वाशिम, नागपूर जिले में बहुत प्रतिवाद दर्ज किये गये। कुछ जगहपर तहसीलदार और जिलाधिकारीको निवेदन दिये गये।

इस विषय में विचारों का बहुत आदान-प्रदान हुआ। रेणके आयोग का विरोध करने का अर्थ करोडो विमुक्त-घुमंतूओंका विरोध करना था। हरिभाऊ बहुत प्रयास कर रहे थे की समाजके सबसे नीचे स्तरपर आयोग के बारे में जानकारी हो। हर दिन नई जानकारी, चुनौतीयाँ सामने आ रही थी।

हरिभाऊ खुदके बजाय समाजको ज्यादा बडप्पन दे रहे थे। इस लिए वे रेणके आयोग के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। इस दरमियाँ राजनैतिक उथलपुथल हुई थी। मनमोहन सिंग सरकार संकटमें आया था। विरोधी दलोंने अविश्वास प्रस्ताव पेश किया था। हर दल अपनी स्थिती मजबूत करनेका प्रयास कर रहा था।

हरिभाऊ इस राजनैतिक उथल पुथलमें संभ्रमित हुए। वे अचंभे में पडे थे, कौनसा निर्णय ले, कैसा ले। चौदहवे लोकसभा में डॉ. मनमोहन सिंग सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश करने का दिन आया, दिल्लीकी राजनैतिक स्थिती बहुत गर्म हुई थी। सत्ताधारी दल और विरोधी दल, दोनों अपनी ओरसे तैयार थे। हरिभाऊ के सामने बडा पेचीदा सवाल पैदा हुआ। किसके पक्षमें मतदान करें? वे अपने राजकीय गुरु को पूछने लगे। क्या करे? वह निर्णय नहीं ले पा रहे थे।

अंतमें उन्होंने अपनी भूमिका स्पष्ट की "मुझे आशा है की, सत्तारुढ काँग्रेस सरकार रेणके आयोग लागू करेगी इसलिए मैं काँग्रेसके पक्षमें मतदान कर रहा हूँ।" उन्होंने भाजपाके खिलाफ मतदान किया इसलिए खासकर यवतमाळ मतदाता संघमें भाजपा कार्यकर्ता उनकी कडी आलोचना कर रहे थे। सब जगह उल्टी सुल्टी चर्चा हो रही थी। इन सबका हरिभाऊने संयम और सामर्थ्यसे सामना किया। विरोधियोंका विरोध खतम करके समाजकारण सही तरीकेसे करने के लिए समाजकार्य सही तरीकेसे करने के लिए सब बेईज्जती, दुख सह कर फिरसे जुटे।

इस राजनैतिक तूफानके बाद लालू प्रसाद यादव कुछ समारोह के लिए यवतमाळ आये थे। उस समय वह बोले "अभी देखा, हरिभाऊ राठोडजी मनमोहन सिंग सरकार बचाने के लिए शहीद हो गये।" उस समय ऐसी चर्चा सुनने में आ रही थी की, सिर्फ काँग्रेस ही रेणके आयोग लागू कर सकती है, इस विचार पर हरिभाऊने अविश्वास प्रस्ताव के समय बडे साहस से यह निर्णय लिया होगा। ऐसा भी सुनने में आया की धीरे धीरे राजनैतिक स्थिती बदल रही थी। ऐसी स्थिती में अपने समाज की माँग नजरअंदाज न हो जाए, या पीछे न पडें इसलिए हरिभाऊने बडे साहस से यह निर्णय लिया होगा।

रेणके आयोगको समर्थन जुटानेके के लिए विमुक्त-घुमंतू जनजागृती अभियान को दि.०५.१२.२००८ को शुरुआत की। ५ दिसंबर यह दिन विमुक्त-घुमंतू समाजके आधुनिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण दिन है। क्यूंकी इसी दिन महाराष्ट्र के विकास के अग्रदूत और हरित क्रांतीके प्रणेते वसंतराव नाईक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बन गये।

यह दिन विमुक्त-घुमंतू संकल्प दिन के स्वरुप में मनाया जाता है। इस दिन से हरिभाऊने रेणके आयोग के बारे में जनजागृती करने के लिए आंदोलन शुरु किया। इसके पीछे राजनैतिक शक्तिप्रदर्शन करने की इच्छा नहीं थी। समाज जागृत हो, लोगोंको रेणके आयोग कितना महत्वपूर्ण है यह समझे इस भावनासे हरिभाऊने ५ दिसंबर को नागपूरसे अभियान शुरु किया।

नागपूरमें अमरावती रोडपर अनुसया सभाग्रहमें समारोह का आयोजन किया था। मैं और मेरे सहकारी मित्र समारोह में पहुँचे तब हरिभाऊ बोल रहे थे। समारोह समाप्त होने के बाद उन्हें मिलने के लिए रात में रविभवन पहँचे। कुछ बाते होने के बाद मैं लक्ष्माण गायकवाड ("उचल्या" के लेखक) और मा. बाळकृष्ण रेणके (रेणके आयोग के अध्यक्ष) इनको मिला।

फोटो

मेरा "वेदना" काव्यसंग्रह २५ दिसंबर को प्रकाशित होने वाला था। उसके बारे में मैंने गायकवाडजी से अभिप्राय लिया। रात के बारा बज रहे थे।

मैंने रेणके आयोग के समर्थन के लिए हर एक समाचार पत्र में लिखा था, वह बहुत लोगोंने पढा और मुझे अच्छी प्रतिक्रिया दी। वही रेणकेसाहब और गायकवाडसाहब मुझसे बात कर रहे थे। मुझे लगा की, वे अखिल विमुक्त-घुमंतू समाजके भविष्य के बारे में चिंतन कर रहे होंगे। मैंने उन दोनों के पैर छुए उनसे उनके कार्य की प्रेरणा और आंदोलन की सामाजिक बद्धता लेकर रविभवनके बाहर आया।

अभियान ५ जनवरी २००९ तक शुरू था। अभियान की सफलताकी पूरी जिम्मेदारी हरिभाऊ पर थी इसलिए उन्होंने अभियानपर ध्यान केंद्रीत किया। पूरे महाराष्ट्र में अभियान करने पर अंत में मुंबई के शिवाजी पार्क पर अभियान संपन्न हुआ। इस समय रेणके आयोग के समर्थन में हर प्रांतसे विमुक्त-घुमंतू समाज के हजारो लोग शिवाजी पार्क पर आये थे। उस जनसागर में हरिभाऊ एक दीपस्तंभ जैसे डंटके खडे थे।

फोटो

अभियान संपन्न समारोह और विमुक्त-घुमंतू लोगोंका महामेला इस कार्यक्रम में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री. अशोकराव चव्हाण, काँग्रेस प्रदेशाध्यक्ष मा. माणिकराव ठाकरे, मा. सांसद रामदास आठवले इनके साथ अन्य मान्यवर नेतागण उपस्थित थे। रेणके आयोगके समर्थन के लिए हरिभाऊ के प्रयत्न अतुलनीय है।

विमुक्त-घुमंतू समाज पहाडोंमें, जंगलोंमें बिखर गया है, उन्हें एक समय का खाना मिलना मुश्किल है, तब उन्हें रेणके आयोग, तीसरी सूची कैसे ध्यान आयेगी? किन्तु इन सब सवालोंका जबाब हरिभाऊ राठोड हैं।

हरिभाऊने सब सवालोंके जबाब के लिए दिन रात एक करके अभियान चलाके सब लोगों को रेणके आयोग का महत्व समझाया। रेणके आयोग की सिफारिसें लागू करने के लिए हरिभाऊ विमुक्त-घुमंतूओंका समर्थन करते रहें इससे यह दिखाई देता है की, वे लोगोंको कितने अपने और प्यारे लगते है और समाजके प्रति वे कितने सजग और सतर्क है।

समाज की पुरानी स्थिती में बदलाव हो, सुधार हो, विमुक्त-घुमंतू लोग आत्मसम्मानसे जिये इसलिए हरिभाऊने समाजिक आंदोलन छेडा, उसमें हरिभाऊकी भूमिका बेमिसाल थी।

फोटो

हरिभाऊने संघर्ष का रास्ता चुनके, अपने ध्येय को सामने रखके सामाजिक बद्धतासे अतूट नाता रखा और जहाँ कुछ भी नहीं था वहाँ बहुत कुछ निर्माण किया। वे एक तूफान की तरह लडते आये। उनका जन्म बंजारा समाजमें हुआ है किन्तु उन्होंने ये धनगर है, वह डोंबारी है, वह पाथरवट है ऐसा कभी माना नहीं।

उनका स्वभाव सब लोगोंको साथ लेने का है। वे विमुक्त-घुमंतू समाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहे है। जातीयतावाद का जहर उनके मन में कभी नहीं आया। आजके सूचना-संप्रेरण और आधुनिक तंत्रज्ञान की दुनियामें हर एक आदमी अपनीही धुन में रहता है। उसे समाज से कोई लेना देना नहीं रहता। आजकल ऐसी मनोवृत्ती न होनेवाले लोग बहुत दुर्लभ है।

बंजारा समाज एक वैशिष्ट्यपूर्ण और ऐतिहासिक समाज है किन्तु आजके हालात उनके खिलाफ हैं। कारवाँ, पाडा, पाल, टोला इन बस्तियोंमे अभी भी प्रगती अपेक्षा के अनुसार नहीं है। घुमंतूओंके बच्चे अभी भी शिक्षासे कोसों दूर है। उन्हें हालातकी मजबूरीसे मजदूर बनना पडता है। उन्हें सीखनेमें रुची नहीं है। उन्हें पेट भरने का और सामाजिक सुरक्षाका सवाल नित्य सताता है। ऐसी बूरी स्थितीमें जीनेवाले समाजके स्थितीका हरिभाऊने अभ्यास किया और समाजका नया अस्तित्व निर्माण करने के लिए वे कार्यरत हुए। उन्होंने परिवर्तन का कार्य करके समाजमें स्वाभीमानका बीज बोया।

उनको समाजकार्य के साथ-साथ उनकी राजनैतिक चतुराई भी महत्वपूर्ण है, वह अंधेरेमें चमकने वाले जुगनू जैसी है और फिनिक्स पंछी जैसी है। वे छोटेसे गाँवके छोटे काफिलेसे संसदतक पहुँचे। ये उनके सामाजिक कार्यसेही हो सका। उनकी सहनशीलता और ध्येयके प्रति निष्ठा और एकाग्रता सराहनीय है।

हरिभाऊ का बर्ताव जैसा आम आदमी के हैसियत से था, वैसा ही सांसदकी हैसियतसे था। उनमें अहंभाव बिल्कुल नहीं है, वे संकटका सामना बहुत हिम्मतसे और चतुराईसे करते हैं क्यूंकी

विमुक्त-घुमंतू लोगोंके उपेक्षित बस्तीमें बचपनसेही उन्हे निर्भयता की सीख मिली है, बचपनसे ही उनका स्वभाव वैसा हुआ है।

जनताने अपना लोकाभिमुख प्रतिनिधी इस हैसियतसे उन्हें चुनाव जिताकर संसदमें भेजा, उस जनतासे उन्होंने कभी भी विश्वासघात नहीं किया। सांसद अलग अलग स्वरुपके होते हैं। कुछ संसदके कार्यमें बिना कोई कारण बाधा डालते है, कुछ मौनी बाबा रहते हैं, कुछ सच्चे दिलसे लोगोंकी समस्याएं संसद के सामने रखते हैं। यदि जनतंत्र मजबूत करना है, तो लोकप्रतिनिधीको सभागृहमें आचारसंहिता के अनुसार बर्ताव करना चाहिए। लोकप्रतिनिधी ऐसा हो की जो जनता के हित के लिए प्रयत्न करे, दुर्बल लोगोंको समाजकी मुख्य धारामें लानेवाला, प्रगत समाज को साथ साथ लानेवाला, उनके लिए प्रयास करनेवाला होना चाहिए यह समाजकी आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्तरपर राजीव गांधी, ज्योती बसू, एन. टी. रामाराव, और महाराष्ट्र के स्तरपर प्रमोद महाजन, यशवंतराव चव्हाण, वसंतराव नाईक जैसे कर्तृत्ववान संवेदनशील स्वभावके लोक प्रतिनिधी समाजके निम्नतम स्तरतक पहुँचते हैं। उनके निधन के बाद भी उनकी कमी महसूस होती है। इतनाही नही, उनका कार्य सदा नयी उर्जा देता है और जिंदगी जीने का मक्सद देता है।

हरिभाऊने लोकसभामें बाधा न डालते हुए अपनी बातें शांतीसे बताई। चाहे वो रेणके आयोगकी बात हो या खुदके मतदाता संघ की हो, हरिभाऊ कर्तृत्ववान और कर्तव्यनिष्ठ थे। वे जब सांसद थे तब उनके कामका परिचय इस प्रकार है।

संदर्भ पी.पी.आर.लेजिस्लेटिव्ह रिसर्च, नई दिल्ली

हरिभाऊ राठोड

०५.०१.२००९ को इस्तीफा

मतदाता संघ : यवतमाळ

दल : भारतीय जनता पार्टी

बहसमें सहभाग : ९० बार

कानूनके बारेमें बहस : २४ बार

बिगर कानून के बारेमें बहस : ६६ बार

स्थानिक मामले के बारे में बहस : १७ बार

सादर किय हुए विधेयक : ०२

पूछे हुए सवाल : ३५३

उपस्थिती ३२२ में से २१७ : ६७%

कानून के बारे में और अन्य बारे में बहस में सहभाग लेनेके मामले में हरिभाऊने अच्छा सहभाग लिया। अपनी युवावस्थासे ही हरिभाऊ समाजकी प्रगती और विकासके ध्येयसे प्रेरित हुए थे। उन्होंने बहुत कष्ट उठाके नौकरी पायी थी किन्तु वह उन्होंने समाज कार्य के लिए छोड दी। इसका आगे का कदम यह था की उन्होंने सब लोगोंसे बात करके उनका भरोसा जीतकर विधीवत काँग्रेस दल में प्रवेश किया।

फोटो

मंचपर मा. जनार्दन द्विवेदी, मा. जयंती नटराजन, मा. मुकूल वासनिक, मा. ऑस्कर फर्नांडिस और हरिभाऊ राठोड।

भाजपा छोडके काँग्रेसमें प्रवेश करने के बाद उनके सामने बडी समस्या थी की नये काँग्रेसी कार्यकर्ताओंसे तालमेल बिठाए। किन्तु उन्होंने नये और पुराने कार्यकर्ताओंका समन्वय किया और अपने "युनिट प्लॅन" फॅक्टरकी वजहसे काँग्रेस में अपना स्थान निर्माण किया।

१५ वी लोकसभा चुनाव का ऐलान हुआ। हर एक अपने कामके तैयारीमें लगा। परिसिमन आयोग के सिफारिसोंके अनुसार निर्वाचन क्षेत्रकी पुनर्रचना होने की वजहसे बहुत लोक

सचिंत हो गये थे। हरिभाऊका यवतमाळ मतदाता संघ वाशिम-यवतमाळ मतदाता संघ हो गया। इस मतदाता संघमें बंजारा समाजकी तादाद सबसे ज्यादा है। उसीके साथ कुणबी, आदिवासी और मुस्लिमोंकी तादाद भी बडी है।

काँग्रेस की उम्मीदवारी के लिए हरिभाऊ राठोड और उत्तमराव पाटील के बीच स्पर्धा थी। किन्तु समाज की राय और अविश्वास प्रस्तावके समय सरकारको बचाने के लिए की हुई मदद के बलबूते पर हरिभाऊको काँग्रेसकी उम्मीदवारी मिली। हरिभाऊ को उम्मीदवारी मिलने में विलासराव देशमुख, अहमद पटेल और माणिकराव ठाकरे इन्होंने उनकी मदद की।

हरिभाऊके खिलाफ काँग्रेस दलमें से उनके विरोधक सक्रीय हुए थे। हरिभाऊ पूरी ताकद लगाके अपने समाजकार्य के लिए और विकासके मुद्देपर जनता के सामने गये थे। हरिभाऊ के प्रचार के लिए मा. सोनिया गांधी, शिवराज पाटील, अशोकराव चव्हाण जैसे दिग्गज यवतमाळ आये थे। दिनरात प्रचारके भागदौड और धूम में हरिभाऊ की तबियत बिगड गयी, फिर भी वे और उनके कार्यकर्ता बहुत मेहनत कर रहे थे।

भविष्यमें क्या होगा इसका अंदाजा लगाना जितना कठिन है उतनाही कठिन है राजनीती में क्या होगा। राजनीतीके बदलाव के लिए कोई कारण होना ही चाहिए ऐसा नही है, इसलिए उसे राजनीती कहते है। शुरुमें हरिभाऊ वोटोंके गिनतीमें आगे थे लेकिन अंतमें पीछे पडे और शिवसेना के उम्मीदवार भावना गवळी-सुर्वे चुनकर आयी।

हरिभाऊ हारने की वार्ता काफिलेमें फैलनेसे सब लोग शोकाकूल हो गये क्यूँ की समाजके लिए लडनेवाले वे एकमेव राष्ट्रीय नेता थे। समाज निराश हो गया। हरिभाऊ हार गये किन्तु काँग्रेस जीत गयी और केंद्रमें काँग्रेस की सरकार बन गयी। दुर्भाग्यवश हरिभाऊको सरकारसे वंचित रहना पडा। जब वे भाजपाके सांसद थे तब केंद्रमें भाजपा की सरकार नहीं थी। जब वे चुनाव हार गये तब केंद्रमें काँग्रेसने सत्ता हासिल की।

युद्ध, राजनीती और प्यार इसमें दुख, हानी, अपमान तक झेलना पडता है। हरिभाऊ के समाजकी वोट बँक थी और काँग्रेसकी आम आदमी संकल्पना थी, फिरभी अंतर्गत झगडेके और विरोधके कारण हरिभाऊ हारे।

हार का दुख भुलाकर हरिभाऊ फिर समाजकार्य में सक्रीय हो गये। मूलतः वे समाजके प्रेमी और समाजकारणी थे इसलिए समाजका द्वेष करना उनके लिए नामुमकिन था। हरिभाऊ समाजकारण के साथ काँग्रेसदल के संगठन कार्य में दाखिल हो गये। दलके एक निष्ठावंत सिपाही की हैसियतसे उन्होंने अपनी राजनीती चालू रखी। उनके मनमें विमुक्त-घुमंतू समाज के दयनीय हालात पहले से ही थे। उनके मनकी आग शांत नही हुई थी।

रेणके आयोग की सिफारिसे लागू करने के लिए उनकी वरिष्ठ नेताओंसे बातचीत चल रही थी। अब उनका काँग्रेस में से नयापन कम होने लगा। उन्होंने दलको मजबूत करने का काम दल कार्यकर्ता की हैसियतसे शुरु किया। उस समय राहुल बिग्रेड युवा नेताओंपर ज्यादा जोर दे रही थी। काँग्रेसने युवाओंको आकृष्ट करने के लिए अनेक कार्यक्रमोंका आयोजन किया। नागपूर में आयोजित किये हुए युवक मार्गदर्शन कार्यक्रम में हरिभाऊ शरीक थे।

कार्यक्रम के दौरान काँग्रेस कमिटीके महासचिव, भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री ऑस्कर फर्नांडिस इन्होंने कहा की "युवक भारत का भविष्य है और वे देशका नेतृत्व करेंगे।" यह कार्यक्रम हॉटेल एअरपोर्ट सेंटर पॉईंट यहाँ आयोजित किया था। इस कार्यक्रम में ना. फर्नांडिस, हरिभाऊ राठोड, जयप्रकाश गुप्ता, आमदार निलेश पारवेकर आदि उपस्थित थे।

काम बढ रहा था और उसका बूरा असर उनकी तबीयत पर हो रहा था। किन्तु उन्हें यह बीमारीयाँ अपने ध्येयके सामने मामूली लग रही थी। क्रांतीदल की संघटना और प्रसार महाराष्ट्र के बाहर करने की जिम्मेदारी भी उनपर थी। राष्ट्रीय स्तरपर कार्य करनेवाला यह संघटन ज्यादा समावेशक हो इसलिए वे प्रयत्नशील रहें। अब हरिभाऊ बंजारा समाज के अलावा अन्य विमुक्त-घुमंतू समाजके लोगोंका कार्य करने वाले इस हैसियत से परिचित होने लगे। राज्य कौनसा भी हो,

समाज एक ही था इस भावनासे उन्होंने विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए आवाज उठायी। किन्तु उन्होंने काफिले को नजरअंदाज नहीं किया।

वे अपने भाषणके दौरान लोगोंको आवाहन करते थे "काफिला, पाल, टोला में रहने वाले मेरे विमुक्त बंधुओ, स्वाभिमान से जियो, अपने बच्चोंको अच्छी शिक्षा दो, उन्हें खुदके पैरोंपर खडा करना सिखाओ। अपने अधिकार के लिए एक हो जाओ और लडो। आपस में झगडा करके बिना वजह खुदकी ताकद कम मत करो।"

हरिभाऊ लोगोंको अपने पास खीचनें का बहुत प्रयास करते थे। उनका विचार था, कार्यकर्ताओंसे सन्मानपूर्वक व्यवहार करना यह उनका कर्तव्य है। ऐसे लोग समाज में अच्छी तसवीर पाकर प्रसिद्ध होते है। उन्होंने समाजकारण के साथ राजनीतीमें भी काम किया है इसलिए अनेक महत्वपूर्ण नेताओंके साथ उनके अच्छे रिश्ते रहे है।

एक समारोहमें श्री. वाय. एस. आर. रेड्डी और हरिभाऊ राठोड आपसमें बातचीत करते वक्त भी आंध्र की विमुक्त-घुमंतू समाजकी समस्याओंपर बात करना नहीं भूले।

फोटो

आंध्रके बंजारा बांधव बडी श्रद्धासे पोहरादेवी आते हैं। इसके अलावा बंजारा समाजके आद्यप्रवर्तक जगत्गुरु संतश्रेष्ठ सेवालाल महाराज इनकी जन्मभूमी आंध्रप्रदेश है इसलिए हरिभाऊ मानते है की आंध्र प्रदेशसे अच्छे रिश्ते रखना और उनके प्रति आदरभाव रखना अपना कर्तव्य है।

समय किसी का भी नही रहता और किसी को भी नहीं छोडता। आंध्रके जनप्रिय मुख्यमंत्री श्री. वाय. एस. आर. रेड्डी अचानक गुजर गये। हरिभाऊ और उनके बीचमे वह आखरी मुलाकात थी। रेड्डीजीका निधन हवाई जहाज दुर्घटनामें हो गया। हरिभाऊ को इसका बहुत दुख हुआ। वो रेड्डीजीकी यादें बताते हैं।

१५ वी लोकसभाके चुनाव खतम हो गये। सरकार बन गयी। नयी-नयी समस्याएं सामने आने लगी। पुरानी समस्याएं वैसी ही पडी रही। विमुक्त-घुमंतू समाज राष्ट्रीय प्रतिनिधी हरिभाऊ अब संसद में नही थे, तो उनकी समस्याएं संसदमें कौन उठाएगा? रेणके आयोग के लिए दिलसे बोलनेवाला कोई नही हैं।

संविधान की निर्मिती होते वक्त इस विमुक्त और घुमंतू समाज का एक भी प्रतिनिधी नही था, इसलिए उन्हें न्यायसे वंचित होना पडा। उन्हें एक गुनाह करने वाली जनजातीयाँ इस हैसियतसे जीना पडा। देशको आजादी मिलने के बाद कई साल गुजर गये किन्तु आजादी अभी भी विमुक्त-घुमंतू लोगोंके काफिले, वाडा, टोला, पाल तक पहुँची नही। समाजको न्याय न मिलनेका एक कारण होता है की समाज का एक भी प्रतिनिधी न रहना। यदि समाज को अपने अधिकार प्राप्त करने हैं तो समाजके ज्यादासे ज्यादा प्रतिनिधी विधानसभा-लोकसभा-जिला परिषदमें चुनाकर भेजना चाहिए क्यूंकी आदमी अपने जख्म का दर्द सिर्फ खुद ही जानता है। आज जरुरत है की, हर एक काफिला, पाल, टोला, पाडा, अपने अधिकारके लिए एक हो और व्यापक आंदोलन शुरु करें। खुदके स्वार्थ के लिए एक दूसरे की टांग मत खीचो। जो प्रगती कर रहा है उसको आगे जाने दो, प्रगती करने दो।

यदि हर एक ने समाजके हित की तरफ ध्यान दिया तो अपना समाज भविष्यमें एक प्रभावशाली समाज बनेगा इसमें कोई आशंका नही है। मैं (हरिभाऊ) समाज को संगठीत करने की कोशिश कर रहा हूँ किन्तु कुछ अन्य लोग समाज का विभाजन करने में लगे हुए है। किन्तु अभी अपने भविष्यको ध्यान में रखते हुए समाजको एक साथ रहना चाहिए। कल तक समाज एक टोली जैसा, काफिले जैसे रहता था। नेता के बिना का काफिला कुछ भी कदम नहीं उठाता। आजभी गोरपंचायत का आदर करना चाहिए, नेता की सलाह लेनी चाहिए क्यूंकी समाजको बचाना है, इसलिए समाजको संगठित करने के लिए यह आवश्यक है।

लेकीन आज अलगही बात दिख रही है। समाज बडा है किन्तु चुनके आनेवाले प्रतिनिधी सिर्फ एक या दो।

हरिभाऊ अपने मन के ख्याल प्रकट कर रहे थे।

" हर कोई एक दूसरे पर शक कर रहा है। गोरमाटी लोग ही गोरमाटी लोगोंकी टांग खींच रहे है।" समाजके बारे में हरिभाऊ बहुत आस्थासे बात कर रहे थे उन्होंने अपनी भावना व्यक्त की "अब समाज का क्या होगा? " उन्होंने अपना पसीना पोंछ लिया और कुछ समयके लिए शांत रहे।

हरिभाऊका सामाजिक योगदान सराहनीय और महत्वपूर्ण है, उन्होंने समाजके लिये जो कष्ट उठाए वे भी सराहनीय है। कुछ लोगोंकी सोच रहती है "चुनाव समाप्त हुए, अब सब समाप्त हुआ" लेकिन हरिभाऊ उन लोगों जैसे सोचते नहीं थे। रेणके आयोगकी सिफारिसें अभी तक उन्हें बेचैन करती थी। उन्होंने ठान ली की जब तक सरकार अपनी माँगे पूरी नहीं करती, तब तक आंदोलन जारी रखेंगे।

पंद्रह राज्योंमें ३१३ विमुक्त जातीयाँ है और घुमंतू अर्ध घुमंतू जातीयाँ बहुत है। वे अलग अलग राज्यामें बिखरी है। बंजारा, अहेरिया, भिल, बावरीया, मल्लाह, धनगर, पारधी, गोसावी, कैकडी, छारा, बजानिया, तुरी, गडलिया, चारण, बरार, बऊरिया, बलदिया, कंजर, पासिया, कहार, जोगी, सपेरा, मदारी, वृजवासी, बेलदार, गाडीलोहार, कापडिया, ओतारी, रामोशी, तीरमल, बिजोरीया, काठोडी, वाघरी, गंगापुत्र, नाथ, गारो, सांसी, लोध, कनमैलिया, पाथरवट, कोल्हाटी, भैराडी ऐसी ४०० जातीयाँ विमुक्त-घुमंतू समाज में है। १४-१५ करोड आबादी के लिए रेणके आयोग की सिफारिसें लागू होनी ही चाहिए ये मनमें ठानकर हरिभाऊने अपना आंदोलन चुनावके बाद भी जारी रखा। उन्होंने इसके संदर्भ में दि.०५.०१.२०१० को जंतरमंतर, दिल्ली में मोर्चा निकाला।

फोटो

४ जनवरी को हरिभाऊने सूचना दि की - इस समय मा. दिग्विजय सिंग, मा. ऑस्कर

फर्नांडिस, मा. डॉ. भालचंद्र मुणगेकर, मा. बाळकृष्ण रेणके, मार्गदर्शन करनेवाले है। जंतरमंतर में जो मोर्चा निकाला गया उसमें ये बात जाहिर हो गयी की समाजकी हालत सुधारनी चाहिए और उसके लिए आरक्षण चाहिए। आरक्षण आंदोलन में एकता रहनी चाहिए। इस आंदोलन में दिल्ली, कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और आंध्र प्रदेशसे बडी तादाद में विमुक्त-घुमंतू समाज उपस्थित था। इस आंदोलन में जागीर सिंग बारतिया, (अखिल भारतीय गोर राजपूत समाज), इंद्रसिंग बालजोत (गोर राजपूत सभा) क्रिस्नदिप सिंग, डॉ. दर्शन सिंग बालजोत, हरप्रीत सिंग आदी गोर राजपूत सभाके अधिकारी और अन्य नेता शामिल थे। उन्होंने हरिभाऊके नेतृत्व में रॅलीमें सहभाग लिया और समाजसंघ और निष्ठा का परिचय दिया। उनका उद्देश्य था केंद्र सरकार रेणके आयोगके सिफारिसोंपर अंमल करे।

समय बदला है, नये नये तंत्रज्ञान खोजे जा रहे हैं। प्रगत समाज विश्वभर फैला है। बडी बडी बिल्डींगे हो रही है। मंदिरोंको करोडो रुपये दिये जा रहे है। जिनके पास दो पहियोंकी गाडी थी, वे अब स्कॉर्पियो, वैगनार जैसी बडी गाडीयाँ लेकर घूम रहे है।

किन्तु विमुक्त-घुमंतू समाज आज भी विस्थापितोंका जीना जी रहे है। वे बहुत बुरे हाल में है किन्तु इस समाजके लिए किसी को भी कुछ भी नही लगता। बडे बडे उद्योगपती, अमीर लोग तिरुपती, शेगांव, शिर्डी जैसे देवस्थानको करोडों रुपये और सोना देते है, लेकिन विमुक्त-घुमंतू समाज खाना, कपडा और आवास जैसे मूलभूत आवश्यकताओंसे वंचित हैं। उसकी जिंदगी मृतवत है, उनकी वेदना कोई नही जानता। लोगोंको उनकी कला, कौशल्य, संस्कृती मालूम है, वह भी सिर्फ एक फॅशन शो के हैसियत से, बस, इतनाही। पुरोगामी महाराष्ट्र राज्य में विमुक्त-घुमंतू समाजकी स्थिती ठीक है किन्तु समाजकी राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक प्रगती समयके हिसाबसे बहुत ही कम है।

हरिभाऊ को ये बात बहुत बुरी लगती है। हरिभाऊ समाजकी स्थिती देखकर स्वस्थ नहीं बैठ सकते। उनकी एकही इच्छा है, मरते दम तक समाजके लिए लडेंगे।

हरिभाऊ का कहना है, "समाज संगठित होना चाहिए, समाजके शिक्षित लोग, नौकरी करने वाले लोग इनको चाहिए की वे समाजके तरफ ध्यान दें और उसमें परिवर्तन करन के लिए कुछ ना कुछ प्रयास करें। समाज के हर हिस्सेपर समाज का ऋण है। उससे मुक्ती पाने के लिए समाजकी जितनी हो सके उतनी सेवा करना चाहिए।"

समाजके लिए प्रयत्न करते वक्त वे अपने परिवार को ज्यादा वक्त देने के बजाय समाजको ही एक परिवार मानके उनके लिए प्रयास करना यही हरिभाऊ का नित्यक्रम हो गया। कार्यकर्ताओंको मिलना, पक्षके और ध्येयके अनुसार चलना और अपने व्यासंग के लिए समय देना यही हरिभाऊ का दिनक्रम था। किन्तु उनके मन में अभी भी रेणके आयोग था इसलिए उन्होंने अभी भी प्रयास जारी रखें।

विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए रेणके आयोगने महत्वपूर्ण सिफारिसें किये थे। दिन बीते जा रहे थे। आयोग की तरफ सरकार ध्यान नही दे रही थी इसलिए "हरिभाऊ ने विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए कुछ कदम उठाए जाए और रेणके आयोग की सिफारिसों पर अंमल किया जाए" ऐसी सोनिया गांधीसे बिनती की। उनके साथ महाराष्ट्रके सामाजिक न्याय मंत्री श्री. शिवाजीराव मोघे तथा रामजी आडे थे।

फोटो

हरिभाऊ ने मुझे फोनपर ये आनंदवार्ता सुनाई "श्रीमती सोनिया गांधीजी ने मुझसे मुलाकात की"। उन्हें बहुत आनंद हुआ। जिस भावनाओंसे हरिभाऊने रेणके आयोग के बारे में सोनियाजी से बात की उसी गंभीरतासे सोनियाजी ने इन माँगो की तरफ ध्यान देना चाहिए।

हरिभाऊ अपनी आशापर डटें रहे। एक ना एक दिन शासन हमारी माँगे पूरी करेगा। रेणके आयोग ने जो सिफारिसें की थी, उनके प्रति विमुक्त जातीयों में जागृती निर्माण करने के लिए कई संगठन आगे आये। खुद मा. बाळकृष्ण रेणके अपनी "लोकधारा" संगठन के जरिये समाज

जागृतीके लिए सभाओंका आयोजन करने लगे। हरिभाऊ के साथ हम बातें कर रहे थे। उस समय हरिभाऊ बोले, विमुक्त-घुमंतू समाज संख्यामें बहुत बडा है, किन्तु संघटन और स्वावलंबन होने की वजहसे औरोंकी तुलना में एकदम छोटा है। बहुत जादा जनजातीयों को आज भी आवास नहीं या जीनेका कोई साधन नहीं इसलिए बहुत बरसोंसे वह स्वतंत्र जनगणना की मांग कर रहे हैं।

भोली और मासूम जनता की समस्यापर खुद की रोटी पकानेवाले बहुत लोग है, किन्तु ऐसी जनताको उनका हक दिलाने वाले बहुत ही कम लोग हैं। समाजके बहुत लोग ऐसे है की, उन्होंने शिक्षा हासिल कर ली किन्तु अपने ही रंगरलियों में वे समाज को भूल गये। उनका किसीसे लेना देना नही। हर एक आदमी अपने ही स्वार्थ में लीन है। किन्तु ये संकेत है आगामी पीढी अंधेरे में जाने की, जिसकी परवाह किसी को भी नहीं है।

उनके मन में उभरनेवाले यह विचार वे बता रहे थे। ये सुनकर मुझे बडा दुख हो रहा था।

हरिभाऊ ज्यादा राजनीती नहीं करते, क्यूँकी वे सामाजिक कार्यकर्ता है। उन्होंने राजनीती में प्रवेश किया वह सिर्फ समाजके प्रश्न के लिए। माना की राजनीती और समाज कारण दोनों एकही सिक्के के दो पहलू है, फिर भी हरिभाऊ समाजकारण की तरफ ज्यादा ध्यान देते है। समाजकी वेदनाएं और व्यथाएं उन्होंने नजदीकीसे देखी हैं इसलिए उनकी भूमिका रही है की वे उसे नजरअंदाज नहीं कर सकते।

समाज में अलग अलग प्रवृत्तीयाँ रहती है। सचमें हर व्यक्ती की प्रवृत्ती अलग रहती हैं। ऐसी स्थिती में एकही व्यक्तीकी तरह झुकाव होना असंभव हैं। उसके लिए अनेक कारण है। हरिभाऊ जी जानसे समाज के लिए कष्ट कर रहें है, जूझ रहे है, ये सच बात है। समाजके लिए राष्ट्रीय स्तरपर लडनेवाला यह नेता है, फिर भी उनके कार्यपर या व्यक्तीत्व पर विरोध हो रहा है, यह दुखकी बात है की जो आदमी अच्छा काम कर रहा है, उसका विरोध करना या उसकी टांग खीचना यह हमारा स्वभाव बन रहा है।

हरिभाऊ ने ऐसी छुटमुट बातों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया, क्यूं की अलोचना और विरोध यह कर्तृत्ववान व्यक्तीके मिले हुए पुरस्कारसे भी बढकर है।

हरिभाऊ की भूमिका थी की कोई भी बांधव अपने मानवी हकसे वंचित न रहे, समाज को गती मिले, उसकी प्रगती हो, इसलिए हरिभाऊ ने समाज के लिए विधायक आंदोलन शुरु किया। हरिभाऊ कहते है "रेणके आयोग की सिफारिसों पर अंमल हुआ तो सच्चे अर्थमें विमुक्त-घुमंतू समाज को आजादी प्राप्त हुई ऐसा में समझूंगा।" इनका यह कहना युवा पीढीके लिए प्रेरणा है, उनका विचार की राजनीती के बजाय समाजकारण पर ज्यादा जोर दिया जाए क्यूंकी समाजकारणसे समाज के ऋण की आपूर्ती होती है। समाजकारण की वजहसे राजनीती में एक दिन यश प्राप्त होता है। आजके दिनमें जिसको कोई भी राजकीय विरासत नही है, वह राजनीती में नहीं टिक पायेगा। समाजकारणसे मिलनेवाला परमानंद आत्मसन्मान अलग ही है। आजकी युवा पीढीने समाजकारणसे परहेज नहीं करना चाहिए, मुँह फेर नहीं लेना चाहिए। समाजकारणसे समाजकी प्रगती होती है और अपना स्थान बलवान होता है। राजनीती में ये बातें महत्वपूर्ण होती है इसलिए युवकों को, कार्यकर्ताओंको चाहिए की वे आगे आये। इस तरह का मार्गदर्शन हरिभाऊ करते हैं। आजकल नए नए ब्रेकिंग न्यूज सुनने को, देखने को मिलते है उनमें हम हरिभाऊ के रेणके आयोगके लिए हो रहे प्रयास भी देखते हैं, सुनते है यह खास बात है। नये नये घोटालें, स्कॅन्डल्स, फ्रॉड्स सामने आने लगे हैं। जनता देख रही है की सत्ताधारी दल और विरोधी दल आपस में झगड रहे हैं।

मूल समस्याएं या प्रलंबित समस्याएं आ नहीं रही हैं। रेणके आयोग की सिफारिसों को कई बरस बीत गये फिर भी उनकी तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है।

जब सत्ताधारी सरकार के सामने नये नये सवाल, समस्याएं खडी हो रही है, तो समस्याएं सुलझायेंगे कैसे? यह बहुत चिंता का विषय है। १५ करोड आबादीके समाज के लिए, जीवनदायी, वरदान देनेवाले रेणके आयोग की स्थिती मंडल आयोग से भी बद्तर है। सरकार कुछ भी नहीं कर रही है। हरिभाऊ को यह बात बहुत दुख दे रही थी। इन भावनाओं को सरकार तक पहुँचाने के लिए और सरकार को फिर इस समस्याकी याद दिलाने के लिए हरिभाऊ ने फिर दिल्ली में दि.०९.११.२०१० को आंदोलन किया।

फोटो

रेणके आयोग को अधिक समय के लिए नजरअंदाज करना विमुक्त-घुमंतू समाज के लिए मृत्यूके समान होगी ऐसी पेशकश हरिभाऊने सामाजिक न्याय मंत्री श्री. मुकूल वासनिक के सामने की।

उस समय मुकूल वासनिक ने हरिभाऊ को आश्वासित किया की विमुक्त-घुमंतूओंको केंद्रमें सहुलियत मिलेगी और रेणके आयोग की सिफारिसों को गंभीरतासे लिया जाएगा। ९ नवंबर के आंदोलनमें पंजाबके बलदेव राज राजस्थान के मानसिंग बंजारा और उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश के मान्यवर नेतागण उपस्थित थे।

"रेणके आयोग की सिफारिसोंपर अंमल किया जाना चाहिए" इसके लिए विमुक्त-घुमंतूओंका जो आंदोलन मुक्ती मोर्चाने चलाया था वह थम नहीं गया है, अभी भी चल रहा है। रेणके आयोग के लिए चल रहा काँरवा अभी भी चलेगा, क्यूँकी रेणके आयोग यह सच्चे अर्थ में विमुक्त-घुमंतू समाजको आजादी देनेवाला एक घोषणा पत्र है। देशको आजदी मिलने के बाद कई बरस बीत गये हैं। "इंडिया शायनिंग", "इंडिया व्हिजन", इंडिया ट्वेंटी-ट्वेंटी" ऐसी कई संकल्पनाएं आयी और गयी किन्तु आजादी की रोशनी अबतक विमुक्त-घुमंतू समाज तक नही पहुंची है। उन्होंने अंग्रजोंका विरोध किया इसलिए उन्हे क्रिमिनल कास्ट (गुनाह करनेवाली जातीयाँ) बनाया गया। विमुक्त-घुमंतू जमातीकी व्यथा है, की जिस देशके लिए उन्होंने प्राणोंकी परवाह नहीं की, उसकी सराहना की बात छोडो, कमसे कम लोकशाही में जीने को मिलना चाहिए।

विमुक्त-घुमंतू समाजपर बरसोंसे अन्याय हो रहा है उससे उन्हें छुडाने के लिए सिर्फ रेणके आयोग की सिफारिसें काम आ सकती है। जब तक रेणके आयोगपर पूरी तरहसे अंमल नहीं होता, तब तक उनका घूमना, आक्रंदन, पीडा, खाली पेट भूखा रहना खतम नहीं होगा। भावी पिढीयाँ खुदगर्ज बनने के बजाय गुलाम होंगी।

मा. बाळकृष्ण रेणके जी ने विमुक्त-घुमंतूओंके शैक्षणिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजकीय ऐसे अनेक क्षेत्रोंमें हो रहे स्थितीका अभ्यास किया और इस क्षेत्र में उनका पिछडापन दूर करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। किन्तु इन सिफरिसों और सुझावों को नजरअंदाज किया जा रहा है। यह नजरअंदाजी विमुक्त-घुमंतूओंकी भावी पिढीयोंको बहुत दुर्दशा में डाल देगी। आज हर एक दलके नेताने रेणके आयोग गंभीरतासे लेना चाहिए। हम और कितने दिन विमुक्त-घुमंतूओंको दुर्दशा और आत्यंतिक बुरे हाल में रखेंगे? आज समय की पुकार है कि हर एक ने इन सिफारिसों के लिए प्रयत्न करना चाहिए, आगे आना चाहिए।

विमुक्त-घुमंतूओंके लिए झगडनेवालों की सूचीमें हरिभाऊ का नाम अग्रणी है। हरिभाऊ वह हीरा है जो रेणके आयोग के लिए लोकसभा में जूझ रहा है, बारबार दिल्लीमें मोर्चा निकाल रहा है, आंदोलन कर रहा है, पूरे देशमें घूम रहा है, जनजागृती के लिए संघटन कर रहा है इसमें कोई शक नहीं।

हर दिन हरिभाऊ का हौसला बुलंद होता गया। आमतौर पर चुनाव खतम होने के बाद ये सब बातें भूली जाती है। किन्तु हरिभाऊ ये सब बातें भूल कैसे सकते थे? उनका कार्य राजनीतीसे ज्यादा समाजकारण में ज्यादा रुची लेनेवाला है। उनमेंसे जो कार्यकर्ता है व सजग रहता है। यही बात सच्चे कर्तृत्ववान नेता के बारे में सच्ची होती है। यदि हम कार्यकर्ता नहीं रहे, तो हम जिंदा होके भी मृत होते हैं। इसलिए जब हम आंदोलन में काम करते है, तब अपना कार्य करते रहना चाहिए, वह समाज के लिए आवश्यक हैं।

हरिभाऊ सिर्फ महाराष्ट्र के विमुक्त-घुमंतूओंके लिए लडनेवाले नहीं थे, बल्की पूरे देशके विमुक्त-घुमंतूओंके लिए लड रहे थे। उन्होंने अपना आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर छेडा था। इसलिए उनको सर्वसंमतीसे राष्ट्रीय विमुक्त-घुमंतू जाती जमाती महासंघ का अध्यक्ष चुना गया। रेणके आयोग हो या और कोई बात हो वे इन बातोंके लिए वरिष्ठ नेताओंसे और संबंधित विभागोंसे मिलते थे, चाहे दिल्लीमें या अन्य जगह हो। उधर के समाचार वे मुझे बताते थे, किन्तु मुझे वे एक समाजकारणी या राजनीतीज्ञ से ज्यादा एक "इन्सान" की हैसियतसे ज्यादा नजर आए। इस स्वार्थी

मदमत्त मोहमयी दुनिया में स्वार्थ, पद इसके अहंकार में हरिभाऊ लिप्त नहीं हुए किन्तु एक नम्र निस्वार्थ इन्सान की हैसियत से अपना काम करते रहे, अपनी इन्सानियत उन्होंने जिंदा रखी।

दिन ब दिन हालात बिगडते जा रहे है। छोटे ग्रामपंचायत के चुनाव जीतने वाला वॉर्ड मेंबर भी चुनाव जीतने के बाद में हमें पहचाननेसे इनकार करता है, देखी अनदेखी करता है - फोन किया तो लेता ही नहीं। आजकल के पदाधिकारी तालुका के गाँव जाना है तो ऐसा रौब जमाते हैं मानो मंत्रालय जा रहे हैं। सत्ताकी लत, नशा शराबकी लत या नशेसे भी भयानक है। किन्तु सत्ता जैसी मारनेवाली है, घातक है, वैसी तारने वाली और मदद करनेवाली भी है। सत्ता का उपयोग सत्ताधारी आदमी के नीतीमूल्य और समाज और कर्तव्य के प्रती श्रद्धापर निर्भर है।

हरिभाऊ को फोन २४x७ चलता रहता है। मैं ने कई बार देखा है, कभी भी फोन करो, फोन कॉल रिसिव्ह होता है। उन्होंने मुझे एक बार रात ११ बजे फोन किया और बातचीत की। दो-तीन बार रातके चार-साडे चार बजे फोन आया। आम तौर पर इस समय सब लोग सोते है, बहुत ही कम लोग ऐसे है, जो इस समय सोते नही। किन्तु कुछ लोग जागते है, कभी सोते नहीं। एक किताब पढनेवाला पाठक, दूसरा लेखक और तीसरा सोचने वाला विचारवंत। पूरी दुनियामें ये लोग जागते है, इसलिए जागते है क्योंकी अंधेरेमें सोये हुए लोगोंको वे उठाना चाहते है। समाजबांधवोंके लिए कार्यकर्ताओंके लिए वे एक प्रकाशकिरण, रोशनी रहती है। हरिभाऊ ये पहले सज्जन मैंने देखे हैं जो कार्यकर्ताओंको २४ घंटे सेवा देते है, रात हो या दिन हो, जब समय मिले तब संवाद करने वाले हैं।

आज के युग में इन्सान तेजीसे बदल रहा है। दिन ब दिन नयी घटनाएं हो रही है, नया समय, नयी समस्या पैदा हो रही है। २०१० से भ्रष्टाचार, काला धन ये बात जोर जोरसे आगे आने लगी। भूतकाल में महाराष्ट्र में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री. सुधाकारराव नाईक जी ने कडे कदम उठाये थे। महाराष्ट्र के इतिहासमें सुधाकररावजी कठोर प्रशासक और प्रशासनपर मजबूत नियंत्रण रखनेवाले मुख्यमंत्री इस हैसियतसे जाने जाते है। उन्होंने भ्रष्टाचार निर्मूलन का कार्य शुरु किया था। किन्तु उनके अच्छे काम की वजहसे उन्हें पद छोडना पडा। इतनी गंदी और

खराब राजनीती महाराष्ट्र में खेली जाएगी ऐसा कभी सोचा नहीं था। सुधाकररावजी का मुख्यमंत्री पदसे इस्तीफा यह एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। ज्येष्ठ समाजसेवक तथा भ्रष्टचार निर्मूलन आंदोलनके प्रणेते अण्णा हजारेने सुधाकरराव नाईक से भ्रष्टाचार निर्मूलनके लिए किये कार्यकी सराहना की थी।

आज सिर्फ महाराष्ट्र नहीं, पूरा देश भ्रष्टाचार से ग्रस्त हुआ है, क्यूंकी लोगों की नीतीमत्ता दिन ब दिन खराब हो रही है। नीतीमत्ता शुद्ध न हो तो भ्रष्टाचार मिटाना असंभव है। समाजसेवक श्री. अण्णा हजारे ने २०११ में जनलोकपाल विधेयक के बारे में पूरे देशमें आंदोलन छेडा था। पूरा देश अण्णा-अण्णा कर रहा था, हर एक टिव्ही चॅनल पर अण्णा के दर्शन हो रहे थे। जनता अनेक तरफ के विवाद देख रही थी जैसे क्या जनलोकपाल संसदीय शासन प्रणालीकी चौखट के बाहर का है या नही? संसद श्रेष्ठ है या टीम अण्णा की कोअर कमिटी ? इस में भी अपना स्वार्थ हासिल करनेवाले लोग थे। देश में करोडों लोग अभी भी खाना, पानी, आवास, आरोग्य, शिक्षा इससे वंचित हैं इसकी किसी को भी कुछ भी नहीं पडी थी। देश में १०-१२ करोड आबादी के विमुक्त-घुमंतू समाजको "अण्णा का लोकपाल या जनता का लोकपाल" इससे कुछ लेना देना नहीं था। क्यूंकी आजादी पाने के बाद चौसष्ठ बरस बीत गये फिर भी बहुत समाज प्रवाह के बाहर ही हैं। क्या भ्रष्टाचार के मुद्देपर पूरा मिडीया जगत और नेतालोग काम कर रहे थे उस मिडीया जगत और नेतालोगोंको अभी भी विमुक्त-घुमंतूओंकी दारिद्र्यपूर्ण, बेहाल, जिंदगी , उनकी हालत, उनपर हो रहे अत्यचार, उनका शोषण इत्यादि नहीं दिखाई दे रहे थे? ऐसे हजारों सवाल मन को कुरेद रहे थे। हजारों बरसोंसे न्याय वंचित रहे इन लोगों के तरफ किसीने भी ध्यान नहीं दिया। इन्हें किसी ने भी गंभीरतासे नहीं लिया। अण्णाजी के आंदोलनसे भ्रष्टाचार शायद समाप्त होगा या नहीं होगा, किन्तु एक विशेष बात है की सारी जनता भ्रष्टाचार के खिलाफ खडी हुई।

इस ओंदोलन के दरमियाँ आधुनिक महाराष्ट्र के महानायक, हरित क्रांतीके प्रणेते वसंतराव नाईक के पुण्यस्मरण दिन का बडा कार्यक्रम श्रीमंत पूर्णचंद्र बुटी सभागृह, रा.तु.म. नागपूर विद्यापीठ, नागपूर यहाँ आयोजित किया था। उस समय डॉ. प्रवीण पवार जी ने नागपूरमें जगह

जगह नाईक साहब के बडे बडे फलक (होर्डींग्ज) लगाए थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष, श्री. हरिभाऊ राठोड, प्रमुख अतिथी बाळकृष्ण रेणके और अर्चना डेहनकर (महापौर, नागपूर) थे। हरिभाऊने मुझे बताया "मैं कार्यक्रम के लिए निकल रहा हूँ तुम आ जाओ"। पूरा सभागृह दर्शकोंसे खचाखच भरा हुआ था। मैंने देखा हरिभाऊजी और अर्चनाजी बातें कर रहे थे "क्या हमारे समाजबांधव को नागपूर में समाजभवन के लिए जगह या मनपा द्वारा अन्य लाभ दिये जा सकते है?" रेणके साहब महानायक वसंतराव नाईकजी की कुछ अविस्मरणीय यादें श्रोताओंको बता रहे थे और श्रोताओंको नई प्रेरणा मिल रही थी।

रेणके साहब ने कहा "वसंतरावने यह प्रमाणीत किया है की विमुक्त-घुमंतू होने के बावजूद हमने स्थिर शासन दिया है और आपको और हमें फिरसे एक बार वसंतराव नाईक बनाना है"। इस बात पर तालियोंकी गूँज उठी। हरिभाऊ मंचपर थे। मन भावविभोर हो गया। शायद उस समय वे देख रहे होंगे की कुछ लोग सामाजिक झगडा निर्माण करके समाज में फूट डाल रहें है, समाजको निर्बल बना रहे है "अंदर के बाहर के" विवाद मचा रहे है, युवा पिढी दिशाहीन होकर तितर बितर हो गई है। समाजका राजनैतिक अस्तित्व कम हुए जा रहा है। वे निराश हो रहे होंगे, वसंतराव निर्माण होने के आसार कभी भी कहीं भी नहीं दिखाई दे रहे हैं। इसलिए शायद वे निराश हुए होंगे।

बाळकृष्ण रेणके बडी खूबीसे समाजके विभिन्न पहलूओंपर अपनी राय प्रकट कर रहे थे। वे उपस्थित लोगोंको विमुक्त-घुमंतूओंके प्राचीन वैभव और बहादूरीका परिचय दे रहे थे। उन्होंने कहा "राजनैतिक सत्ता पाने के लिए अभी बंजारा समाजको आगे आना चाहिए। बंजारा समाजमें सत्ता हासिल करने का सामर्थ्य है।" उन्होंने उपस्थितोंको हरिभाऊ के राष्ट्रीय स्तरपर समाज संगठित करने के प्रयासों के बारे में भी बताया। वे कह रहे थे "विमुक्त-घुमंतू लोगोंकी ६६६ जाती के लोगोंको नाईक साहब के कार्यसे प्रेरणा लेनी चाहिए, समाज संगठित रखना चाहिए। राजनैतिक प्रतिनिधित्व बढाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।"

इसके बाद हरिभाऊ का अध्यक्षीय भाषण शुरु हुआ। उन्होंने उपस्थित लोगोंके साथ संवाद किया। ऐसे मैं पहली बार देख रहा था। वे उपस्थितों के सवालोंका निर्णायक जबाब दे रहे थे।

उनकी उम्र बढ रही थी किन्तु उनका जोश, उत्साह कम नहीं हुआ। वे राष्ट्रीय स्तरपर समाजके भविष्य के बारे में बोल रहे थे, किन्तु वे काफिले की, पाल की वेदना नहीं भूले। उनके शब्दोंसे उनकी इच्छा प्रतीत हो रही थी की, काफिला विश्वस्तरपर पहुँचे। उपस्थितोंमें युवा कार्यकर्ता बडी तादाद में थे। इसलिए हरिभाऊने बचपन और युवास्थामें जो समाजसेवा की, समाज आंदोलनकी शिक्षा ली थी वह युवा पिढी को समझायी। उस समय उन्होंने अपने जिंदगी का एक किस्सा सुनाया : "पिछले दशकमें बहुजन केसरी मखराम पवारजीने मंडल आयोग की सिफारिसोंपर अंमल करने के लिए एक आंदोलन छेडा था। उसके अंतर्गत अकोला में एक मोर्चा निकाला था। मोर्चा जिल्हा कार्यालयपर निकल रहा था। उसमें शामिल होने के लिए मैं जल्दी जल्दी एक नाई के दुकान में दाढी बनानेके लिए गया। नाई मेरी दाढी बना रहा था। हमारे मोर्चेवाले नारे दे रहे थे। नाई उनकी तरफ देखकर बोला **"ये लोग, क्यूँ खालीपिली चिल्ला रहे है? उन्हे इतनी सुविधाएँ, रियायतें मिल रही है, फिर भी कोई भी बिना वजह मोर्चे निकाल रहा है! साब, इन लोगोंने अभी क्यूँ मोर्चा निकाला है? "** ये बाते सुनकर मुझे (हरिभाऊ) गुस्सा भी आ रहा था और हंसी भी आ रही थी। वो नाई इतना भी जानता नहीं था की वह मोर्चा ओबीसी (अन्य पिछडे वर्ग) को सुविधाएँ, रियायतें मिले इसलिए निकाला गया है। हरिभाऊ के इस किस्से के बाद उपस्थितोंको हंसी भी आई और तालियोंकी गूँज भी उठी। खुद हरिभाऊ भी बहुत हंसे।

हरिभाऊ आगे बोले "पिछडे वर्गों के लोगोंके बारे में यही हो रहा है। उन्हें पता ही नही की वे कौन है? उनका कर्तव्य क्या है? " जब तक हमें अपने अस्तित्व की पहचान नहीं हो रही थी, तब तक रेणके आयोग की सिफारिसें भी कुछ काम की नही है। तीसरी सूचीके बारें में सरकार और समाजकी भूमिका क्या है इसपर बोलते हुए उन्होंने कहा "जब तक बच्चा जोरसे नहीं रोता तब तक उसकी माँ भी उसे दूध नहीं देती" यही सिद्धांत विमुक्त-घुमंतू लोगोंके आंदोलन को भी प्रयोज्य होती है। इसलिए विमुक्त-घुमंतूओंके सब जाती-उपजातीओंके बंधुओंने अपने अधिकारके लिए एक बुलंद आवाज उठानी चाहिए। समाज के लिए हरिभाऊ अपने प्राण देने को तैयार है, किन्तु आपकी भी वैसी तैयारी होनी चाहिए। वे जब ऐसा बोल रहे थे तब सब उपस्थितो में खामेशी फैली।

इस समय उन्होंने सब लोगोंको आवाहन किया की वे दि.३०.०८.२०११ को दिल्लीमें रेणके आयोग के समर्थन में आयोजित होने वाले मोर्चेमें सम्मिलित हो। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद सब लोग आपस में बातें कर रहे थे। लोगो में चर्चा हो रही थी **"क्या अण्णा हजारे विमुक्त-घुमंतू लोगोंकी बुरी स्थिती नहीं देखते है? मीडीयावाले अपनी समस्याए लोगोंके सामने क्यूँ नही रखते? हरिभाऊ अकेले क्या करेंगे? फिर भी हरिभाऊ बहुत कुछ कर रहे हैं।"** सभागृह के प्रवेशद्वार पर बहुत भीड इकठ्ठा हुई थी। हरिभाऊ और रेणके जी के इर्दगिर्द बहुत भीड हुई थी। हरिभाऊ हर एक को प्यारसे प्रतिसाद दे रहे थे। किन्तु उनकी नजरें इर्दगिर्द घूम रही थी। वे किसी को देख रही थी। **एकनाथ कहाँ है? एकनाथ चला गया क्या? आपने एकनाथ को कहीं देखा क्या?** ऐसे वे खुदको ही पूछ रहे थे और अस्वस्थ हो रहे थे।

मुझे ये देखना था कि क्या हरिभाऊ मुझे इस सन्मानमें ढेरसे फूलोंमें भूल रहे हैं क्या? इसलिए मैं सूझबूझकर उनके पीछे भीडमें खडा था। आखीर मुझे ढूँढने की उनकी कोशिश सफल हुई। "कहाँ गया था तू इतने समय? " ऐसे बोलकर उन्होंने मेरे कंधेपर हाथ रखा। उन्होंने रेणके को बुलाया और वह बोले "अण्णासाब यहाँ देखिये यह एकनाथ है, इससे मिलो" मैने हरिभाऊसे पूछा "ये अण्णा कौन है? " हरिभाऊ बोले "अरे अपना रेणके, वही अण्णा"। रेणके अण्णा आनेके बाद मैंने उनके दर्शन किये। हरिभाऊने मेरा परिचय करके दिया। रेणके अण्णाजीने प्यारसे मेरे कंधेपर हाथ रखके मुझसे बात की। बडी हस्तीके करकमलोंद्वारा पारितोषिक प्राप्त करते वक्त जितना आनंद होता है, उससे ज्यादा आनंद मुझे रेणकेजीके इस प्रेमसे हुआ।

उपस्थितोंसे बिदाई लेके हम रविभवनके लिए चलें। अपना आंदोलन उत्तर भारत में कैसा फैल रहा है वह हरिभाऊजी मुझे बता रहे थे। साथमें नितीन सरदार कुछ पुरानी बातें गोरमाटी भाषामें कह रहे थे। शामके साढे पाँच बजे पत्रकार परिषदका आयोजन किया था। उसके संदर्भ में रविभवन में थोडी चर्चा की। हरिभाऊ को रक्तचापकी बिमारी है इसलिए मैंने उन्हें उनकी दवा दी। कुछ समय बाद हरिभाऊने उत्तरप्रदेश, दिल्ली और गुजराथ के कुछ नेता के साथ फोनपर मोर्चा के तैयारी के बारे में पूछताछ की। थोडा आराम करने के बाद सब पत्रकार परिषदके लिए निकले।

जाते जाते कौन क्या बोलेंगे यह तय हुआ। कौनसा भी कार्य शुरु करने के पहले उसका नियोजन करना उसकी रणनीती तय करना फायदेमंद होता है।

पत्रकार परिषदमें हरिभाऊने बताया की विमुक्त-घुमंतू लोगों की समस्याएं और रेणके आयोगके समर्थन में कृती-समिती का गठन किया है। इस कृती समितीद्वारा दि.३१.०८.२०१० को जंतरमंतर दिल्ली पर निदर्शन किये जाएंगे। रेणके अण्णाने बताया की, देशके अनगिनत विमुक्त-घुमंतू अब तक आजादी का लाभ उठा नहीं पाये है। रेणके आयोग की सिफारिसोंपर अंमल किया गया तो उनकी स्थिती बेहतर होगी, किन्तु शासन अभी भी कुछ नहीं कर रही है। सरकारने जाधव समिती नियुक्त करके समाजको प्रतिक्षा करनेपर मजबूर किया है।

उस समय अण्णा हजारे आंदोलन कर रहे थे। उसके बारेमें पत्रकारोंने सवाल किये। रेणके अण्णाने कहा की, "हमें अण्णा हजारेजी के प्रति आदर है, किन्तु उनकी जो भूमिका है की, मै कहूँगा वही कानून आपको पारित करना है" इसका हम समर्थन नहीं कर सकते।

हरिभाऊ बोले "मिडीया बार बार अण्णा हजारे का उद्घोष कर रही है, मिडीया ने हमारे रेणके अण्णाजी के तरफ भी ध्यान देना चाहिए। हम हजारो सालोंसे न्यायसे वंचित है। पत्रकार परिषद समाप्त होने के बाद हरिभाऊ नागपूर विमान अड्डेपर गये। आगे वे दिल्ली जाने वाले थे।

अगले दिन समाचार पत्रोंमे खबर आई। दैनिक सकाळ में शीर्षक था "रेणके अण्णा, दिल्ली में आएंगे"। हरिभाऊने नाईक साहब के पुण्यतिथी के दिनपर "रेणके अण्णा" ऐसे कहा था। समाचार पत्रोंमें वही आया।

अपनी जिंदगी के अगली यात्रा में हरिभाऊ अपनी भूमिकापर निश्चल रहे। उनकी भूमिका थी विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए ज्यादा से ज्यादा सहुलियत और सुविधा मिले और रेणके आयोगके परिणामस्वरुपी जाधव समितीकी सिफारिसोंपर अंमल किया जाए। काँग्रेस में अपना स्थान मजबूत करने के लिए उन्होंने पूर्व मंत्री और माना समाजके एक महत्वपूर्ण नेता रमेश गजबे को काँग्रेस में शामिल होने के लिए मनाया। उन्होंने प्रकाश लोणारेको काँगेस में शामिल कराया। हरिभाऊ के काँग्रेस प्रदेशाध्यक्ष माणिकराव ठाकरे के साथ नजदीकी संबंध है।

फोटो

२०१० के काँग्रेस प्रदेश कार्यकारिणीके २५ महासरचिटणीस की सूची में हरिभाऊ को पहली बार समाविष्ट किया गया।

हरिभाऊ समाजके प्रति निष्ठावान है। उनकी निष्ठा समाजकारण के प्रति ज्यादा है। उनके अथक प्रयत्न के बाद विमुक्त-घुमंतू बंजारा समाज कुछ सुविधाएं प्राप्त कर सका। किन्तु ये सुविधाएं उसके उन्नती और पुनरुत्थानके लिए काफी नहीं है। उसी तरह समाज की राष्ट्रीय स्तरपर पहचान हो जाएगी ऐसी सुविधाएं बहुत कम थी। इसलिए उन्होंने अपना ध्यान सिर्फ तीसरी सूची और रेणके आयोग के बाद डॉ. नरेंद्र जाधव कृती गुट पर दिया।

सन २००८ में रेणके आयोगने अत्यंत महत्वपूर्ण ७६ सिफारिसोंका प्रतिवेदन केंद्र सरकारको सादर किया था। किन्तु यू.पी.ए. सरकारने इस आयोग की सिफारिसों पर अंमल नहीं किया और उन्हें प्रलंबित रखा। केंद्र में फिरसे यू.पी.ए.-२ सरकार की स्थापना हुई। इस सरकार की राष्ट्रीय सल्लागार परिषदने (NAC) विमुक्त-घुमंतूओंके लिए एक नयी कृती समिती की स्थापना की। यही कृती समिती "जाधव समिती" के नामसे जानी जाती है। इसकी पहली प्राथमिक सभा दि.१८.०४.२०११ और दूसरी १३.०७.२०११ को संपन्न हुई। इस कृती समितीने अत्यंत महत्वपूर्ण ऐसे नये सुझाव दिये, जैसे की अत्याचार प्रतिबंध कानून पर अंमल करना, हॅबिच्यूअल ऑफेंडर्स ॲक्ट (१९५२) (आदतसे गुन्हेगारी करनेवालोंके बारे में कानून (१९५२) खारिज करना, राष्ट्रीय वन्यजीवन कानून (१९७२) के अंतर्गत विमुक्त-घुमंतूओंको सहुलियत, सुविधा देना। समाजके लोगोंको रोजगार देकर एक ही स्थानपर रहने के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना।

समाजके लिए कानूनी और संसदके नीतीके अंतर्गत समाजके लिए उपाय करना, विमुक्त-घुमंतूओंके लिए अलग विकास मंडलकी स्थापना करना इन सब सिफारिसोंका प्रतिवेदन के साथ कृती गुटमें अपना प्रतिवेदन दि.१८.१०.२०११ को सादर किया। दिल्लीमें महाराष्ट्र सदन

में आयोजित एक पत्रकार परिषदमें विमुक्त-घुमंतूओंके राष्ट्रीय स्तरके नेता हरिभाऊराठोडने कहा की यह सब सिफारिसें क्रांतीकारी है। सरकारी जमीनपर विमुक्त-घुमंतूओंको अधिकार दिये जाए, इनके लिए अलग विकास मंडल का गठन किया जाए, और ओबीसी (अन्य पिछडे वर्ग) को दिये जानेवाले आरक्षण से ७% आरक्षण विमुक्त-घुमंतूओंको दिये जाए, ऐसी मांगे हरिभाऊ राठोडने नॅक (NAC) कृती समितीसे की।

नॅक (NAC) इस कृती गुटके अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र जाधव थे। केंद्र सरकारी ओर से संगीता गईराला, कुमार आलोक, पी. पी. मित्रा, डॉ.अमरजीत सिंग सदस्य थे। राज्य सरकार की तरफसे मिश्रीलाल पासवान (उत्तरप्रदेश), बी.बी. सिंग (उत्तरप्रदेश), विद्यासागर राव (आंध्रप्रदेश) बिजॉय देब्बारमा (त्रिपुरा), आर. के. वैश (दिल्ली), आदिती मेहता (राजस्थान) ये सदस्य थे। इसके अलावा तांत्रिक सलाहकार श्री. अजय दांडेकर, डॉ. मीना राधाकृष्ण, बाळकृष्ण रेणके, लक्ष्मीचंद और लक्ष्मीभाऊ पाटणी थे। कोअर कमिटीमें राष्ट्रीय नेता हरिभाऊ राठोड, कृष्णा श्रीनिवास, इंद्रजित राजभर (उत्तरप्रदेश), सी.के. योगी, मा. यासिन पोसवाल (जम्मू काश्मिर), काळूराम चव्हाण (राजस्थान), पारस बंजारा (चितोड गड, राजस्थान) अनुराग मोदी (मध्य प्रदेश), अनिल पाल (लखनऊ), विराण्णा कर्णावत (आंध्रप्रदेश), श्रीमती मित्तल पटेल (गुजरात), लक्ष्मण गायकवाड, मच्छिंद्र भोसले (महाराष्ट्र), फकिरा जाधव, प्रा. मोतीराज राठोड, जयंतीलाल चडावत (राजस्थान), श्री. तेजपाल (लखनऊ), नंदलाल पाल (लखनऊ), राम अवध राजभर (आझमगड) ये सदस्य थे।

इस कृती गुट के सब सदस्योंने विमुक्त-घुमंतू लोगोंकी स्थितीका अभ्यास करके अपना प्रारुप नैकको पेश किया। उनकी ऐसी अपेक्षा थी की, इस प्रारुपकी स्थिती भी रेणके आयोग जैसी न हो। राष्ट्रीय नेता हरिभाऊकी रामसे "जाधव गुटका प्रारुप क्रांतीकारी है किन्तु उसका अंमल भी क्रांतीकारी होना चाहिए। उस समय की घटनाएं हरिभाऊ मुझे बता रहे थे, उस समय मैं बोला "केंद्र सरकार विमुक्त-घुमंतूओंको ज्यादा समय प्रतीक्षा में न रखें। यदि इस मामले पर उचित और

विनाविलंब अंमल नहीं किया तो उनके बुरे हालात और बुरे हो जाएंगे, और उनका देशके आजादीपर विश्वास नहीं रहेगा। एक तरफ प्रगत समाज पश्चिमी देशमें बस रहे हैं और दूसरी तरफ १३ करोड आबादी का यह विमुक्त-घुमंतू समाज अभी भी भूमीहीन है, उन्हें आवास नहीं मिलता, उनका केंद्र सरकार या राज्य सरकारमें अपेक्षानुसार प्रतिनिधित्व नही है। उनकी दलील पेश करने के लिए उनको संसद या राज्य विधीमंडलमें उचित मात्रामें प्रतिनिधित्व होना चाहिए इसलिए उनकी दलील केंद्र या राज्य के विधीमंडल में नही पेश होती, यह बडे दुखकी बात है। इस तेरा करोड के जनसमुदायने एकसाथ आंदोलन किया, लडाई की तो इस देशका भविष्य बदल सकता है। इस देशकी राजनैतिक स्थिती बदलने की ताकत इस विमुक्त-घुमंतू समजमें है, सिर्फ उन्हें अपनी ताकत समझनी चाहिए और उसका उपयोग करना चाहिए। सब दल, सब संघटन विमुक्त-घुमंतूओं और बंजारा समाजका अपने अपने तरीकेसे अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर रहे है। महाराष्ट्र में अकेले बंजारा समाजकी तादाद बडी है किन्तु प्रतिनिधित्व बहुत कम है इसलिए समाजकी जनसंख्या कुछ कामकी नहीं थी। समय गतीशील है, प्रगत समाज अधिक प्रगत हो रहा है किन्तु यह विमुक्त-घुमंतू समाज अभी भी पिछडा हुआ है। ये बात सोचनी चाहिए। इस समाजने अभी अपनी आबादी का सामर्थ्य पहचानके पूरे देशको दिखाना चाहिए। जबतक ऐसा नही होगा, तब तक किसी भी दलकी सरकार हो, कौनसे भी सिद्धांतपर या इझमपर आधारित हो, समाजको ऐसे भटकना और वंचित रहना पडेगा इसलिए इस समाजको अपना सामर्थ्य दिखाना चाहिए। हरिभाऊ यह जानते थे क्यूँकी उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी विमुक्त-घुमंतूओंके लिए खर्च की है। उन्होंने अनेक मुसीबतोंका सामना किया है।

मेरी बात समाप्त होने के बाद वे बोले अभीतक मै हारा नही हूँ, मेरा आत्मविश्वास कम नहीं हुआ है । जब तक मै जिंदा हूँ विमुक्त-घुमंतूओंको न्याय दिये बिना चैनसे नहीं बैठूंगा।

बीच में हरिभाऊ को किसी का फोन आया। हम रुक गये। मैंने हरिभाऊका समाजकारण के प्रती ज्यादा लगाव समझ गया। अब तक की बातें और फोन कॉल याने समाजकारण ही था।

हरिभाऊ फिरसे एक बार सर्वसंमतीसे राष्ट्रीय स्तरपर विमुक्त-घुमंतू जमाती महासंघके अध्यक्ष चुने गये। उनका हर प्रदेशमें जनसंपर्क बहुत ज्यादा था। महाराष्ट्रके एक छोटेसे काफिले का यह हीरा राष्ट्रीय स्तरपर अपना जनसंपर्क बढा रहा था लेकिन उन्होंने अपने काफिले को नजरअंदाज नहीं किया। एक आम कार्यकर्ता राष्ट्रीय स्तरपर नेता बना। सिर्फ महाराष्ट्र नही, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ, आंध्रप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, झारखंड, ओरिसा और त्रिपुरा ऐसे महत्वपूर्ण अलग अलग प्रदेशमें हरिभाऊने जनजागृतीका कार्य किया है। हरिभाऊने अलग अलग प्रदेशके नेताओंको एक झंडे के नीचे लाने का कार्य किया।

हरिभाऊका ये बढता प्रचार देखके काँग्रसने उन्हें उत्तर प्रदेशमें काम दिया। उत्तर प्रदेशमें विमुक्त-घुमंतूओंकी ३४ जातीयाँ है, उन्हें अबतक ओबीसी (अन्य पिछडे वर्ग) में शामिल किया जाता है। इसलिए यह वर्ग आरक्षणसे वंचित रहा है। यह महत्वपूर्ण बात ध्यानमें रखकर काँग्रेसने लखनौमें बडा समारोह आयोजित किया। विमुक्त-घुमंतू लोगोंपर कैसा अन्याय हो रहा है ये हरिभाऊने इस मंचसे सबको समझाया। हरिभाऊको उत्तरप्रदेश मे लाने में काँग्रेस का उद्देश शायद यही रहेगा की उत्तरप्रदेश की बंजारा, बघेल, लोध, राजभर, पाल, कहार, धनगर, कश्यप, निषाद, मल्लाह, भर, नागाभट, कलंदर, केवट, जोगी, प्रजापती, कंकाळी, कुशवाह, मेवाती, जोगी, घोसी, ब्रिजवासी, ओधिया, मांझी, फकीर, धीवर, सपेरा, कोळी, गुजर, गंगापूर, भाई, रब्बारी आदी जातीके लोग हरिभाऊ को मानते है। हरिभाऊने इसके पहले ही उत्तरप्रदेश में रेणके आयोग के लिए सभा ली थी, लेकिन काँग्रेसके झंडे के नीचे यह पहली ही सभा थी।

इस समय प्रदेशाध्यक्ष रिता बहुगुणाजी इन्होंने हरिभाऊ की बडी प्रशंसा की। इस संमेलन वृत्तांकन वहाँ के लोकप्रिय राष्ट्रीय समाचार पत्र "दैनिक जागरण" में समाचार छपा "उत्तरप्रदेशमें अति पिछडोंको पटाना चाहती है काँग्रेस"। हरिभाऊ को उत्तर प्रदेशमें बडा अच्छा प्रतिसाद मिला।

हरिभाऊने वहाँ सबके दिल जीत लिए और यह यात्रा जीतकर वे मुंबई आये। यश देखके वे बहुत खुष हुए।

हम यदि अपने खुषी में औरोंको सम्मिलित करें तो वो खुषी दुगनी हो जाती है। खुषी प्रथमोपचार का काम करती है, लेकिन वे अनेक चुनौतियों का सामना करने का सामर्थ्य देती है। औरोंको अपने सुखो में शमिल करना और उनके दुखो में शामिल होना यह मानवी संहिता है।

दीपावली की छुट्टीयों के लिए मैं काफिले में गया। मेरे काफिले में दीपावली की कोई भी हलचल दिखाई नहीं दे रही थी। सब लोग सुबह जल्दी कामके लिए जाते थे। मजदूरोंकी कमी के कारण खेतोंमें "सफेद सोना" (कपास) चमक रहा था और उसके पेड जमीनतक नीचे आये थे। खेतोंमे बहुत काम थे। इसलिए मैं मेरी माँ और पिताजी के साथ खेत में गया, धनतेरस का दिन था। पूरा दिन कपासके खेत में काम करने में गया। शाम छे बजे सरसे "खोपला" (एक तरह की सरपर रखी हुई टोपी) उतारी। बहुत काम करनेसे पसीना तो आया था किन्तु घर में कपास आने की वजहसे खुषीयाँ भी मिली थी। मेरी खेती पहाडों में थी इसलिए वहाँसे घर आने को बहुत समय लगता था। हम बैलगाडीसे आते वक्त हमें हरिभाऊ का फोन आया। मैंने पिताजीसे कहा "पिताजी ठहरिये, बाबूजीका फोन है"। हरिभाऊ जी के हर उच्चारमें आनंद लहरा रहा था। वे बोले "एकनाथ, तेरा पत्र बहुत उपयुक्त साबित हुआ, मैं लखनौं में सब समाजको अच्छी तरहसे सब बातें बता सका। तेरे पत्रसे मुझे बडी ताकत मिली।"

सुश्री बहुगुणाजीने अपने भाषण में कहा "जिस तरह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, अण्णा हजारे, प्रतिभा पाटील-शेखावत जैसे महान व्यक्तीयोंने देशमें क्रांती की है उस तरह हरिभाऊ राठोड आज क्रांती कर रहे है"।

हरिभाऊ मुझे बहुत उत्साहसे बता रहे थे। सुश्री बहुगुणाजी ने उनकी प्रशंसा कैसी की, उत्तरप्रदेश के रॅली में क्या हुआ। उस समय मैं पहाडोंके रास्ते में से कपासकी ढेरपर बैठकर जा रहा था। वही मेरी दीपावली थी। मेरे लिए वही दीपावली का आनंदमय दिन था। मुझे अपने आनंदमें शरीक किये बिना हरिभाऊ का शायद जी नहीं भरा। अंतमें गुरु-शिष्य का नाता निकोप-निष्पक्ष और संवेदनाशील रहता है। गुरु या शिष्य, किसी को भी यश मिला तो दोनोंको समसमान आनंद होता है। मैंने हरिभाऊके साथ ज्यादा समय नहीं बिताया किन्तु मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा।

हेलन केलर कहती थी "दुनियाकी सबसे सुंदर और सर्वोत्तम बातें दिखाई नहीं देती और उन्हें स्पर्श नहीं किया जा सकता। वे सिर्फ हृदयसे जानी जाती है।

जो कुछ सुंदर है वह अपने अंदरही अंतर्मन में है। जब कभी अंतर्मनकी बात बाहर आती है, तब सामनेवाले इन्सान का सच्चा परिचय होता है। हरिभाऊ का अंतरंग, अंतर्मन निर्मल है, सच्चा है।

हरिभाऊका बर्ताव हरएक विमुक्त-घुमंतू बंधूके साथ सर्व समावेशक है। हरिभाऊ सबको एकही नजरसे देखते है। यह मेरा, यह तेरा ऐसा भेदभाव वे कभी भी नहीं करते। वे जब सांसद थे तब उन्होंने अपने निधीसे ओ.बी.सी. और अल्पसंख्य गुटोंके पीडीतोंकी भी मदद की थी। वे विमुक्त-घुमंतूओंके राष्ट्रीय नेता थे इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय स्तरपर विमुक्त-घुमंतूओंके लिए आंदोलन शुरु किया। उन्होंने राजनीतीसे ज्यादा समाजकार्यको महत्व दिया। उनके आंदोलन विमुक्त-घुमंतू जातीयोंके लिए था, फिर भी जातीयता उनके कार्य प्रणालीमें और स्वभावमें कहीं भी नही दिखाई देती। उन्होंने कोळी बंधुओंके लिए आवाज उठायी। उनकी समस्या के बारे में मा. मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाणजीसे चर्चा की। उनकी समस्याएं सामने रखी।

फोटो

मा. मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण (मुख्यमंत्री महाराष्ट्र) के साथ हरिभाऊ राठोड

हरिभाऊ मुक्त-घुमंतू समाजके आधार होने की वजहसे समाजकी उनसे बहुत आशाएं रही। समाज ये कभी भी नहीं भूलेगा की, गलीमें लडनेवाले बहुत है किन्तु दिल्ली में लडनेवाले अकेले हरिभाऊ रह गये।

एक ही परिवार के सदस्योंकी राय अलग अलग होती है। उनकी दिशा भी अलग अलग होती है। परिवारका यह हाल है, तो समाज का हाल उससे भी ज्यादा बुरा होता है। ऐसी स्थिती में

हरिभाऊने अलग अलग रायके अलग अलग समूह के लोगोंको एकत्र बांधने का अत्यंत कठिन कार्य हाथमें लिया। इतनाही नहीं अपने संघटन कार्य को राष्ट्रीय स्तरपर अलग पहचान करायी।

हरिभाऊ अपनी राय सादर करने में अत्यंत होशियार हैं। वे सदा सजग रहते है। कहाँ चुप्पी साधे और कहाँ बात करें ये हमें उनसे सीखना चाहिए।

लोकसभा इस लोकप्रिय राष्ट्रीय चॅनलपर हरिभाऊसे समक्ष साक्षात्कार दि.०७.११.२०११ को था। उसके पहले दिन ॲडव्होकेट पल्लवी रेणकेने वैसा एस.एम.एस मुझे भेजा था। इस साक्षात्कार में अण्णा (बाळकृष्ण रेणके) और डॉ. भालचंद्र मुणगेकर भी शामिल थे। हरिभाऊ समाज की समस्या दिल लगाकर अत्यंत गंभीरता से पेश कर रहे थे। इस चॅनलपर यह उनकी दूसरा साक्षात्कार था।

चाहे रेणके आयोग की सिफारिसें हो या जाधव कृती गुटकी बात हो, हरिभाऊ का आंदोलन कभी नहीं रुका। हरिभाऊ का आखरी संकल्प था विमुक्त-घुमंतूओंके लिए तीसरी सूची अंमलमें लाना और समाजके पुनरुत्थापन के लिए समाजकी दलील सदा पेश करते रहना, क्यूंकी राजनीती ये उनका कभी विषय नहीं था और नहीं हुआ। उनके हृदय में सिर्फ समाजप्रेम और समाज कार्य ही था। हरिभाऊ राठोड यह एकमात्र नेता है जिसने विमुक्त-घुमंतूओंका अलग आंदोलन शुरु किया। ऐसे अनेक आंदोलनकर्ता हैं जिन्होंने विमुक्त-घुमंतूओंपर आक्रमण किया, अपने सिद्धांत उनपर ठोस दिये और सिर्फ अपना आंदोलन बढाने की सोच ली। अब तक अनेक आंदोलनोंका आक्रमण हुआ, किन्तु हरिभाऊ की वजहसे यह आक्रमण रोकना संभव हुआ। यह उनका सबसे बडा और सराहनीय कार्य रहा।

विमुक्त-घुमंतूओंके आंदोलनमें उनका योगदान भविष्यमें भी अजरामर रहेगा इसमें कोई शक नहीं।

अपने जीवन में औरों के भलेके लिए कुछ करना चाहिए ऐसी भावना आजकल दिखाई नहीं देती। विचारवंत शिव खेरा का कहना है "बहुत लोगोंके जिंदगी की दुखभरी बात ऐसी है की जब वे मरते हैं, तब उनकी बहुत क्षमताएं उपयोग किये बिना खतम होती है। वे लोग सच्चे अर्थसे जिंदगी दिलसे नहीं जीते हैं, कष्ट करने के बजाय वो सड जाते है। किन्तु इसके भी कोई अपवाद रहते हैं।

कुछ लोगों का विचार होता है, सामाजिक आंदोलन बढना चाहिए, समाजका भला होना चाहिए। उन्हें लगता है की समाजके प्रति उनका भी कुछ कर्तव्य है। उनके मन में समाजका हित होता है और ऐसे लोग सडनेके बजाय कष्ट करना पसंत करते है। हरिभाऊ ऐसी एक मिसाल है। अपने अधिकार का इस्तेमाल वे सदैव विमुक्त-घुमंतूओंके लिए करते आये हैं। श्रीमद् भगवत गीता में भगवान कृष्ण अर्जुनसे कहते है "हे पार्थ, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" हे पार्थ, फलोंकी अपेक्षा न रखते हुए अपना कार्य करते जा। हरिभाऊने वैसे ही किया। वे कार्य करते रहें लेकिन उन्होंने फलकी अपेक्षा नहीं की। उन्होंने दिल्ली और अन्य राज्योंमें बहुत बार मोर्चा आंदोलनका आयोजन किया। वैशिष्ट्यपूर्ण वैभवशाली संस्कृतीके लिए पहचाने जाने वाला बंजारा समाज और अन्य समाजके लोगोंको संगठित करके अलग अलग राज्योंमें अपना आंदोलन उन्होंने शुरु किया। चाहे समस्या उत्तरप्रदेशके निषाद या राजभर समाजकी हो, चाहे मध्यप्रदेश के बल्दिया, गाडीया, धनगर बैरागी की हो, या गुजरात की सरोनिया, कोटावालीया, गाडलिया, छारा समूहकी हो। विमुक्त-घुमंतू समाजको एक सूत्रमें संम्मिलित करने के लिए उनपर हो रहे अन्याय लोगोंतक पहुंचाने के लिए हरिभाऊने विमुक्त-घुमंतू लोगोंका अलग आंदोलन शुरु किया, और उसे व्यापक किया, यह उनके कार्यपद्धती की और सोशल रिलेशन नेटवर्क की खासियत है।

महाराष्ट्र में २०११ के शीतकालीन अधिवेशन में आरोप-प्रत्यारोप किये जा रहे थे। उस समय विपक्षके कुछ विधायकोंपर अनुशासन भंग की दंडात्मक कारवाई करके उन्हें निलंबीत किया था। इस समय मा. बाळकृष्ण रेणके परिवेदन पर कृती न करके वह बात प्रलंबित रखने के विरोध में जाधव कृती समिती का प्रतिवेदन को जला दिया गया। विमुक्त-घुमंतू समाजके न्याय्य अधिकार

के बारे में सरकार सकारात्मक कदम जल्दी जल्दी उठाए यही उस समाजकी आजादी मिलनेके समयसे मांग रही है। वो इतने दीर्घ समयतक प्रलंबित और दुर्लक्षित क्यूँ है? विमुक्त-घुमंतू के आद्यप्रवर्तक महानायक वसंतराव नाईकजीने पहली बार महाराष्ट्रके इस समाजके लिए कल्याणकारी कदम उठाये और देशमें पहली बार इस समाजकें लिए कुछ किया गया। उन्होंने इस समाजको नवसंजीवनी दी। उनका आत्मसन्मान जागृत किया। वसंतराव नाईकजीने उन्हें याद दिलाया की, वे लुटारु, चोर नहीं है, वे शूर है, लडनेवाले है, राज चलानेवाले हैं। वसंतराव नाईकजीने महाराष्ट्र में अनेक लोककल्याणकारी योजनापर अंमल किया। ग्रामीण रोजगार हमी योजना, पंचायत राज ग्रामविकास, भूसिंचन और सहकार, खेती करने का आधुनिक तकनीक जलव्यवस्थापन, मराठी भाषाको राज्यभाषा का स्थान दिलाना, कृषी विद्यापीठका गठन, काफिलोंको महसूली दर्जा देना, भूमीहीनोंको जमीन बाँटना, शैक्षणिक विश्वविद्यालय का गठन ऐसी अनेक उपयुक्त और महत्वपूर्ण योजनाओंपर उन्होंने अंमल किया और महाराष्ट्र को सच्चे अर्थ में कुछ रुप दिया। केंद्रीय कृषी मंत्री श्री. शरद पवारकी राय में सिर्फ वसंतराव नाईकजी की वजहसे महाराष्ट्र कुछ बन पाया, उसे कुछ रुप मिला। वसंतराव नाईकजी का नाम लोगोंका कल्याण करनेवाला और लोकल्याणकारी, शासन देनेवाला मुख्यमंत्री ऐसा लिया जाता है। उस समय आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री ब्रम्हानंद रेड्डी थे। उस समय चर्चा चल रही थी की हरितक्रांतीके जनक वसंतराव नाईक को आंध्रपदेश का मुख्यमंत्री बनाओ और ब्रम्हानंद रेड्डी को महाराष्ट्र भेजो। इससे वसंतराव नाईक का बडप्पन प्रतीत होता है। विमुक्त-घुमंतू समाजके जो कोई आज तक जिस पदपर रहे है, उन्होंने अपनी एक खास छबी निर्माण की है। यह बंजारा समाज का स्वभाव और खास कार्यशैली है। वसंतराव नाईकजीके कार्यकी सराहना आजकल सर्वत्र हो रही है। आनेवाले कल में भी वह होती रहेगी क्यूँकी वसंतराव नाईकजीने महाराष्ट्र में विकास, प्रगती और सत्ता विकेंद्रीकरण की नींव डाली।

सन २००८ में संसद के शीतकालीन अधिवेशन में हरिभाऊ राठोडजीने देशके सब सांसदोको और मंत्रीयोंको वसंतराव नाईकजीके कार्य का और योजनाओं का परिचय दिया। उस

समय देवेंद्र यादवजी सभापती थे। हरिभाऊ बोले "वसंतराव नाईकजी की वजहसे महाराष्ट्र में क्रांती आयी।

वसंतराव नाईकजी के विचारोंका अनुकरण करते हुए हरिभाऊ विमुक्त-घुमंतू समाजके आंदोलनका विस्तार करने में जुट गये। हरिभाऊका स्वभाव ऐसा था की वे अपना कहना चतुराईसे, गंभीरतासे और दिलसे दुसरोंको कहते थे। वे प्रगल्भ और संवेदनाशील है।

हरिभाऊ विमुक्त-घुमंतूओंका आंदोलन महाराष्ट्र के बाहर लेके गए। विमुक्त-घुमंतूओंकी वेदना उनके ढावल, पाला, बेडा, पाल तक सीमीत थी। किन्तु हरिभाऊ के प्रयासों से वह वेदना पूरे देशमें फैली। हरिभाऊके प्रयासोंसे देशको विमुक्त-घुमंतूओंका अस्तित्व समझ में आया। जब वे संसद सदस्य थे तब उन्होंने विमुक्त-घुमंतूओंकी कार्यसूची को गतीमान किया। उनका प्रचार दौरा हो या संसद का भाषण हो, उसमें विमुक्त-घुमंतूओंकी वेदना दिखाई देती है। उनकी समस्यापर बोलते हुए हरिभाऊ एक बार बोले "विमुक्त घुमंतओंपर अंग्रेजोंने बहुत अन्याय किया है। आज भी उसे यह सहना पडता है। इन्हे विमुक्त-घुमंतू कहा जाता है किन्तु मैं हरिभाऊ कहता हूँ की ये स्वातंत्र्य सेनानी थे। उन्होंने आजादीके लिए जंग छेडी। कंट्याभिल्ल, बिरसा मुडा, संतसेवालाल महाराज इन्होंने अंग्रेजो के खिलाफ जंग छेडी, उनको बहुत तकलीफ दी। जब वे जंगल में जाते थे तब अंग्रेजोंको भगाते थे, उनको रास्ते बंद करते थे। १८५७ के आजादीके संग्रामके समय अंग्रेजोंने ३० हजारी कोर्ट में ३० हजार लोगों को फाँसी दी। उनमें से ७०% लोग विमुक्त-घुमंतू समाजके थे।

हरिभाऊ समय समय पर विमुक्त-घुमंतूओके दर्दके, तकलीफ के तरफ ध्यान देते है। समाज में कार्य करते है। इससे यह दिखाई देता है की उनके मनमें विमुक्त-घुमंतू समाजके प्रति प्यार और अपनापन बचपन से ही है।

आजका युग आधुनिक तंत्रज्ञान का युग है, उस समय अपना समाज पिछडा नहीं रहना चाहिए, समाजका सबसे निचला वर्ग भी वंचित न हो इसलिए समाज संगठीत होना चाहिए। यह समयकी मांग है। हर एक सामाजिक संघटन गुट अपने समाज के लिए आगे आ रहे है। समाज पुकार रहा है की अच्छे, नये कार्यकर्ता नयी पीढीसे आना चाहिए। समाज का संघटन मजबूत करने के लिए अनेक संघटन, संस्थाएं, "बंजारा पुकार", बंजारा टाईम्स जैसे साप्ताहिक, पाक्षिक समाचार पत्र बहुत ही मूल्यवान योगदान दे रहें है, यह बहुत ही खुशी की बात है।

राष्ट्रीय स्तरपर कई सालोंसे "ऑल इंडिया बंजारा सेवासंघ" यह संघटना कार्यरत है। यह संघटना हरिभाऊने स्थापीत किये हुए बंजारा क्रांतीदल के पहले से ही कार्यरत थी। ऑल इंडिया बंजारा सेवा संघ का पहला अधिवेशन दि.३०.११.१९५३ को दिग्रज (यवतमाळ) यहां संपन्न हुआ। उसका शुभारंभ तत्कालीन रेलमंत्री मा. लालबहादुर शास्त्रीजीके करकमलोंद्वारा हुआ था।

उस समय महानायक वसंतराव नाईक, प्रतापसिंह आडे, गजाधर राठोड ऐसे अनेक मान्यवर उपस्थित थे। देशके पूरे बंजारा समाजको अनुसूचित जनजातीयोंमें समाविष्ट किया जाए यह मांग इस समय की गयी। इसके अधिवेशन ऐसे संपन्न हुए परभणी-१९५४, गुलबर्गा-१९६०, नेक्कोंज-१९६५, पेनकोंडा-१९६८, चाळीसगांव (महाराष्ट्र) पुसद - १९८१, औरंगाबाद-१९८४, विजापूर-१९८८, दिग्रज-२००४। दिग्रजका अधिवेशन यु.पी.ए. अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी, ना. सुशिलकुमार शिंदे इनकी उपस्थितीमें संपन्न हुआ। इन सब दस अधिवेशनोंकी आलोचना की जाए तो बंजारा समाजकी प्रमुख और एकमेव माँग अभीतक पूरी नही हुई। किन्तु उसका समाज प्रवाह में मिल जाना और संघटन इसमें सकारात्मक बदल हुए। विमुक्त-घुमंतू समाजके अनेक कर्तृत्ववान लोग सेवा संघसे दूर क्यूँ रहते है? यह सवाल खडा होता है। सेवासंघको आक्रमक होना चाहिए। सेवासंघका शीर्ष नेतृत्व ऐसे लोगोंके हाथमें रहना चाहिए जिन्हें दूरदृष्टी हो। संघमें राठोड-पवार-चव्हाण-जाधव इनमेंसे किसी एक खास वर्गका वर्चस्व और आंतरिक मतभेद पैदा नहीं होना चाहिए। "एकला चलो" ऐसा निश्चय करके एक देशव्यापी आंदोलन खडा करना चाहिए। संघटन शक्तीके सामने सरकारके निर्णय में बदलाव आ सकता है। ऐसा कुछ निस्वार्थी कार्यकर्ताओंका कहना है।

सिर्फ बंजारा समाज में ही नहीं, अन्य समाजों में भी अनेक संघटनाएं बन रही हैं। संघटना का यश उसके विचारोंपर, प्रभावशाली दूरदृष्टी पर, मजबूत संघटनपर और व्यापक जनसंपर्कपर निर्भर रहता है। विमुक्त-घुमंतू समाज तितर बितर होनेके कारण समाजके संघटन में बाधाएं पैदा हो रही है। इस सामाजिक आंदोलन में हिरा सदा पवार, एल.आर. नाईक, बंजारा धर्मगुरु रामराव

महाराज (पोहरागड), रणजीत नाईक, बंजारा सेनानी हिरासिंग इनका बडा योगदान है। यह योगदान भूला नहीं जा सकता। उस समय रणजीत नाईक और हरिभाऊ राठोड की वैचारिक जुगलबंदी होती थी और उसकी बडी चर्चा होती थी।

समय बदलता गया। नेतृत्व बदलता गया आंदोलनमें भी बदलाव होते गये - कुछ अच्छे, कुछ बुरे, किन्तु हरिभाऊकी वनमॅन आर्मी स्टाईल नहीं बदली। इसकी वजहसे वे बंजारा समाजके साथ अन्य विमुक्त-घुमंतूओंको राष्ट्रीय स्तरपर एक साथ कर सकें। हरिभाऊ बचपन में सावरखेडा बांध की वजहसे विस्थापित हुए थे किन्तु आगे चलकर वे सागर जैसे बने। यही हरिभाऊ के "सोशल रिलेशन नेटवर्क" का यश है।

प्राचार्य मधुकर पवार (अकोला, महाराष्ट्र) सन १९९०-९१ से लेकर हरिभाऊ के साथ निस्वार्थ तरीकेसे कार्य कर रहे है। मधुकर पवार ने युवावस्था में ही ठान ली थी, बंजारा समाज में सुधार हो जाए। उनके कार्यशैली के कारण वे सेवा संघके पहले राष्ट्रीय सचिव बन गये। उन्होंने ग्यारहवा अधिवेशन जून, २०१२ मे बार्शी टाकळी (अकोला) में आयोजित किया। यह अधिवेशन भारत सरकारके सामाजिक न्याय और सबलीकरण मंत्री मुकूल वासनिक, डॉ. एम. शंकर नायक, महाराष्ट्रके सामाजिक मंत्री ॲड. शिवाजीराव मोघे, काँग्रेस प्रदशाध्यक्ष माणिकराव ठाकरे, राष्ट्रीय नेता हरिभाऊ राठोड, अमरसिंग तिलावत, बाबूलाल बंजारा और अन्य अनेक नामचीन हस्तियोंके उपस्थितीमें संपन्न हुआ।

फोटो

रेणके आयोगकी सिफारिसें प्रलंबित होने की वजहसे बंजारा समाज का असंतोष, नाराजगी इस अधिवेशन में स्पष्ट रुपसे दिखाई दे रही थी। ॲड. राजू नाईक ने गोरमाटी भाषामें अपने

विचार व्यक्त किये, उससे माहोल गर्म हो गया। केंद्र और राज्य सरकारके दोनों मंत्री विदर्भसे थे इसलिए उनकी बहुत अपेक्षाएं थी। मंचसे बंजारा समाजकी माँगे एकके बाद एक की जा रही थी।

१. बंजारा और विमुक्त-घुमंतू समाजके लिए महाराष्ट्र जैसा आरक्षण केंद्र में भी किया जाए। उनके लिए अलग घटनात्मक संरक्षण तथा अलग बजट का प्रावधान होना चाहिए।

२. राष्ट्रीय सलाहगार परिषद की अध्यक्षा सोनिया गांधीजीने दि.२०.०४.२०१२ को परिषदकी बैठक आयोजित की थी। उस बैठक में पारित प्रस्तावके अनुसार विमुक्त-घुमंतू और बंजारा समाजके लिए केंद्र सरकारद्वारा योजनाओंका अंमल तुरंत होना चाहिए।

३. कर्नाटक राज्यमें जैसा "काफिला विकास निगम" (तांडा डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन) गठीत किया जाए और उसके लिए बजटमें २००० करोड रुपयेका प्रावधान किया जाए।

४. विमुक्त-घुमंतू वर्ग के लिए केंद्र स्तरपर विकास निगम गठन किया जाये।

५. बार्शी टाकळी (अकोला) में वसंतराव नाईक बंजारा संशोधन और प्रशिक्षण प्रबोधनी गठीत की जाए और केंद्र और राज्य सरकार उसके लिए आर्थिक प्रावधान करें।

६. महाराष्ट्र विधान परिषदने पारित किये हुए प्रस्ताव के अनुसार परभणी कृषी विश्वविद्यालय को वसंतराव नाईक का नाम दिया जाए।

७. नॉन क्रिमिलेअर के निकष बंजारा और विमुक्त-घुमंतू समाज को लागू न किये जाए।

८. बंजारा विमुक्त-घुमंतू वर्ग के सब लडका-लडकीयों के लिए पूरे देशमें केंद्रीय आश्रमशाला शुरु करे।

९. अनुसूचित जाती और अनुसूचित जनजातीयों को जिस प्रकार छात्रवृत्ती दी जाती है, उसी प्रकार बंजारा और विमुक्त-घुमंतू प्रवर्गके छात्रोंकी छात्रवृत्ती में बढोत्तरी की जाए।

ये सब महत्वपूर्ण मांगे इस अधिवेशन में सादर की गयी। इस समय बंजारा पिठासनपर बडी हस्तियाँ बैठी थी। इस पिठासन में चौथी कतार में बैठने का सुवर्ण अवसर मुझे (एकनाथ पवार) पहली बार मिला। हरिभाऊ राठोडजी के हिंदी-गोरमाटी-मराठी इन संयुक्त भाषामें व्यक्त किये गये विचारोंमेंसे एक-एक वाक्य महनीय, संस्मरणीय था। वे बोले "मेरे सभी प्यारे भाई-बहनोंको मेरा जय सेवालाल"। तालियोंकी जबरदस्त गूँज उठी। उपस्थितोंमें ललकार हुई "हरिभाऊ राठोड जिंदाबाद! जिंदाबाद! तुम आगे बढो!! हरिभाऊकी लोकप्रियता देखकर तत्कालीन केंद्रीय सामाजिक न्याय मंत्री मुकूल वासनिक, ना. शिवाजीराव मोघे और अन्य राज्यके नेता अचंबित हो गये। उस समय हरिभाऊ मंत्री नहीं थे, सांसद सदस्य नहीं थे, उनके पास दलका बडा पद नहीं था। फिर भी वे लोगों के जो कष्ट उठा रहे थे और रेणके आयोग के लिए जो प्रयास कर रहे थे उनका श्रेय उनके पास था इसलिए उपस्थितों में से हरिभाऊ जिंदाबाद ये ललकार आई। हरिभाऊ ने अपने विचार प्रगट किये वे बोले "जम्मू काश्मीरसे कन्याकुमारी तक और कच्छ से कटक तक फैले हुए न्याय वंचित बंजारा समाज को न्याय मिलना ही चाहिए"। रेणके आयोग की सिफारिसोंपर अंमल करने के लिए सरकार और ज्यादा वक्त लगाएगी तो समाज अलग रुख अपनाएगा।

जो हमारी मांगे पूरी करेगा उसीको हमारा समर्थन मिलेगा। आज विमुक्त-घुमंतूओंका आवाज बंद की जा रही है। मा. ना. मुकूल वासनिक साहब, मोघे साहब हम आपसे कहना चाहते है की और कितने दिन हमें समाजके मुख्य प्रवाहके बाहर रहना पडेगा? कितने दिन अन्याय सहना पडेगा? यदि हमारी माँगे मंजूर नहीं हुई तो बंजारा समाज आर या पार ऐसी लडाईके लिए तैयार हुआ है। हर काफिलेमें असंतोष, क्रोध की ज्वाला भडक रही है। अभी विमुक्त-घुमंतूओंकी समस्याको गंभीरतासे लेना ही पडेगा। जिस तरह महाराष्ट्र में वसंतराव नाईक ने विमुक्त-घुमंतूओंका आरक्षणपर अंमल किया है, उसी तरह अन्य राज्यों में भी आरक्षणपर अंमल होना चाहिए। काफिलेके विकास के लिए राष्ट्रीय स्तरपर विकास बोर्ड गठन करना आज जरुरी हो गया है। इसके साथ हमें कुछ और बातोंपर गौर करना जरुनी है जैसे काफिलेके सब लोग शिक्षित

कैसे होंगे? काफिला, पाल, बिऱ्हाड (परिवार) इसमें से हो रहा असहायता, अंधविश्वास, शोषण कब खतम होगा? अन्य लोगों का हमारी तरफ दृष्टीकोन सकारात्मक कैसे होगा? राष्ट्रीय स्तरपर अपना कार्यसूची प्रभावशाली कैसे होगा। वसंतराव नाईक, बाबूसिंग नाईक, हिरासिंग पवार, रामसिंग भानावत, चंद्राम गुरुजी इन सब लोगांने अपनी पूरी जिंदगी समाज को संगठित करने के लिए और उसकी प्रगती के लिए खर्च किया है। उन्होंने दिखाए हुए रास्तेपर चलनेवाली नयी पीढी कैसे तैयार की जा सकती है? यह देखना है। वसंतराव नाईक साहब की दूरदृष्टी का तथा रेणके आयोगका अंमल करने के लिए हम सब एक होंगे, एक रहेंगे, एक साथ आंदोलन करेंगे। आनेवाले समय में हमें यश मिलनेवाला ही है। मुझे आशा है, यू.पी.ए. अध्यक्षा श्रीमती गांधीने नैकके सामने जो प्रस्ताव रखा है वह जल्दी मंजूर होगा।

हरिभाऊके इस भाषणसे सब लोग प्रभावित हो गये। बादमें अनेक नामचीन हस्तियोंने अपने विचार व्यक्त किये। तत्कालीन केंद्रीय सामाजिक न्यायमंत्री मुकूल वासनिक बोले "बंजारा और अन्य विमुक्त-घुमंतू के संदर्भ में और रेणके कमिशन की सिफारिसोंके बारे में सरकार संवेदशील है। आनेवाले समय में समाजको जरुर न्याय मिलेगा। बंजारा समाज में जो ज्वाला भडक उठ रही है। इस ज्वाला की हमें फिक्र है। बंजारा संस्कृती दिल को छूनेवाली लाजवाब संस्कृती है। हिन्दुस्थान की एक महत्वपूर्ण संस्कृती है। इसको आप बढावा दिजीयेगा। हमारे मित्र हरिभाऊ राठोड, डॉ. एम. शंकर नायक, सभी नेतागण और उपस्थित अलग-अलग राज्योंसे आये मेरे गोरमाटी, बंजारा भाई-बहनों के मनमें जो असंतोष है, वो स्वाभाविक है। बंजारा समाज की सभी मांगे विचाराधीन है। जरुर प्रयास करुंगा आपको हक दिलाने के लिए....। मधुकर पवारसाहब के परिश्रमहेतु उनका अभिनंदन। बंजारा समाज प्रगती की राहपर चले, ये मेरी शुभकामनाएं।"

अपने इस मीठे भाषण के द्वारा मुकुलजी वासनिकने उस समय लोगोंके दिल जीत लिए किन्तु मुझे नहीं लगता की बंजारा नेता किसी नेताके आश्वासन पर भरोसा करेंगे। क्यूंकी अभी

बंजारा समाजने पुरानी " बी पॉलिसी" छोड दी है और उसमें बहुत बदलाव करके नयी बी पॉलिसी अपनायी है। इस नये "बी पॉलिसी" की खासियत है आजादी और यह आगे भी रहेगी।

डॉ. एम शंकर नायक, माणिकराव ठाकरे, हरिभाऊ राठोड, अमरसिंग तिलावत, ॲड राजू नाईक, ना. शिवाजीराव मोघे और मुकूल वासनिक इन सबकी बातोंकी मैं (एकनाथ पवार) समीक्षा करता गया। वहाँ बंजारा पीठपर मेरे साथ साप्ताहिक "बंजारा पुकार" के गोविंदराव चव्हाण, साप्ताहिक "साथी बंजारा" के संपादक सरीचंद्र जाधव इनकी सरकारकी भूमिका के प्रति प्रतिक्रियाएं जान ली। इस दरमियान मुझे ऐसी चर्चा सुनने को मिली की आनेवाले समय में प्राचार्य मधुकर पवार का नेतृत्व सामने आकर समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

आधुनिक विमुक्त-घुमंतू आंदोलन के प्रवर्तक महानायक वसंतरावजी ने इस समाजके उत्थान, प्रगतीके लिए और उन्हें समाजके प्रवाह में लाने के लिए अपनाया हुआ मार्ग अविस्मरणीय है। उससे नई पीढीको प्रेरणा मिलती है। उसी तरह यह आंदोलन राष्ट्रीय स्तरपर व्यापक करने के लिए हरिभाऊने किये हुए प्रयत्न और उठाये कष्ट सराहनीय है। महाराष्ट्र में विमुक्त-घुमंतू आंदोलन के लिए कार्य करने वाले अनेक राजनैतिक नेता, सामाजिक नेता, साहित्यिक पत्रकार संगठन, साप्ताहिक, मासिक पत्रिकाएं है जैसे बंजारा केसरी मखराम पवार, महोदव जानकर, लक्ष्मण माने, लक्ष्मण गायकवाड, प्रा. हरी नरके, प्रा. मधुकर पवार, संजय राठोड, भारतकी पहली बंजारन महापौर शेवंताबाई पवार, प्रकाश शेडंगे, मच्छिंद्र भोसले, हरिश्चंद्र पवार, ॲड. पल्लवी रेणके, प्रा. मोतीराज राठोड, महापौर अलकाताई राठोड, रामजी आडे इत्यादि। उन्होंने अत्यंत नीचे दबे हुए स्तरके व्यक्तीको न्याय दिलाने के लिए बहुत परिश्रम लिए, कष्ट उठाए। ये और इसके सिवा बहुत कार्यकर्ता किसी भी फलकी अपेक्षा किये बिना अपने अपने क्षेत्र में जी लगाके कार्य कर रहे हैं। विमुक्त-घुमंतूओंमें क्रांतीकारी बदलाव करवाना, आंदोलन को कार्यक्षम नया नेतृत्व प्रदान करना इसके लिए "वसंत सैनिक" मिलना यह बहुत ही हर्षजनक बात है।

विमुक्त-घुमंतू समाजकी अन्य जातीयाँ बंजारा जातीको बडे भाई जैसा समझते है। बंजारा समाजने विमुक्त-घुमंतू जातीके अन्य छोटे बिखरे हुए जातीयोंकी तरफ ध्यान देना जरुरी है। उनपर हो रहे अन्याय का मुकाबला करने के लिए अपना नेतृत्व बना रखने की बंजारा समाजको जरुरत है। बंजारा समाजने अन्य जातीयोंको साथ लेना आवश्यक है। अन्य जातीयोंको भी चाहिए की वे अपने बडे भाई, अर्थात बंजारा समाज को अपना समर्थन देते हुए एक साथ रहें और आंदोलन करे। यह समय की आवश्यकता है, अकेले लडनेसे आंदोलन का त्वरीत विनाश होगा। शायद एकाध आदमी या गुटको अपना स्वार्थ मिलेगा किन्तु आंदोलन नामशेष होगा।

महाराष्ट्र के आधुनिक इतिहासमें अन्य आंदोलन की तरह विमुक्त-घुमंतूओंका आंदोलन प्रभावशाली क्यूं नही होता? उसके लिए क्या करना चाहिए? यह सोचकर कार्य करने के लिए सब हितचिंतकोंको चाहिए की वे आपसके मतभेद भूलके आत्मपरिक्षण करें और एक हो जाए।

आंदोलन के बारे में महानायक श्री. वसंतरावजी कहते है "विमुक्त-घुमंतू आंदोलन के लिए हर एकको समर्पण की भूमिका स्वीकार करनी पडेगी। हम सुधरे इसका अर्थ यह नहीं की आंदोलन समृद्ध हुआ। गाँव के बाहर रहनेवाले बंधुओंको समाजके प्रवाहमें लाकर, उनका स्वाभिमान जागृत करना चाहिए।

महाराष्ट्र विमुक्त-घुमंतू समाजने मारोतराव कन्नमवार, वसंतराव नाईक, सुधाकरराव नाईक इनके रुपमें एक लोकप्रिय नेतृत्व दिया। इन तीनों मुख्यमंत्रियोंका कार्य सराहनीय और आंदोलनको प्रेरणा देनेवाला है। हरिभाऊ इन तीनों मुख्यमंत्रीयों के विचारसे कभी दूर नही गये। हरिभाऊ एक सर्वसमावेशक दृष्टीकोन रखते हुए अपना कार्य कर रहे हैं। इसकी वजहसे महाराष्ट्र और अन्य राज्योंमें अनेक सकारात्मक बदलाव आये। पुरोगामी विचारोंका महाराष्ट्र महिलामें जागृती करने का बडा योगदान दे रहा है। इसकी वजहसे विमुक्त-घुमंतू समाज में धीरे धीरे महिलाओंका सहभाग बढ रहा है। इसका दृश्य परिणाम यह है की दि.०६.०३.१९९७ को सोलापूर महानगरपालिका में शेवंताबाई सोमसिंग पवार महापौर बनी। महिलाओंको प्रतिनिधित्व का अवसर मिलने पर श्रीमती निशाताई नाईक वाशिम जिल्हा परिषदकी अध्यक्षा बनी। दि.३१.१२.२०११ को ॲड. पल्लवी रेणके मुंबई विभागसे विमुक्त-घुमंतू आयोगकी सदस्या बनी। मार्च २०१२ को श्रीमती अलकाताई राठोड सोलापूर महानगर पालिका की महापौर बनी। यह सकारात्मक बदलाव आंदोलन का फलित है, किन्तु समय की जरुरत देखते हुए आंदोलनमें महिलाओंका सहयोग, और उनका प्रतिनिधत्व ना के बराबर है।

सन २०१२-१३ यह वर्ष महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण और हरितक्रांतीके जनक वसंतराव नाईक इनका जन्मशताब्दी वर्ष। महाराष्ट्र सरकारने यह वर्ष श्री. यशवंतराव चव्हाणका का जन्मशताब्दी वर्ष घोषित किया और उसके लिए २०० करोड रुपयोंका निधी घोषित किया। किन्तु महाराष्ट्रको सच्चे अर्थमें बनानेवाले, लंबे अरसे तक लोकप्रिय शासन देनेवाले महानायक श्री. वसंतराव नाईक का जन्मशताब्दी वर्ष अर्थसंकल्पीय अधिवेशन में घोषित नहीं किया। इस अन्याय का प्रतिकार करने के लिए हरिभाऊ राठोडजीने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री. पृथ्वीराज चव्हाणसे चर्चा की। उनके संगठनोंने सरकारके इस दुजेभावके खिलाफ आवाज उठाई। सरकार को आवेदन भेजे। यह साल वसंतराव नाईक का जन्मशताब्दी वर्ष घोषित किया जाए और शीतकालीन अधिवेशन में परभणी कृषी विद्यापीठ को वसंतराव नाईक का नाम दिया जाए इसलिए हरिभाऊने सरकारके साथ अनुवर्तन चालू रखा।

"मैंने (एकनाथ पवार) खुद जन्मशताब्दी वर्ष घोषित करने के बारेमें कृषी विद्यापीठके बारे में और बंजारा समाज के प्रतिनिधी समाज के लोकसंख्याके मुताबिक न होनेसे विधान परिषदमें बंजारा समाजका प्रतिनिधी नियुक्त करने के लिए अनुवर्तन करने के लिए हरिभाऊको बिनती की। समाचार पत्रके जरिये अनेक बार आवाज उठायी।

फोटो

जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में मैने उमरेड (नागपूर) में वसंतवर्ष २०१२ का आयोजन किया था। उस समय हरिभाऊ राठोड समारोहके अध्यक्ष थे। भाजपा के स्थानिक विधायक श्री. सुधीर पारवेने वसंतरावजी के सत्ता विकेंद्रीकरण के महान कार्य के बारे में लोगोंको बताया। उन्होंने इल्जाम लगाया की सरकार वसंतरावजीके कार्यको नजरअंदाज कर रही हैं। इस आयोजन

के लिए नामचीन हस्तियोंने मेरी बहुत प्रशंसा की। इस वसंतपर्व में अनेक जाती, धर्म, राजनैतीक दल, संगठनके प्रतिनिधी उपस्थित थे।

समारोह समाप्त होने के बाद हरिभाऊ कुछ काफिलोके लोगोंके साथ बातचीत कर रहे थे। पारंपारिक वेषभूषा में सजधज के आयी हुई बंजारन हरिभाऊको अपना समझकर अपनी वेदनाएं व्यथाएं उनको बता रही थी। हरिभाऊ बडे प्यारसे और आत्मीयता से उनको सुन रहे थे और उनकी तसल्ली कर रहे थे। बंजारन को बहुत आनंद हो रहा था की अपनी व्यथा सुनकर उसकी तसल्ली करनेवाला कोई नेता है। हरिभाऊने स्थानिक प्रतिनिधी और विधायक श्री. सुधीर पारवे को आवाहन किया की वे काफिलेकी समस्याएं सुलझाए। विमुक्त-घुमंतूओंका समारोह, कार्यक्रम कहीं भी हो, हरिभाऊ वहाँ जाते है, क्यूंकी उनका नाता नीचेसे नीचे स्तरके कार्यकर्ता के साथ सदा बना रहता है। आझाद मैदान में जब क्रांतीदल का मोर्चा आयोजित किया था उस समय हरिभाऊने काफिले में जाके खुद पत्रक लगाने का कार्य किया है। आंदोलनके लिये किया हुआ कोई भी कार्य श्रेष्ठ है।

हरपल जिंदगी में बदलाव आता है, नई नई घटनाएं होती हैं। इस समय राज्यमें और केंद्रमें राजनैतिक और सामाजिक बदलाव के आसार दिखने लगे। पहले "ब्रेकींग न्यूज" का इंतजार करना पडता था। किन्तु अभी ऐसा प्रतीत होता है की मिडीया को ब्रेकींग न्यूज का इंतजार नहीं करना पडता है। उल्टा "ब्रेकींग न्यूज" में कौनसी बात प्रक्षेपित करनी है यह सवाल खडा होता है। "इंडिया अगेन्स्ट करप्शन" के अरविंद केजरीवाल हर दिन इल्जामपे इल्जाम लगा रहे थे, उसकी वजहसे घोटालेबाज डर गये थे। महाराष्ट्र में सिंचन अनुशेष और श्वेतपत्रिका को लेकर बवाल खडा हुआ। ऐसी स्थिती में हर एक नेता, मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी अपना स्थान मजबूत करने में, संभालने में लगा हुआ था, तो उन्हें विमुक्त-घुमंतूओंकी समस्याएं याद कैसे आयेगी? विमुक्त-घुमंतूओंका केंद्र और राज्यमें प्रतिनिधित्व अत्यल्प होने की वजहसे उनकी समस्याएं उचित रुपसे राज्य विधीमंडळ या केंद्र में लोकसभा-राज्यसभा में प्रस्तुत नहीं हुए। इस स्थितीमें रेणके

आयोग या अन्य माँगो की तरफ कौन ध्यान दे सकते थे? आजतक के सब आंदोलन का इतिहास यही है। जो गुट सत्ताधारीयोंपर दबाव डाल सकता है, नियमित तरहसे अनुवर्तन कर सकता है, वही अपनी माँगे पूर कर ले सकता है। यह बात ध्यान में रखते हुए हरिभाऊ रेणके आयोग की सिफारिसें और अन्य मामले के बारे में सदा अनुवर्तन करते आये हैं।

इस दरमियान तत्कालीन कानूनमंत्री सलमान खुर्शिदने अल्पसंख्य समाजको ओबीसी के हिस्से का आरक्षण देनेका प्रस्ताव नये सिरे से लिया। उसी समय हरिभाऊ ने केंद्र सरकारको माँग की अल्पसंख्योंको जैसे विमुक्त-घुमंतूओंको भी ओबीसी से ७% आरक्षण दिया जाए। यह वार्ता पीटीआय के जरीये पूरे देशमे फैल गयी थी।

अपनी माँगे कितनी भी संवेदनाशील हो, वह पूरी होने तक सदा अनुवर्तन करना जरुरी है। इसलिए हरिभाऊने उत्तर और दक्षिण भारत के नेताओंको साथ लेकर विमुक्त-घुमंतूओंकी माँगे केंद्रमें रखने के लिए बहुत प्रयास किये। हरिभाऊ की इच्छा थी की चाहे कौनसे भी मार्गसे हो लेकिन विमुक्त-घुमंतूओंकी माँगे पूरी होनी चाहिए। इस हेतुके लिए हरिभाऊ अपना कार्य भारतभर करते है।

शायद सत्ताधारी दलको पता लगा हुआ होगा की रेणके आयोग की सिफारिसें लेकर विमुक्त-घुमंतूओंके मन में असंतोष, क्रोध पैदा हो रहा है, इस बात को ध्यानमें रखकर तथा पी. बलराम नाईक का आंध्रपदेशमें काम देखकर उन्हें मंत्री नियुक्त किया। हरिभाऊ राठोड भी विमुक्त-घुमंतू समाजका, बंजारोंकी समस्याका सदा अनुवर्तन कर रहे है यह ध्यानमें रखते हुए आजादी के बाद पहली बार पी. बलराम नाईक के रुपमें बंजारा समाजको महत्वपूर्ण विभाग "सामाजिक न्याय और सबलीकरण" यह विभाग मिला। केंद्रीय सामाजिक मंत्री (राज्यमंत्री) इस पदकी शपथ लेते हुए उन्हें जितना आनंद हुआ, उससे कहीं ज्यादा आनंद विमुक्त-घुमंतू समाजको हुआ।

इस विभागके कॅबिनेट मंत्री श्रीमती शैलजा कुमारी हैं और राज्यमंत्री पी. बलराम नाईक बने है, इसलिए उनसे अपेक्षाएं बढी हैं।

सोनिया गांधीने हरिभाऊके मिशन को और प्रयास को समझ लिया और उन्हें एक संदेश भेजा। उसमें वे कहती है "मैं समझती हूँ की रेणके कमीशन की रिपोर्ट भारत सरकार के पास सक्रीय रुपसे विचाराधीन है। और मुझे आशा है की, राठोडजी के प्रयासों का सकारात्मक परिणाम अवश्य सामने आयेगा। और इन विमुक्त-घुमंतू जनजातीयों को वह राहत अवश्य मिलेगी, जिसके वह अधिकारी है।"

मुझे हरिभाऊ के कार्यके बारे में लिखने का मौका मिलेगा और वे मेरे गुरु बनेंगे ऐसा मैंने सपने मे भी नहीं सोचा था। किन्तु मेरी विमुक्त-घुमंतूओंके प्रती आस्था मुझे उनतक खींच लायी, यह भी सच है।

भारतीय, युरोपियन, रोमो, जिप्सी सब संस्कृतीयोंके अनुसार अपने गुरुको दक्षिणा देना शिष्यका कर्तव्य होता है। एकलव्यने द्रोणाचार्य को अपना अंगूठा दिया। सॉक्रेटिस ने गुरुदक्षिणा के रुपमें अपने गुरुको वचन दिया की वह मानवी जीवन आनंदित और सुखी करने के तत्वज्ञान का पूरे जगमें प्रसार करेगा। मुझे भी लग रहा है की मैं अपने इस गुरुको दक्षिणा दूँ, तो यह किताब मेरी तरफसे उनको दक्षिणा है।

उस दिन मुझे कूडे के ढेर में मिले हुए हरिभाऊ आज सामान्य जनोंके दिल में विराजमान हुए है।

हरिभाऊ वागदा जैसे छोटे काफिले से आये और आज केंद्रस्तरपर काम कर रहे है, इसका मुझे अभिमान है। उनका कार्य अगली पीढीके लिए मार्गदर्शक होगा। उनका कार्य इतिहास में सुवर्णाक्षरो में लिखा जाएगा। उन्होंने शून्यसे विश्वका निर्माण किया। वे समाजके लिए चंदन जैसे घिसे जा रहें है। तितर बितर हुए समाज बांधवोंको एकसाथ लाने के लिए दिनरात कष्ट कर रहें है।

उनका संकल्प है "आखरी सांसतक समाज के लिए चंदन जैसा घिस जाऊंगा"। यह संकल्प सब में नवचैतन्य पैदा करता है।

विमुक्त-घुमंतू समाजकी पहचान राष्ट्रीय स्तरपर करनेवाले हरिभाऊ खुद चंदन बन गये। उनके कर्तृत्व का सुगंध भविष्यमें रहेगा। समाज कार्यसे आगे आये हुए हरिभाऊ विमुक्त-घुमंतू लोगोंके दिलमें सदा के लिए विराजमान रहेंगे।

उनके कार्यको और उनको सन्मानपूर्वक प्रणाम।

"तूफानमें सहायता करने आये,

अंधेरे में प्रकाश बन गये

ऐसे हमारे हरिभाऊ आंदोलन में आये

सेवालाल महाराज, आप धन्य हो,

हमें ऐसा हीरा, ऐसा दीपस्तंभ आपने दिलाये"

परिशिष्ट

प्रधानमंत्री

नई दिल्ली
१५.०९.२००८

प्रिय श्री. राठोड

मुझे आपका दि.३१.०८.२००८ का पत्र मिला, जिसमें आपने भारतकी विमुक्त-घुमंतू जनजातीयोंको संवैधानिक संरक्षण और सुविधाएं देनेकी बिनती की है।

मैंने इस मामले का परीक्षण करवाया। मैंने सामाजिक न्याय और सबलीकरण मंत्रालयको सूचित किया है की वे राष्ट्रीय विमुक्त-घुमंतू और अर्ध घुमंतू आयोग की सिफारिसोंका जल्द से जल्द अभ्यास करें। मंत्रालयने अभ्यास पूरा किया है। मंत्रीमंडल के सामने यह मामला जल्दी आयेगा ऐसी मैं आशा करता हूँ।

धन्यवाद

आपका .....

(मनमोहन सिंग)

श्री हरिभाऊ राठोड
अश्विनी टॉवर्स, दर्गाह रोड,
यवतमाळ (महाराष्ट्र) - ४४० ००१

प्रति:
श्रीमती मार्गारेट
महासचिव एआयसीसी,
१२, सफदर जंग रोड, नई दिल्ली - ११० ०११

*महाराष्ट्र राज्य महानायक वसंतराव नाईकजीकी दूरदृष्टी और कर्तृत्वसे प्रगत हुआ राज्य है। विमुक्त-घुमंतू आंदोलनके एक प्रतिभावंत साहित्यिक श्री. एकनाथ पवार का जन्म इसी महाराष्ट्र राज्यमें सेवादास नगर (ता. मनोरा जिल्हा वाशिम) में एक सुसंस्कृत मध्यमवर्गीय किसानके परिवार में हुआ। उन्होंने काफिले की व्यथा, वेदना खुद पहचानी है, उसका अनुभव किया है। इसलिए उनका कलम काफिलेके वेदनाकी, न्यायवंचित गुटोंको व्यक्त करने लगी, शब्दबद्ध करने लगी। श्री. एकनाथ पवार के साहित्य का और सामाजिक आंदोलनका विषय विमुक्त-घुमंतू समाज तथा अन्य पिछडे हुए वर्गोंकी व्यथा वेदना है। इसलिए इस आंदोलन में वे "वेदनाकार" इस नामसे प्रसिद्ध हुए।

*उन्हें युवक और क्रीडा मंत्रालय पुरस्कृत एनवायएस का "युवा पुरस्कार" प्राप्त हुआ है। उनका गीत "स्वप्न वेडी तू सखी ग माझी" सुप्रसिद्ध बाबा जागीरदार बंबई इन्होंने संगीतबद्ध किया है। वह बहुत मशहूर हो गया है। वे पिछले नौ-दस बरसोंसे अलग अलग लोकप्रिय समाचार पत्रोंमें निष्पक्ष लेखन कर रहें हैं। उनकी विमुक्त-घुमंतू समाज की वेदनाओंका प्रतिनिधित्व करनेवाली किताब २००९ में प्रकाशित हुई। उनकी अनेक कविताएं नागपूर नभोवाणी केंद्रसे अनेक बार प्रसारित हुई हैं। बहुत संदर्भग्रंथ में और प्रातिनिधिक काव्यसंग्रहों में उनकी दिल छूनेवाली अनेक कविताएं प्रकाशित हुई हैं।

*वे सामाजिक कार्य में दिलसे शामिल होते हैं। उन्होंने सामाजिक संघटन और सामाजिक परिवर्तनमें बहुमूल्य योगदान किया हैं। उन्होंने विमुक्त-घुमंतूओंकी अनेक समस्याओंको न्याय दिलवा दिया है। "वसंत विचारधारा" अर्थात "नाईक थॉट्स" इसके वे संकल्पक और प्रसारक हैं। उन्होंने काफिला, पाडा, बस्ती, शहर इन सब जगह पर महानायक वसंतराव नाईक के आधुनिक विचार और दूरदृष्टी (व्हिजन) का प्रसार करने का सेवाभावी अभियान (मिशन) शुरु किया है। वे

पिछले अनेक बरसोंसे सहित्य विश्वमें ऐतिहासिक बंजारा संस्कृती लानेका तथा विमुक्त घुमंतूओंकी वेदना नये सिरेसे लानेका कार्य निस्वार्थ बुद्धीसे कर रहे हैं।

*"काफिला पूरे विश्वभर मालूम हो जाए, पहचाना जाए (ग्लोबल हो जाए), न्याय वंचितोंको न्याय मिले, इसलिए मैं लड रहा हूँ और जल रहा हूँ" ऐसे एकनाथ पवारजीके उद्‌गार आज प्रेरणा दे रहे हैं। वे सामाजिक विषयोंको दिल छूनेवाले तरीकेसे पेश करते हैं। समाजिक अंतर्वेदना प्रभावपूर्ण तरीकेसे जनमानसोंतक पहुँचाते है यह श्री. एकनाथ पवारके साहित्य और सामाजिक कार्यपद्धतीकी विशेषता है।

आर.के. प्रकाशन,
नागपूर